लव–जिहाद

एक ऐतिहासिक षड्यंत्र कथा

नोट :

निश्चित रूप से तथ्यों, चित्रों और ऐतिहासिक घटनाओं का सावधानी के साथ पता लगाया गया है, और कोई भी गलती, न तो इरादतन और न ही जान-बूझकर होगी। पारिवारिक किस्से-कहानियों, डायरियों, पुस्तकों, अखबारों, और अन्य प्रकाशित सामग्री के आधार पर यह पुस्तक भले ही सत्य घटनाओं पर आधारित आत्मकथात्मक इतिहास कथा हो, फिर भी यह एक उपन्यास ही है। इसलिए इसमें चरित्र वास्तविक हों या काल्पनिक और जो ऐसे नाम प्रयोग किए गए हैं, वे सब लेखक की व्याख्या के साथ-साथ कल्पना की भी उपज समझी जाएँ।

किसी भी धर्म, संप्रदाय या व्यक्ति विशेष को निशाना बनाने का हमारा मकसद नहीं है, वरन् एक कटु ऐतिहासिक सचाई से दुनिया को रू-ब-रू कराना हमारा उद्देश्य है। इसीलिए इसमें प्रमाणों के लिए संदर्भ दिए गए हैं, लेकिन अनेक संदर्भ तो पृष्ठ विस्तार के भय से छोड़ भी दिए गए हैं।

लव–जिहाद

एक ऐतिहासिक षड्यंत्र कथा

(आत्मकथात्मक उपन्यास)

मूल लेखिका

फरहाना ताज

हिन्दी रूपांतरण

तेजपाल सिंह धामा

सागर प्रकाशन

शाहदरा, दिल्ली-110032

ISBN : **978-93-84066-02-4**
पुस्तक : लव-जिहाद : एक ऐतिहासिक षड्यंत्र कथा
लेखिका : फरहाना ताज

प्रथम संस्करण : **2015**
मूल्य : **150.00 रुपये (पेपरबैक)**
मूल्य : **350.00 रुपये (सजिल्द)**
प्रकाशक : **सागर प्रकाशन**
77सी/52/1, मुकेश नगर,
शाहदरा दिल्ली-110032
ई-मेल : sagarprakashan@yahoo.com
शब्द संयोजन : दीपक लेज़र प्रिंट्स, शाहदरा, दिल्ली-32
मुद्रक : विशाल कौशिक प्रिंटर्स, दिल्ली-110093

LOVE JIHAD : EK ETIHASIK SADYANTRA KATHA
BY FARHANA TAJ (NOVEL)

1

मेरे परिवार वाले कभी सरधना की बेगम समरू की रियासत में अच्छे पदों पर थे। मैं अपने परिवार के बारे में बताने से पहले बेगम समरू के बारे में कुछ बताना आवश्यक समझती हूँ। उत्तर प्रदेश जो कभी संयुक्त प्रांत के नाम से प्रसिद्ध था, उसमें मेरठ के नजदीक एक छोटा सा कस्बा है सरधना, जिसकी साँसों में बेनजीर खूबसूरती की मलिका बेगम समरू की रूह आज भी बसती है। बेगम समरू, यानी फरजाना, यानी जेबुन्निसा जो दिल्ली के चावड़ी बाजार के एक कोठे से निकल कर दौलत, ताक़त और शोहरत की बुलंदियों तक पहुँची और मुगलकालीन इतिहास का एक बेहद दिलचस्प पन्ना बन गईं। इस छोटे से कस्बे की 18 वीं और 19 वीं सदी की इमारतें, टूटी-फूटी सड़कें और आबोहवा अपने दामन में इतिहास का वही पन्ना समेटे हुए हैं।

फरजाना की माँ चावड़ी बाजार में तवायफ थी, जिसे बाद में मेरठ के करीब कोताना के असदख़ान ने अपनी रखैल बना लिया था। फरजाना का जन्म कोताना में ही 1753 में हुआ। इसके सात साल बाद ही असद की मौत हो गई और माँ और बेटी को दिल्ली लौटना पड़ा। दोनों कुछ दिन कश्मीरी गेट के निकट रहने के बाद जामा मस्जिद इलाके में बस गईं। उसी साल फरजाना को चावड़ी बाजार की एक तवायफ खानम जान के सुपुर्द कर उसकी माँ इस दुनिया से रुखसत हो गई।

खानम जान के कोठे पर ही 1767 में फरजाना की मुलाक़ात भाड़े की सेना चलाने वाले वाल्टर रेनहार्ट सोम्ब्रे से हुई। उम्र में फरजाना से तीस साल बड़ा रेनहार्ट इस कमसिन सुंदरता पर फिदा हो गया। दोनों के दिल मिले और फरजाना चाँदनी चौक की रौनक को पीछे छोड़ अपने आशिक

के साथ एक ऐसे लंबे सफ़र पर निकल पड़ी, जिसकी मंजिल का उसे कोई अंदाज़ा नहीं था। दोनों लखनऊ, रोहिलखंड, आगरा, भरतपुर और डीग होते हुए आख़िर में सरधना पहुँच गए।

जर्मनी का रेनहार्ट 1754 में फ्रेंच ईस्ट इंडिया कंपनी के साथ भारत आया था। उसकी फौज भारी रकम मिलने पर किसी के लिए भी काम करने को तैयार रहती थी। मुगल बादशाह शाह आलम के कहने पर उसने सहारनपुर के रोहिल्ला लड़ाके जाबिता खान को शिकस्त दी। इससे खुश होकर शाह आलम ने दोआब में एक बड़ी जागीर रेनहार्ट के नाम कर दी और फिर वह सरधना में ही बस गया। लेकिन इसके पाँच साल बाद ही रेनहार्ट दुनिया से कूच कर गया और 18 यूरोपीय अफसरों और 4000 सैनिकों की उसकी फौज फरजाना के हाथों में आ गई।

शौहर के इंतकाल के तीन साल बाद फरजाना ने ईसाइयत कबूल कर ली और जोहाना नोबिलिस सोम्ब्रे बन गई। बाद में सोम्ब्रे का सोम्बर हुआ और फिर फरजाना बन गई बेगम समरू। लड़ाई के मैदान से कूटनीति के अखाड़े तक बेगम समरू की तूती बोलती थी और हालात खिलाफ होने के बावजूद वह 1837 में अपनी मौत होने तक सरधना की जागीर पर काबिज रही। उसने शाह आलम की मदद कर उसका दिल जीत लिया और उसकी मुँहबोली बेटी बन गई। हुआ यह कि बघेल सिंह की अगुवाई में 30,000 सिखों ने 1783 में दिल्ली पर हमला बोल दिया और उस जगह तक पहुँच गए जिसे अब तीस हजारी के नाम से जाना जाता है। तब बेगम समरू ने ही शाह आलम और सिखों के बीच सुलह कराई और बघेल कीमती तोहफों का खज़ाना लेकर लौट गया।

चार साल बाद नजफ कुली खान की बगावत को नाकाम करने में भी बेगम समरू ने शाह आलम की मदद की। इसके बाद शाह आलम ने सरधना की जागीर पर रेनहार्ट की पहली बीवी के बेटे नवाब जफरयाब खान के दावे को खारिज़ कर दिया और बेगम समरू जायदाद की इस जंग में भी कामयाब रही। बेगम समरू की आशिकमिजाजी के भी कई किस्से मशहूर हैं, मगर उनका कोई पुख्ता ऐतिहासिक आधार नहीं मिलता। उसके दीवानों में फ्रांस के ली वसाउ और आयरलैंड के जार्ज थामस का खूब जिक्र

आता है। बेगम समरू को अपनी ही फौज के अफसर ली वसाउ से 1793 में निकाह करने के बाद सैनिकों की बगावत का सामना करना पड़ा। बागी सैनिकों से घिर जाने पर वसाउ ने अपने सिर में गोली मार ली। बेगम समरू ने भी खंजर घोंप कर खुदकुशी की कोशिश की, मगर वह इसमें कामयाब नहीं हुई।

1803 में बेगम समरू ने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की मुख्तारी कबूल कर ली और अपनी जागीर और अकूत जायदाद दोनों को ही बचाने में सफल रही। अब उसकी दिलचस्पी स्थापत्य की ओर हुई और उसने कई शानदार इमारतें बनवाईं। दिल्ली के चाँदनी चौक में मुगल बादशाह अकबर शाह से मिली जमीन पर उसने एक बेहद खूबसूरत हवेली बनवाई, जिसमें अब बिजली के सामान का एशिया का सबसे बड़ा बाजार भागीरथ पैलेस है। मगर उसे याद किया जाता है, सरधना के चर्च ऑफ लेडी ऑफ ग्रेसेस और आसपास की इमारतों के लिए जिनमें रोमन और मुगल स्थापत्य एक-दूसरे के आगोश में गुंथे हुए हैं।

सरधना की हर सड़क गिरजाघर तक जाती है। किसी से पूछने के लिए रुको इससे पहले ही लोग हाथ के इशारे से उस तक का रास्ता बता देते हैं। आखिर उनके कस्बे की पहचान जो इससे जुड़ी है। सैकड़ों पॉवरलूम की कभी नहीं रुकने वाली धकधक के साथ यह गिरजाघर भी उनके दिलों में हमेशा के लिए समाया हुआ है।

उत्तर भारत के इस सबसे बड़े गिरजाघर को बनाने में लगभग 11 साल और चार लाख रुपए लगे और यह 1822 में बन कर तैयार हुआ। इसके आर्किटेक्ट इटली के अंतोनियो रेगेलिनी थे और इसमें रोम के सेंट पीटर्स के अलावा मुगल स्थापत्य की छाप साफ दिखाई देती है। पहले यह गिरजाघर कैथेड्रल था, मगर 1961 में इसे पोप से माइनर बेसिलिका का दर्जा मिल गया। इसे बनाने के लिए जिस जगह से मिट्टी निकाली गई, वहाँ दो सुंदर तालाब बन गए हैं। अहाते के गेट से गिरजाघर की दूरी तकरीबन 100 मीटर है। रास्ता आम के बगीचे को चीरता हुआ गुजरता है। इसके दोनों तरफ ईसा मसीह की सलीब यात्रा के 14 मुकामों को सफेद मूर्तियों के जरिए दिखाया गया है। रास्ता अपने दोनों हाथ फैलाए ईसा मसीह की

एक मूर्ति के सामने जाकर खत्म होता है। लेकिन गिरजाघर का मुख्य दरवाजा इसके सामने नहीं है। इस दरवाजे तक पहुँचने के लिए दाहिनी ओर मुड़ कर जाना होता है।

गिरजाघर को सामने से कुछ फासले से देखने पर ही उसकी मुकम्मल खूबसूरती का अहसास होता है। लगता है जैसे बेगम समरू का सादगी से भरा अभिजात हुस्न आँखों के सामने बिखरा पड़ा हो। सामने का बरामदा 18 खंभों पर टिका हुआ है। छत पर बने तीन गुंबदों में बीच वाला बड़ा है और उसके आजूबाजू वाले छोटे। पीछे से दो मीनारें आसमान में सूराख करने के लिए उचक रही हैं। गुंबदों और मीनारों पर लगे धातु के गोले और क्रास इतने साल बीत जाने के बावजूद सूरज की रोशनी में चेहरे पर सुनहरा आईना चमकाते हैं।

अंदर घुसते ही ठीक सामने एक बड़ा चबूतरा है, जिस पर मदर मैरी अपने शिशु को गोद में लिए हैं। इसके नीचे सलीब पर ईसा मसीह की मूर्ति है। चबूतरा और उसके आसपास का हिस्सा राजस्थान से लाए गए संगमरमर से बना है। उस पर रंगीन पत्थरों से फूल उकेरे गए हैं। दोनों तरफ दो और चबूतरे हैं, जिनमें से एक पर लेडी ऑफ ग्रेसेस और दूसरे पर ईसा मसीह की मूर्ति है। लकड़ी पर चुनींदा रंगों से बनी लेडी ऑफ ग्रेसेस की मूर्ति इटली से लाकर 1957 में इस गिरजाघर में लगाई गई थी।

इन चबूतरों पर गुंबदों के रोशनदानों से छन कर आती सूरज की रोशनी में मूर्तियां और मेहराबों की पच्चीकारी चमक उठती है। गिरजाघर में संगमरमर और रंगीन पत्थरों के बेहतरीन इस्तेमाल को देख कर अचानक ही ताजमहल आँखों के सामने कौंध उठता है। बड़े चबूतरे की बाईं ओर बेगम समरू की कब्र है, जिस पर 8 फीट का संगमरमर का स्मारक है, जिसे इटली के मशहूर मूर्तिकार अदामो तादोलीनी ने बनाया था। इसकी चोटी पर बेगम समरू खास मुस्लिम अंदाज में बैठी है। उसके नीचे बेगम के सौतेले नाती और वारिस डेविड आक्टरलोनी डाइस सोम्ब्रे और तीन सलाहकारों की मूर्तियाँ हैं। सबसे नीचे खड़ी छह मूर्तियाँ निडरता, ज्ञान, तसल्ली और संपन्नता की प्रतीक हैं। ईसाई बनने के बाद भी बेगम समरू तमाम जिंदगी अपनी इस्लामी जड़ों से नाता नहीं तोड़

सकी। जिस्म पर दिल्ली की नजाकत ओढ़े हिन्दुस्तान की इस पहली ईसाई जागीरदार का दिल किसी सूफ़ी फकीर की तरह था। क्रिसमस के मौके पर सरधना में होने वाले तीन दिनों के जश्न में भोज के अलावा नाचगाना, आतिशबाजी और मुशायरा भी शामिल रहता था। फरसू के नाम से लिखने वाले फ्रांज गोटलिएब कोहेन समेत उसकी फौज के तीन यूरोपीय कमांडर तो उर्दू में शायरी भी करने लगे थे।

बेगम समरू की जागीर में हिंदू, मुस्लिम और ईसाई के बीच कोई फर्क नहीं था। क्रिसमस के अलावा ईद, दशहरा, दिवाली और होली का त्यौहार भी धूमधाम से मनाया जाता था। सरधना का गिरजाघर अब भी मजहबों के बीच भाईचारे का उसका पैगाम देता है। इसमें हर मजहब के लोग लेडी ऑफ ग्रेसेस की मूर्ति के आगे सिर झुका कर मन्नत माँगने आते हैं। गिरजाघर के बगल में जिस इमारत में कभी बिशप रहा करते थे, वह अब लड़कियों का स्कूल है। अहाते के ठीक सामने बने बेगम के पुराने महल में अब सेंट जोंस सेमीनरी चलती है। यह महल रेनहार्ट को सरधना की जागीर मिलने से पहले का है। बेगम समरू सरधना आने से लेकर अपने इंतकाल के कुछ पहले तक इसी महल में रही। उसने अपने लिए जो नया महल बनवाना शुरू किया था वह उसके गुजरने से एक साल पहले ही तैयार हो सका। मुगल शैली में बने पुराने महल का बरामदा काफी शानदार है। वक्त के साथ की गई तब्दीलियों के बावजूद इस महल के पुराने वैभव को महसूस किया जा सकता है। महल के तहखाने में कमरे बने हैं, जिनमें गर्मी के दिनों में बेगम और उसका परिवार रहा करता था। लेकिन अब सरधना में जमीन में पानी का स्तर बढ़ जाने की वजह से इनका इस्तेमाल नहीं किया जाता। मॉनसून में इन कमरों में पानी भर जाता है और सीलन तो समूचे साल ही बनी रहती है।

नए महल में अब इंटर कॉलेज चलता है। यूनानी शैली में बने इस महल में बेगम के गुसलखाने खासतौर से देखने लायक हैं। इनकी संगमरमर की दीवारों पर नफीस पच्चीकारी है। लेडी फारेस्टर अस्पताल और अंतोन कोठी बेगम से सीधे तौर पर रिश्ता नहीं रखने के बावजूद उनकी यादों से जुड़े हैं। अस्पताल को डाइस की बीवी ने बेगम समरू के

धन से बनवाया था और रेगेलिनी के बंगले अंतोन कोठी का इस्तेमाल चर्च से जुड़े लोगों की रिहाइश के लिए किया जाता है। सरधना की रूह तक उतरने के लिए इन सबके अलावा कैथोलिक कब्रगाह पर भी एक नजर डालना आवश्यक है। इसमें रेनहार्ट और रेगेलिनी के परिवारवालों के अलावा बेगम का दूसरा शौहर वसाउ भी दफन है। नजदीक ही कर्नल जान रेमी सालेउर की कब्र भी है, जिसने 1795 में सैनिकों की बगावत के दौरान बेगम समरू का साथ दिया था। बेगम के खानदान के लोगों की कब्रों पर बने मकबरों को देख कर लगता है कि किसी जमाने में वे बहुत ही खूबसूरत रहे होंगे मगर अब उनकी हालत एकदम खस्ता है।

कब्रों के अंदर सिर्फ मुरदे नहीं सोते बल्कि जिंदगियों से जुड़ी कई जिंदा कहानियां भी दफन होती हैं। लेकिन इन कब्रों में से ज़्यादातर पर लिखी इबारत को पढ़ पाना अब मुमकिन नहीं है। इन टूटी-फूटी कब्रों के बीच से गुजरते हुए जिंदगी की नश्वरता का आभास होता है। इस सचाई से रूबरू कराने के लिए ही मेरी कहानी बेगम समरू की मौत से ही शुरू होती है।[1]

1836 बेगम समरू की मौत के बाद अंग्रेजों के खिलाफ सरधना और उसके आसपास के गाँवों में क्रान्ति की मशाल जलाने वाले लोगों में मेरे लकड़दादा रहमत नूर रिजवी भी एक थे। यह क्रान्ति 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से ठीक 21 साल पहले शुरू हुई थी और 21 साल तक ही इसकी चिंगारियाँ सुलगती रही थी। संयुक्त प्रांत के बाघप्रस्थ (बागपत क्षेत्र) में इस क्रान्ति ने सबसे उग्र रूप धारण किया था।

2

बेगम के राजस्व मंत्री जो मेरे ही पूर्वज थे, उन्होंने यहाँ के किसानों के साथ बड़ा अन्याय किया।[2] यह क्षेत्र बेगम समरू की मृत्यु के बाद 1836 में अंग्रेजों के अधीन आ गया। अंग्रेज अधिकारी प्लाउड ने जमीन का बंदोबस्त करते समय किसानों के साथ हुए अत्याचार को कुछ सुधारा,

1. बेगमों की ऐतिहासिक प्रेम कथाएं, तेजपाल सिंह धामा, सूर्य भारती प्रकाशन दिल्ली, पृष्ठ 132
2. सरधना का इतिहास, महेद्र नारायण शर्मा, पृष्ठ 45

परन्तु मालगुजारी देना बढ़ा दिया। पैदावार अच्छी थी। जाट किसान मेहनती थे, सो बढ़ी हुई मालगुजारी भी देकर खेती करते रहे। खेती के बंदोबस्त और बढ़ी मालगुजारी से किसानों में भारी असंतोष था, जिसने 1857 की क्रान्ति के समय आग में घी का काम किया। शाहमल बिजरौल गाँव के एक साधारण परन्तु आज़ादी के दिवाने क्रान्तिकारी किसान थे। वे मेरठ और दिल्ली समेत आसपास के इलाके में बेहद लोकप्रिय थे। शाहमल का गाँव बिजरौल काफी बड़ा गाँव था। 1857 की क्रान्ति के समय इस गाँव में दो पट्टियाँ थी। उस समय शाहमल एक पट्टी का नेतृत्व करते थे। बिजरौल में उसके भागीदार थे चौधरी शीश राम और अन्य जिन्होंने शाहमल की क्रान्तिकारी कार्रवाइयों का साथ नहीं दिया, दूसरी पट्टी में 4 थोक थी। इन्होंने भी साथ नहीं दिया था, इसलिए उनकी जमीन जब्त होने से बच गई थी।

शाहमल की क्रान्ति प्रारंभ में स्थानीय स्तर की थी, परन्तु समय पाकर विस्तार पकड़ती गई। आस-पास के लम्बरदार विशेष तौर पर बड़ौत के लम्बरदार शौन सिंह और बुध सिंह और जौहरी, जफर्वाद और जोट के लम्बरदार बदन और गुलाम भी विद्रोही सेना में अपनी-अपनी जगह पर आ जमे। शाहमल के मुख्य सिपहसलार बगुता और सज्जा थे और जाटों के दो बड़े गाँव बावली और बड़ौत अपनी जनसंख्या और रसद की तादाद के सहारे शाहमल के केंद्र बन गए।

10 मई को मेरठ से शुरू विद्रोह की लपटें इलाके में फैल गई। शाहमल ने जहानपुर के गूजरों को साथ लेकर बड़ौत तहसील पर चढ़ाई कर दी। उन्होंने तहसील के खजाने को लूट कर उसकी अमानत को बरबाद कर दिया। बंजारा सौदागरों की लूट से खेती की उपज की कमी को पूरा कर लिया। मई और जून में आस-पास के गाँवों में उनकी धाक जम गई। फिर मेरठ से छूटे हुए कैदियों ने उनकी की फौज को और बढ़ा दिया। उनके प्रभुत्व और नेतृत्व को देख कर दिल्ली दरबार में उसे सूबेदारी दी।

12 व 13 मई 1857 को बाबा शाहमल ने सर्वप्रथम साथियों समेत बंजारा व्यापारियों पर आक्रमण कर काफी संपत्ति कब्जे में ले ली और

बड़ौत तहसील और पुलिस चौकी पर हमला बोल कर तोड़फोड़ व लूटपाट की। दिल्ली के क्रांतिकारियों को उन्होंने बड़ी मदद की। क्रांति के प्रति अगाध प्रेम और समर्पण की भावना ने जल्दी ही उनको क्रान्तिवीरों का सूबेदार बना दिया। शाहमल ने बिलोचपुरा के एक बलूची नवीबख्श के पुत्र अल्लादिया को अपना दूत बनाकर दिल्ली भेजा, ताकि अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ने के लिए मदद व सैनिक मिल सकें। बागपत के थानेदार वजीर खाँ ने भी इसी उद्देश्य से सम्राट बहादुरशाह को अर्जी भेजी। बागपत के नूर खाँ के पुत्र मेहताब खाँ से भी उनका सम्पर्क था। इन सभी ने शाहमल को बादशाह के सामने पेश करते हुए कहा कि वह क्रान्तिकारियों के लिए बहुत सहायक हो सकते हैं और ऐसा ही हुआ, शाहमल ने न केवल अंग्रेजों के संचार साधनों को ठप किया, बल्कि अपने इलाके को दिल्ली के क्रान्तिवीरों के लिए आपूर्ति क्षेत्र में बदल दिया।

अपनी बढ़ती फौज की ताकत से उन्होंने बागपत के नजदीक जमुना पर बने पुल को नष्ट कर दिया। उनकी इन सफलताओं से उन्हें 84 गाँवों का आधिपत्य मिल गया। उसे आज तक देश खाप की चौरासी कह कर पुकारा जाता है। वह एक स्वतंत्र क्षेत्र के रूप में संगठित कर लिया गया और इस प्रकार वह जमुना के बाएँ किनारे का राजा बन बैठा, जिससे कि दिल्ली की उभरती फौजों को रसद जाना कतई बंद हो गया और मेरठ के क्रान्तिकारियों को मदद पहुँचती रही। इस प्रकार वह एक छोटे किसान से बड़े क्षेत्र के अधिपति बन गए।

कुछ अंग्रेजों जिनमें हैवेट, फारेस्ट ग्राम्हीर, वॉटसन कोरेंट, गफ और थॉमस प्रमुख थे, को यूरोपियन फ्रासू जो बेगम समरू का दरबारी कवि भी था, ने अपने गाँव हरचंदपुर में शरण दे दी। इसका पता चलते ही शाहमल ने निरपत सिंह व लाजराम जाट के साथ फ्रासू के हाथ पैर बाँधकर काफी पिटाई की और बतौर सजा उसके घर को लूट लिया। बनाली के महाजन ने काफी रुपया देकर उसकी जान बचायी। मेरठ से दिल्ली जाते हुए डनलप, विलियम्स और ट्रम्बल ने भी फ्रासू की रक्षा की। फ्रासू को उसके पड़ोस के गाँव सुन्हैड़ा के लोगों ने बताया कि इस्माइल, रामभाई और जासूदी के नेतृत्व में अनेक गाँव अंग्रेजों के विरुद्ध खड़े हो गए हैं। शाहमल

के प्रयत्नों से हिंदू व मुसलमान एक साथ मिलकर लड़े और हरचंदपुर, ननवा काजिम, नानूहन, सरखलान, बिजरौल, जौहड़ी, बिजवाड़ा, पूठ, धनौरा, बुढ़ैरा, पोईस, गुराना, नंगला, गुलाब बड़ौली, बलि बनाली (निम्बाली), बागू, सन्तोखपुर, हिलवाड़ी, बड़ौत, खेकड़ा, औसख, नादिर असलत और असलत खर्मास गाँव के लोगों ने उनके नेतृत्व में संगठित होकर क्रांति का बिगुल बजाया।

कुछ बेदखल हुए जाट जमींदारों ने जब शाहमल का साथ छोड़कर अंग्रेज अफसर डनलप की फौज का साथ दिया, तो शाहमल ने 300 सिपाही लेकर बसौड़ गाँव पर कब्जा कर लिया। जब अंग्रेजी फौज ने गाँव का घेरा डाला तो शाहमल उससे पहले गाँव छोड़ चुका था। अंग्रेज फौज ने बचे सिपाहियों को मौत के घाट उतार दिया और 8000 मन गेहूँ जब्त कर लिया। इलाके में शाहमल के दबदबे का इस बात से पता लगता है कि अंग्रेजों को इस अनाज को मोल लेने के लिए किसान नहीं मिले और न ही किसी व्यापारी ने बोली बोली। गाँव वालों को सेना ने बाहर निकाल दिया पर दिल्ली से आये दो गाजी एक मस्जिद में मोर्चा लेकर लड़ते रहे और सेना नाकामयाब रही। शाहमल ने यमुना नहर पर सिंचाई विभाग के बंगले को मुख्यालय बना लिया था और अपनी गुप्तचर सेना कायम कर ली थी। हमले की पूर्व सूचना मिलने पर एक बार उन्होंने 129 अंग्रेजी सैनिकों की हालत खराब कर दी थी। पगड़ी बाँधने की प्रथा व्यक्ति को आदर देने की प्रथा ही नहीं थी, बल्कि उन्हें नेतृत्व प्रदान करने की संज्ञा भी थी। शाहमल ने इस प्रथा का पूरा उपयोग किया। शाहमल बसौड़ गाँव से भाग कर निकलने के बाद वह गाँवों में गया और करीब 50 गाँवों की नई फौज बनाकर मैदान में उतर पड़ा। दिल्ली दरबार और शाहमल की आपस में उल्लेखित संधि थी। अंग्रेजों ने समझ लिया कि दिल्ली की मुगल सत्ता को बर्बाद करना है तो शाहमल की शक्ति को दुरुस्त करना आवश्यक है। उन्होंने शाहमल को जिन्दा या मुर्दा उसका सर काटकर लाने वाले के लिए 10000 रुपये इनाम घोषित किया। डनलप जो कि अंग्रेजी फौज का नेतृत्व कर रहा था, को शाहमल की फौजों के सामने से भागना पड़ा। छपरा गाँव के त्यागियों, बसोद के जादूगर और बिचपुरी के गूर्जरों ने भी

शाहमल के नेतृत्व में क्रांति में पूरी शिरकत की। अम्हेड़ा के गूर्जरों ने बड़ौत व बागपत की लूट व एक महत्वपूर्ण पुल को नष्ट करने में हिस्सा लिया। सिसरौली के जाटों ने शाहमल के सहयोगी सूरजमल की मदद की, जबकि दाढ़ी वाले सिख ने क्रान्तिकारी किसानों का नेतृत्व किया।

जुलाई 1857 में क्रान्तिकारी नेता शाहमल को पकड़ने के लिए अंग्रेजी सेना संकल्पबद्ध हुई पर लगभग 7 हजार सैनिकों, सशस्त्र किसानों व जमींदारों ने डटकर मुकाबला किया। शाहमल के भतीजे भगता के हमले से बाल-बाल बचकर सेना का नेतृत्व कर रहा डनलप भाग खड़ा हुआ और भगत ने उसे बड़ौत तक खदेड़ा। इस समय शाहमल के साथ 2000 शक्तिशाली किसान मौजूद थे। गुरिल्ला युद्ध प्रणाली में विशेष महारत हासिल करने वाले शाहमल और उनके अनुयायियों का बड़ौत के दक्षिण के एक बाग में खाकी रिसाला से आमने-सामने घमासान युद्ध हुआ।

डनलप शाहमल के भतीजे भगता के हाथों से बाल-बाल बचकर भागा, परन्तु शाहमल जो अपने घोड़े पर एक अंगरक्षक के साथ लड़ रहा था, फिरंगियों के बीच घिर गया। उसने अपनी तलवार के वो करतब दिखाए कि फिरंगी दंग रह गए। तलवार के गिर जाने पर शाहमल अपने भाले से दुश्मनों पर वार करता रहा। इस दौर में उसकी पगड़ी खुल गई और घोड़े के पैरों में फँस गई, जिसका फायदा उठाकर एक फिरंगी सवार ने उसे घोड़े से गिरा दिया। अंग्रेज अफसर पारकर, जो शाहमल को पहचानता था, ने शाहमल के शरीर के टुकड़े-टुकड़े करवा दिए और उसका सर काट कर एक भाले के ऊपर टँगवा दिया।

फिरंगियों के लिए यह सबसे बड़ी विजय पताका थी। डनलप ने अपने कागजात पर लिखा है कि अंग्रेजों के खाकी रिशाले के एक भाले पर अंग्रेजी झंडा था और दूसरे भाले पर शाहमल का सर टाँगकर पूरे इलाके में परेड करवाई गई। चौरासी गाँवों के देश की किसान सेना ने फिर भी हार नहीं मानी और शाहमल के सर को वापिस लेने के लिए सूरजमल और भगता स्थान-स्थान पर फिरंगियों पर हमला करते रहे, इसमें राजपूतों और गुजरों ने भी बढ़-चढ़ कर साथ दिया। शाहमल के गाँव वाले सालों तक युद्ध चलाते रहे।

21 जुलाई 1857 को तार द्वारा अंग्रेज उच्चाधिकारियों को सूचना दी गई कि मेरठ से आयी फौजों के विरुद्ध लड़ते हुए शाहमल अपने 6000 साथियों सहित मारा गया। शाहमल का सिर काट लिया गया और सार्वजनिक रूप से इसकी प्रदर्शनी लगाई गई। पर इस शहादत ने क्रान्ति को और मजबूत किया तथा 23 अगस्त 1857 को शाहमल के पौत्र लिज्जामल जाट ने बड़ौत क्षेत्र में पुनः जंग की शुरुआत कर दी। अंग्रेजों ने इसे कुचलने के लिए खाकी रिसाला भेजा जिसने पाँचली बुजुर्ग, नंगला और फुपरा में कार्रवाई कर क्रान्तिकारियों का दमन कर दिया। लिज्जामल को बंदी बना कर साथियों सहित, जिनकी संख्या 32 बताई जाती है, को फांसी दे दी गई। शाहमल मैदान में काम आया, परन्तु उसकी जगाई क्रान्ति के बीज बड़ौत के आस-पास प्रस्फुटित होते रहे। बिजरौल गाँव में शाहमल का एक छोटा सा स्मारक बना है, जो गाँव को उसकी याद दिलाता रहता है।[1]

3

तोमर शिरोमणि बाबा शाहमल की शहादत के बाद दाहिम्म (धामा) गौत्र के जाटों ने फिरंगियों के दाँत खट्टे करने में कोई कोर कसर बाकी नहीं रखी। इतिहास में दाहिम्माओं की भूमिका[2] बड़ी ही गौरवशाली रही है। अपनी बात आगे बढ़ाने से पहले मैं आपको दाहिमाओं के बारे में भी थोड़ा बताना चाहती हूँ। दरअसल महर्षि पौलस्त्य और दधिमाता की संतान दाहिम्म के नाम से इतिहास में प्रसिद्ध है। राजस्थान के जोधपुर जिले के गोठ और मांगलोद के बीच आज भी दाहिम्माओं की आदि माता दधिमाता का पावन मंदिर है। इस कारण यह क्षेत्र दधिमति क्षेत्र कहा जाता है। इसी वंश के वीर पुरुष कैमास को पृथ्वीराज का सेनापति होने का गौरव प्राप्त हुआ। पृथ्वीराज ने किसी कारणवश कैमास को मृत्यु दंड दे दिया था, तब उसके परिवार वाले पहले बयाना और फिर दक्षिण दिशा में चले गए थे। लेकिन जब पृथ्वीराज चौहान और मोहम्मद गौरी का अंतिम युद्ध हुआ, तो

1. मंगल पांडे, अवधेश कुमार चौबे, धीरज पाकेट बुक्स, मेरठ
2. पृथ्वीराज चौहान एक पराजित विजेता, तेजपाल सिंह धामा, पृष्ठ 124

कैमास के परिजनों ने इन्द्रप्रस्थ का रुख किया और स्त्री व बालकों को छोड़कर परिवार के समस्त पुरुष पृथ्वीराज की सेना में भरती हो गए। पृथ्वीराज को बंदी बनाए जाने के बाद इन्हें भी बंदी बना लिया गया और एक टुकड़ी के साथ गुलाम बनाने के लिए विदेश ले जाया जा रहा था, तब सिकंदरपुर नामक खेड़े में दाहिमाओं ने विद्रोह करके मुस्लिम आक्रान्ताओं को मार गिराया। सिकंदरपुर की आबादी भी मुस्लिम थी, वह खेड़ा भी तहस-नहस कर दिया गया और फिर दाहिमा वहाँ से यमुना के किनारे भयंकर वनों में चले गए। वे जंगल उन दिनों बेहटा के नाम से प्रसिद्ध थे। उनमें शेर आदि भी रहते थे। बेहटा के जंगल में दाहिमाओं का मुख्य कर्म कृषि, फलोत्पादन एवं गोपालन था। एक बार दाहिमाओं का मुखिया अपनी गऊओं को चराता हुआ रास्ता भटक गया और बहुत दूर निकल गया। उसके पास बहुत ही उत्तम नस्ल की गऊएँ थी। एक खेड़े के कुछ लोगों ने दाहिमाओं के मुखिया को मारकर सैनी वाले कुएँ में डाल दिया और उसकी गऊओं को अपने कब्जे में कर दिया। उस ग्वाले के साथ एक कुत्ता भी आया था। उस कुत्ते ने अपने स्वामी को बचाने के लिए बहुत प्रयास किया, लेकिन सफल न हो सका। अंत में कुत्ता किसी तरह बेहटा के जंगलों में पहुँचा और वहाँ एक समझदार व्यक्ति की धोती पकड़कर खींचने लगा। कई लोगों ने इस घटना को देखा और मुखिया के घर न लौटने की चर्चा तो हो ही रही थी, इसलिए वह समझ गया कि यह कुत्ता मुखिया के बारे में अवश्य ही कुछ जानता है। लोग इकट्ठा हुए और उस कुत्ते के साथ चल दिए। सैनी खेड़े में सैनी वाले कुएँ पर कुत्ता उन्हें ले आया, तो उन्हें अपना मुखिया कुएँ में मरा हुआ मिला। दाहिमा तब तो बेहटा वापस चले गए, लेकिन फिर पूरी तैयारी के साथ आए वहाँ आसपास सात खेड़े थे। सातों खेड़ों की सारी आबादी को मार गिराया, लेकिन एक ब्राह्मण परिवार छोड़ा था। रूद्ध, ददवाड़िया और मुंड़ाला तीन सगे भाई थे, उन्होंने यहीं रहने का निर्णय लिया तो, सूम, धाती आदि वीरों ने भी यहीं डेरा डाल लिया और सात खेड़ों को नष्ट करने के स्थान पर एक नए नगर खेकड़ा को बसाया।

खैर! बात चल रही थी बाबा शाहमल की शाहदत के बाद की। तो

बाबा शाहमल की शाहदत के बाद खेकड़ा के चौधरी सूरज मल दाहिम्म ने यहाँ की पट्टी रूद्ध के मुखिया साहिब सिंह के साथ मिलकर बागियों का नेतृत्व कर फिरंगियों के दाँत खट्टे कर दिए थे। बागियों ने अंग्रेज अफसरों की पत्नियों को बंधक बनाकर खेतों में काम कराया था। हालाँकि साहिब सिंह आंग्ल औरतों को बंधक बनाने के खिलाफ थे, इसलिए उन्होंने इस कार्य में उनका साथ नहीं दिया, लेकिन कई गौरों को मौत के घाट अवश्य उतारा था। नारी की प्रतिष्ठा के प्रश्न पर साहिब सिंह दाहिम्म ने क्रान्ति के लिए अपना अलग ही रास्ता चुना था। लेकिन सूरजमल अंग्रेजों का नामोंनिशान मिटाना चाहते थे। इसी कारण उन्होंने अंग्रेज औरतों को बंधक बनाया। खेकड़ा के बीबीसर तालाब पर उन्होंने बंधक बनाई गयी ब्रिटिश अफसरों की पत्नियों से खेतों पर काम कराया और इसका विरोध करने पर एक दर्जन से अधिक अंग्रेज़ सैनिकों को मार डाला। अंग्रेजी अफसरों ने योजनाबद्ध ढंग से हमला कर सूरजमल समेत इनके कुनबे के सुरता, हरसा, राजे और भरता समेत 13 लोगों को गिरफ्तार कर लिया। इनकी जमीन, मकान आदि कुर्क कर सभी को बागी घोषित करते हुए फाँसी की सजा सुनाई गई। चौधरी सूरज मल खेकड़ा की पट्टी चक्रसैनपुर के रहने वाले किसान थे। उनका सोलह परिवार का बड़ा कुनबा था, जिसके वह मुखिया थे।

इसी गाँव के महारम पहलवान उन दिनों देशभर में कुश्ती के कारण बड़े ही प्रसिद्ध थे। इन क्रान्तिकारियों को फाँसी देने से पूर्व महारम पहलवान को अंग्रेज़ों के गायब दो बच्चे मिल गए। दरअसल इन बच्चों को साहिब सिंह ने मारने नहीं दिया था, क्योंकि उनकी आयु बहुत छोटी थी। इन्हीं बच्चों को महारम ने वापस लौटाने के एवज में सभी की फाँसी की सजा माफ़ करने की माँग की। अंग्रेज अफसरों ने अन्य सभी की फाँसी तो माफ कर दी, लेकिन सूरजमल की मौत की सज़ा माफ करने को इंकार कर दिया। पट्टी चक्रसैनपुर एवं रूद्ध की काफी भूमि अंग्रेजों ने अनाधिकार चेष्टा करके मुंडालों को बच्चे लौटाने की एवज में प्रदान कर दी। साहब सिंह को छोड़ दिया गया क्योंकि उसने मासूम बच्चों को मौत के घाट नहीं उतारा था।

4

'खलक खुदा का! मुल्क बादशाह का!!
राज महारानी लक्ष्मीबाई का!!!'

1857 में यही नारा गूँजा था सारे भारत में, क्योंकि देश अंग्रेजों की गुलामी से पिंड छुड़ाने के लिए बेचैन हो उठा था। मेरे लकड़दादा रहमत नूर रिजवी के परिवार वाले समरू बेगम के शासन में काफी प्रताड़ित हुए थे। इसलिए लकड़दादा समरू बेगम के शासन के समाप्त होने के बाद रियासत सरधना में एक मुस्लिम शासन कायम करना चाहते थे और इसीलिए उन्होंने 1857 में किशोर अवस्था में ही इस क्रांति का शंखनाद किया था। लेकिन नूर रिजवी साहब को न तो मुल्क बादशाह का पसंद था और न ही राज महारानी लक्ष्मीबाई का, वे तो सरधना के आसपास बेगम समरू की करीब 20 साल पहले ही मृत हो चुकी रियासत की जगह एक नई रियासत की नींव डालकर नए राजवंश का सूर्य उदय करना चाहते थे। उन्होंने इसी गर्ज से क्रांति में भाग लिया था।

क्रांति को सफल बनाने के लिए देशभर में एक गुप्त संगठन कायम किया गया। महीनों पहले आज़ादी की लड़ाई का बुलावा दूतों द्वारा हर जगह भेजा गया। एक अन्य क्रान्तिकारी अजीमुल्ला ख़ाँ ने दिल्ली के बादशाह को भी इस सम्बन्ध में कई पत्र लिखे।

अवध के नवाब के वज़ीर अली नकी ख़ाँ को दूत के रूप में अजीमुल्ला ख़ाँ ने फौजी छावनियों में भेजा। अली साधु और फकीर के भेष में कोलकाता को प्रधान केन्द्र बनाकर क्रान्ति का प्रचार कर रहा था। हिन्दू सिपाहियों व अधिकारियों ने गंगाजल लेकर क्रान्ति करने का प्रण लिया। मुसलमानों ने कुरान हाथ में उठाकर प्रतिज्ञाएँ कीं।

पूरे देश में इतनी बड़ी क्रान्ति के लिए अजीमुल्ला ने धन इकट्ठा करना शुरू कर दिया। लोग जगह-जगह इस काम के लिए धन जमा करने लगे। मेरे प्रपितामह ने भी क्रान्ति की सफलता के लिए काफी धन इकट्ठा किया, यहाँ तक कि उन्होंने अपनी बेगम साहिबा के गहने भी बेच डाले थे, क्योंकि वे चाहते थे कि यह क्रान्ति हर हाल में सफल हो और वे एक नई रियासत के मालिक बन जाएँ।

उनके जैसे ही कई अन्य क्रान्तिकारी भी थे, जो केवल स्वार्थसिद्धि के लिए इस योजना को सफल बनाने हेतु जीतोड़ मेहनत कर रहे थे और इस योजना के लिए ज़रूरत से ज़्यादा धन इकट्ठा कर लिया गया था। क्रान्ति के पाँच मुख्य केन्द्र बनाए गए, दिल्ली, बिठूर, कोलकाता, लखनऊ और सतारा। अंग्रेज़ों की नाक के नीचे खुले तौर पर ज़ोरों के साथ युद्ध की तैयारियाँ होती रहीं और अंग्रेज़ों को आख़िर तक इसका पता न चला। अजीमुल्ला ख़ां ने गुप्तचरों का सही चुनाव भी करना जरूरी समझा। ये लोग अंग्रेज़ों की गतिविधि की सूचनाएँ रोज केन्द्रों को देते रहते। धीरे-धीरे और भी छोटे केन्द्र बनाए गए, क्योंकि काम इतना ज़्यादा बढ़ गया था कि और केन्द्र खोलना बहुत जरूरी था।

उसने सरकारी कर्मचारियों को भी क्रान्ति के लिए तैयार कर लिया। बावर्ची, भिश्ती, थाने के सिपाही, दरोगा तथा अन्य नौकरों को अपने पक्ष में कर लिया गया। थानों में ऐसा कोई काम करने वाला बाकी न बचा, जो आज़ादी की लड़ाई में भाग लेने के लिए प्रतिज्ञा से बंधा न हो।

31 मई, 1857 को रविवार के दिन क्रान्ति शुरू करने का ऐलान जारी हो गया था। हर केन्द्र के मुख्य नेताओं को तथा पलटन के बड़े देशी अधिकारियों को यह आदेश पहुँचा दिया गया था। लेकिन मेरठ में एक घटना घट गई थी। एक साधु, जो बाद में दयानंद सरस्वती[1] के नाम से प्रसिद्ध हुआ और जिसने आर्य समाज नामक संगठन बनाया, वह उन दिनों लोगों को प्याऊ पर पानी पिलाया करता था। एक दिन कुछ सैनिक जब प्याऊ पर पानी पीने आए तो उस साधु ने उन्हें पानी पिलाने से मना कर दिया।

''हम तुम्हें पानी नहीं पिला सकते!''

''हम अछूत नहीं, हम तो ब्राह्मण हैं।''

''तुम ब्राह्मण नहीं हो सकते, तुम तो अछूतों के अछूत हो!''

''क्या मतलब?'' मंगल पांडे[2] नामक सैनिक ने पूछ ही लिया था।

''तुम लोग गाय की चर्बी वाले कारतूस मुँह से काटते हो।''

''क्या?'' सुनकर अवाक् रह गया था मंगल पांडे।

1. देखें, 1857 की क्रांति और मेरठ, आचार्य दीपांकर
2. मंगल पांडे, अवधेश कुमार चौबे, आर. आर. प्रकाशन, शाहदरा दिल्ली, पृष्ठ 32

यह बात चारों ओर फैल गई और सैनिकों ने चर्बी वाले कारतूस का बहिष्कार कर दिया। मेरठ में लगभग 85 सिपाहियों ने कारतूस को स्पर्श करने से भी इंकार कर दिया, फलस्वरूप उनका कोर्ट मार्शल हुआ। नौ मई के दिन उन्हें तोपखाने के आमने-सामने खड़ा किया गया। वहीं पर गोरी फौज भी शस्त्र से लैस होकर खड़ी थी। देशभक्त भारतीय सिपाहियों की वरदियाँ उतरवा ली गई और हथकड़ी बेड़ियाँ डालकर जेल की अंधेरी कोठरी में बन्द कर दिया गया। कहते हैं, शेष भारतीय सिपाहियों को भी अपने धर्मनिष्ठ भाइयों की दुर्दशा का सिंहावलोकन करने के लिए बुला लिया गया था।

एक भाई अपनी आँखों के सामने दूसरे भाई की दुर्दशा का विदारक नाटक कब तक देख सकता है! आखिर इस संसार में कोई भी आदमी अमर बनकर थोड़े ही आया है। जब सबों को एक न एक दिन जाना ही है, तो फिर अन्याय को सहन करने से क्या लाभ। देशभक्त सिपाहियों के लिए उत्सर्गत्योहार से बढ़कर दूसरा त्योहार है ही कौन।

दस मई को मेरठ में सिपाही विद्रोह का बिगुल फूँका गया। भारतीय सिपाहियों ने गोरी पल्टन को गाजर-मूली की तरह काट गिराया। चारों तरफ हाहाकार मच गया। सभी गीदड़ की तरह इधर से उधर प्राणरक्षा के लिए भागने लगे। चूँकि सबसे पहले दिल्ली छावनी को सूचना दे दी गई थी, अतः दूसरे दिन मेरठ वाले तमाम सिपाही दिल्ली के लिए कूच कर दिए।

महारानी लक्ष्मीबाई को एक-एक मिनट की सूचना मिल रही थी। तात्याँ टोपे, नाना साहब और राव साहब आदि को फुर्सत कहाँ। वे ही लोग तो एक दूसरी छावनी के बीच सूत्र स्थापित करने का काम कर रहे थे। महारानी को थोड़ी तकलीफ अवश्य हुई, क्योंकि समय से पहले विस्फोट हो गया था। फिर भी दिन दूनी रात चौगुनी इनकी सेना-शक्ति में वृद्धि हो रही थी। सिर्फ झाँसी में ही नहीं, सारे भारत में इनके कर्मठ जासूस भ्रमण कर रहे थे।

चूँकि गुप्त रूप से विद्रोह की तैयारी दो दिन पहले से ही हो रही थी, अतः उसके शुभारम्भ में किसी तरह की हिचकिचाहट नहीं हुई। निश्चित

समय पर मेरठ के भारतीय सैनिक दिल्ली पहुँच गए और विप्लव का बिगुल फूँक दिया गया।

'हर हर महादेव!'

'अल्ला हो अकबर!' के नारों से दिल्ली का वातावरण गूँज उठा। कितने अंग्रेज अफसर भारतवासियों की गोली के शिकार हुए, इसका लेखा-जोखा प्रस्तुत करना असम्भव नहीं, तो सम्भव भी नहीं है। अंग्रेजी फौज को पीछे हटना पड़ा। युद्धोपरान्त विजय की दुंदुभि बजाई गई। बात की बात में दुर्दम्य अंग्रेजी शासन का पतन हुआ, मेरठ और दिल्ली की सम्मिलित भारतीय फौज ने बहादुर शाह को भारत का सम्राट घोषित किया।

21 तोपों की सलामी दी गई।

दिल्ली किले पर अधिकार प्राप्त करने के बाद उत्तरी भारत के कोने-कोने में सिपाही-विद्रोह की आग भड़क उठी थी। शाहमल की वीरता की गाथा हम शुरू में ही सुना चुके हैं। प्रपितामह को नवाब बनने का सपना दिन में ही पूरा होता दिखाई देने लगा था।

कानपुर की छावनी में भी विद्रोह भड़क चुका था। 31 मई के बाद विद्रोह का भीषण कार्यक्रम कुछ दिनों के लिए ठप्प हो गया। अंग्रेजों ने भारतीय सैनिकों की इस युद्ध-नीति को नहीं समझा। उन्हें पूरा विश्वास हो गया कि अब विद्रोह की आग पूर्णतः बुझ गई; किन्तु ऐसी बात नहीं आग और अधिक सुलगती ही जा रही थी।

4 जून 1857 ई. के दिन की बात है। नाना साहब की आज्ञा हुई।

फायर आरम्भ हुआ : एक! दो!! तीन!!!

तीन फायर के बाद अंग्रेजों में हलचल मच गई। 'बारह बजे, रात में किधर जायें। कहाँ भागें! कैसे भागें!' अंग्रेजी फौज एवं अफसरों को आत्मसमर्पण करना पड़ा। अधिकांश अंग्रेज भारतीय सैनिकों की तलवार के शिकार हुए। सुबह होते-होते खजाना एवं शस्त्रागार पर क्रांतिकारियों का अधिकार हो गया। नाना साहब राजा घोषित किए गये। 'नाना साहब जिन्दाबाद' के नारों से आकाश गूँज उठा। झाँसी की छावनी इस आग से कैसे बची रह सकती थी। नवाब अली बहादुर, पीरु अली एवं सदाशिवराव

ने 31 मई की सूचना लगभग पन्द्रह दिन पूर्व ही स्कीन एवं गार्डन को दे दी थी। अतः 31 मई का सामना करने के लिए वे लोग पहले से ही तैयार थे। महारानी को सिर्फ उनकी तैयारी की सूचना ही नहीं मिली थी, बल्कि मोतीबाई के द्वारा युद्ध-योजना का मानचित्र भी मिल चुका था। अतः महारानी ने अपने गुप्तचर के द्वारा झांसी की छावनी में भारतीय सिपाहियों को सूचना भेज दी कि 'झाँसी की छावनी में 31 मई को विद्रोह न करें। चार जून तक किसी तरह धैर्य से काम लें।'

जो समझदार सिपाही थे, वे तो रानी की नीति को समझ गए, किन्तु जो नासमझ थे, उन्हें रानी का विचार अच्छा नहीं लगा। फिर भी वे कुछ कर नहीं सके, क्योंकि उनकी संख्या बहुत कम थी।

जब 31 मई को कोई भी अशुभ घटना नहीं घटी तो अंग्रेज़ों को पूरा विश्वास हो गया कि झांसी में सिपाही विद्रोह नहीं होगा। किन्तु 1 जून की रात में स्कीन को खबर मिली कि कुछ ठाकुरों ने कोंच पर अप्रत्यक्ष रूप से धावा बोल दिया है। अतः उसने कोंच की रक्षा की तैयारी कर ली जैसा कि उसने कोंच के सम्बन्ध में गवर्नर के पास पत्र भी लिखा था :

'रात को मुझे खबर मिली कि कुछ ठाकुर लोग कोंच पर धावा करने वाले हैं। मैंने तुरन्त डनलप को सूचित किया। सवेरे ही कुछ फौज गाँव की रक्षा के लिए भेज दी। फौज के पहुँचते ही ठाकुरों का विचार बदल गया। इधर-उधर भले ही विद्रोह फैला हो, परन्तु यहाँ के लोग हमसे कभी नहीं बिगड़ेंगे।'

4 जून, 1957 ई. को झाँसी में सिपाही-विद्रोह के लक्षण प्रकट हुए। गुरबख्शसिंह नाम का एक हवलदार था। वह कुछ सैनिकों को लेकर 'स्टार-फोर्ट' चला गया। इस 'फोर्ट' का निर्माण कम्पनी सरकार ने स्वयं किया था। इसकी बनावट इतनी अच्छी थी कि लोगों ने इसे 'तारा-गढ़' कहना प्रारम्भ कर दिया था। गुरबख्शसिंह अपने सैनिकों के साथ अकस्मात् इस गढ़ में प्रवेश कर गए और वहाँ पर जितने शस्त्र एवं रुपये-पैसे थे, उठवाकर ले आए। बाद में तो यह क्रांति और तीव्र होती चली गई और लेकिन जितनी गति से तीव्र हुई, उतनी ही गति से इसे अंग्रेज़ों ने कुचल दिया।

5

बहादुरशाह जफर के बेटों को तोप से उड़ा दिया गया और निहत्थी महारानी लक्ष्मीबाई को भी बलिदान देना पड़ा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में एक नया जाट साम्राज्य स्थापित करने वाले बाबा शाहमल भी बलिदानी हो गए। इतिहास की इस बेरूखीपूर्ण अंगडाई से मेरे प्रपितामह के तो सारे सपने ही चकनाचूर हो गये। सपने ही चकनाचूर नहीं हुए, वरन् अंग्रेज़ों ने उन्हें जिंदा या मुर्दा पकड़ने के लिए उनके सिर पर भारी भरकम इनाम भी रख दिया था। इसका परिणाम यह हुआ कि लकड़दादा रिज़्वी संयुक्त प्रांत छोड़कर किसी अज्ञात स्थान पर चले गए और फिर दक्षिण भारत के लातूर में जाकर बस गए। कालांतर में उन्होंने हैदराबाद के निज़ाम की चाकरी कर ली और चूँकि अंग्रेजों व निज़ाम के संबंध अच्छे थे तो उन्हें न केवल माफ किया गया, वरन् उन्हें अहमदनगर जिले में चाँद पाटिल जिसे नवाब का खिताब भी दिया गया था, उनके सहायक के रूप में रखवा दिया गया। निज़ाम ने उन्हें दरअसल चाँद पाटिल के पास इसलिए छोड़ा था कि चाँद पाटिल नरम प्रकृति का आदमी था और वह लोगों से अच्छी तरह लगान नहीं वसूल पाता था। लेकिन लकड़दादा ऐसे नहीं थे, उनकी रगों में तो बाबर जैसे शहंशाहों का खून सरपट दौड़ा करता था। बहुत जल्द ही उन्होंने चाँद पाटिल के सारे कामकाज पर अधिकार कर लिया था। चाँद पाटिल के जिम्मे बस एक ही काम रहा था और वह था नए-नए घोड़ों की सवारी करना। ठीक यही शौक तो लकड़दादा को भी था, दरअसल नए-नए घोड़े चाँद पाटिल खरीदता था और उनकी सवारी करने का लुत्फ लकड़दादा उठाया करता था। हाँ चाँद पाटिल का एक और भी काम था और वह था घोड़ों के खरीदने के अलावा उन्हें जंगल में ले जाना और प्रशिक्षण देना। कभी-कभी चाँद पाटिल और लकड़दादा दोनों मिलकर घुड़सवारी पर जाया करते थे।

घुड़सवारी करना वीरों को शोभा तो देता ही है और फिर मेरे लकड़दादा तो न केवल वीर थे, वरन् एक नया साम्राज्य भी स्थापित करने का सपना देखते थे। भले ही उनका वह सपना पूरा न हुआ हो, वे नवाब

चाँद पाटिल की पनाहगाह में रहते हुए जागीरदार तो बन ही गए थे। लेकिन वे नौकर-चाकरों से जागीरदार कहलवाना पंसद नहीं करते थे, इसलिए खादिम उन्हें भी नवाब साहब कहकर पुकारते थे। भले ही नवाब की चाकरी में थे, लेकिन जागीरदारी भी किसी नवाबी से कम न थी। एक दिन वे चाँद पाटिल के साथ घुड़सवारी करते-करते बहुत दूर निकल गए। सच पूछिए तो रास्ता भटक गए थे वे। वे जंगलों में भटकते हुए बहुत दूर निकल चुके थे और जब थक गए तो घोड़े से उतर कर वे और चाँद पाटिल दोनों ही एक पेड़ के नीचे आराम करने लगे और घोड़े को घास चरने के लिए छोड़ दिया। लकड़दादा की आँख लग गई और उनका घोड़ा और चाँद पाटिल की घोड़ी चरते-चरते उनसे दूर होते चले गए। लकड़दादा की जब आँखें खुली तो घोड़े और घोड़ी को पास न देखकर बड़े चिंतित हो गए और अपने हमसफर पशुओं की खोज में निकल पड़े। उन्होंने जब एक बहुत ऊंचे पेड़ पर चढ़कर देखा तो उन्हें एक खेड़ा नजर आया अर्थात् कच्चे मकानों से बना हुआ कोई गाँव था। वह पेड़ से उतरकर उसे गाँव की ओर चल पड़े। उस गाँव का नाम शिरडी था। लकड़दादा और चाँद पाटिल ने जैसे ही उस गाँव में प्रवेश किया तो उन्होंने वहाँ एक तेजस्वी युवक को लोगों से घिरा देखा। कोई बीस वर्ष की उम्र होगी उसकी। एक तरुण, स्वस्थ, फुर्तीला तथा अति सुंदर युवक नीम के वृक्ष के नीचे समाधि में लीन दिखाई पड़ा। उसे सर्दी-गर्मी की जरा भी चिंता नहीं थी। इतनी कम उम्र में उस योगी को अति कठिन तपस्या करते देखकर लोगों को बड़ा आश्चर्य हो रहा था। लोगों का कहना था कि दिन में वह साधक किसी से भेंट नहीं करता और रात में निर्भय होकर एकांत में घूमता है। गाँव के लोग जिज्ञासावश उससे पूछते थे कि आप कौन हैं और उसका कहाँ से आगमन हुआ है? उस नवयुवक के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर लोग उसकी तरफ सहज ही आकर्षित हो जाते थे। वह सदा नीम के पेड़ के नीचे बैठा रहता था और किसी के भी घर नहीं जाता था। यद्यपि वह देखने में नवयुवक लगता था तथापि उसका आचरण महात्माओं के सदृश था। वह त्याग और वैराग्य का साक्षात् मूर्तिमान स्वरूप था।

लकड़दादा और चाँद पाटिल दोनों ही बहुत परेशान थे और उनका

चेहरा पसीने से तर हो गया था। उन्होंने भीड़ देखी और अपने पग रोक दिए। लकड़दादा ने भी उस युवक को देखा जो मौन बैठा था। किसी भी व्यक्ति के प्रश्न का कोई जवाब उसने नहीं दिया था, लोग आपस में बातें कर रहे थे। कोई कह रहा था पागल है भटक कर इधर आ गया होगा। कोई सिर फिरा समझ रहा था। तभी चाँद पाटिल ने भीड़ की तरफ़ देखकर प्रश्न किया, "क्या इधर सफेद रंग का घोड़ा और काले रंग की घोड़ी किसी ने देखे हैं।"

किसी ने कोई जवाब नहीं दिया, फिर उन्होंने अपना प्रश्न आगे बढ़ाया, ''मैं जागीरदार हूँ और हमारे एक घोड़ा और घोड़ी दोनों लापता हैं। अरबी नस्ल के सुंदर पशु हैं।''

भीड़ में से कई व्यक्तियों का स्वर एक साथ आया, "नहीं हमने नहीं देखा।"

जो युवक अब तक मौन बैठा था और किसी की बात का उत्तर नहीं दे रहा था, अचानक बोल पड़ा, "पशु भूखे थे, कहीं चर रहे होंगे।''

''यह तो हम भी जानते हैं!''

''और हम इससे भी आगे जानते हैं!''

''आप इससे आगे क्या जानते हैं?'' लकड़दादा ने प्रश्न किया था।

''आपके घोड़े को भी बुलवा सकते हैं।''

लकड़दादा और चाँद पाटिल जो अब तक घोड़े के लिए बहुत परेशान थे, उन्होंने पूछा, "तुम बुलवा सकते हो क्या?"

"क्यों नहीं बुलवा सकता, यहीं बुलवा दूँ क्या?" उस तेजस्वी युवक ने कहा।

"यदि बुलवा दो, तो बड़ी कृपा होगी।" लकड़दादा ने विनम्रता के साथ कहा, हालाँकि हिन्दुओं के साथ वे विनम्रता कभी दिखाते नहीं थे।

युवक ने आसमान की ओर देखा और अपने अधरों में ही धीरे से कुछ कहा। सभी भीड़ में खड़े आदमी, चाँद पाटिल और लकड़दादा ने देखा कि युवक ने अपने दोनों हाथ आकाश की ओर उठाए, उसके हाथ गुलाबी थे, बड़े ही चमकीले हाथ थे। उसी समय सामने से एक घोड़ा चलता हुआ आया। भीड़ यह सब देखकर दंग रह गई घोड़े की पहचान एकदम वैसी

ही थी, जैसी उसे लकड़दादा ने बताई थी। अब लकड़दादा के मन में जिज्ञासा पैदा हुई, ''यह तो आ गया मगर घोड़ी?''

''वह भी रास्ते में मिल जाएगी।''

''अच्छी बात है।'' उन्होंने युवक की ओर देखा और कहा, "महानुभाव आप कौन हैं? कहाँ से आए हैं?

"क्या आप जानते हो कि आप कौन हो और कहाँ से आए हैं?" युवक ने प्रश्न का उत्तर प्रश्न में बदल दिया।

लकड़दादा ने उत्तर में बताया, ''मैं मूलतः संयुक्त प्रांत का रहने वाला हूँ, लेकिन पास के ही गाँव में चाँद पाटिल की सेवा में रहते हुए इनकी जागीदारी में हाथ बँटाया करता हूँ। और चाँद पाटिल के बारे में तो क्या कहूँ!''

''इनके बारे में हम जानते हैं।''

''क्या जानते हैं आप इनके बारे में?''

''निज़ाम हैदराबाद एवं अंग्रेज़ों ने इनकी वीरता से खुश होकर इन्हें नवाब की उपाधि दी है और एक बड़ी जागीर भी, जिसकी देखभाल तुम करते हो और गरीब किसानों को परेशान करते हुए लगान वसूली करते हो।''

''हमारे बारे में आपको किसी ने गलत बहका दिया है।''

''किसी ने बहका दिया...'' एक लंबी साँस लेकर उन्होंने फिर कहा, ''यह बात तो तुम जानते हो बस! इससे आगे तुम क्या ये सभी लोग भी नहीं जानते हैं कि वे कौन हैं? और कहाँ से आए हैं? और कहाँ जाएँगे लाखों लोगों में कोई एक जानता होगा कि वह कौन है?''

सारी भीड़ उसकी बातों से प्रभावित हो रही थी। युवक हँस रहा था। सभी इस बात को सुन कर सच को स्वीकार कर रहे थे। लकड़दादा ने उस युवक को अपने साथ अपने घर ले जाने की बहुत मिन्नतें की, लेकिन युवक ने कहा कि हम यहीं ठीक हैं और खुश हैं।

शिरड़ी छोटा सा गाँव था। घर-घर में चर्चा उस युवक की हो रही थी। पुराने मन्दिर में नीम के नीचे बैठा युवक कोई सिद्ध पुरुष है। कोई पहुँचा हुआ सन्त है। कोई चमत्कारी पुरुष है। सारे गाँव में यही चर्चा थी।

सभी उसको देखने मन्दिर की ओर आने लगे। जय-जयकार करने लगे। पर वह शान्त भाव से टूटे मन्दिर में शान्त भाव से लेटा था।

कुछ समय शिरड़ी में रहकर वह तरुण योगी किसी से कुछ कहे बिना वहाँ से चला गया और चाँद पाटिल को अतिथि सेवा करने का अवसर दिया। इसी दौरान चाँद पाटिल के बेटे का विवाह तय हो गया तो वह युवक भी विवाह में बाराती बना और बारात चली थी शिरड़ी गाँव। इस प्रकार कई वर्ष बाद चाँद पाटिल की बारात के साथ वह योगी पुनः शिरड़ी पहुँचा। बारात तो अपने ठिकाने चली गई लेकिन वह युवक बारात से बिछुड़ गया और खंडोबा के मंदिर में जा पहुँचा। उस समय मंदिर का पुजारी म्हालसापति था। उस तेजस्वी तरुण ने मंदिर में प्रवेश करते ही जोर से कहा, ''सबका मालिक एक।''

तभी मंदिर के पुजारी का ध्यान उसकी ओर गया, तो वह अचानक ही स्वागत करते हुए बोल पड़ा, ''आओ सांई।''

पुजारी उसे मंदिर में ही बनी कुटिया में ले गया और चटाई बिछा दी। उधर चाँद पाटिल के बेटे की शादी हो चुकी थी, बारात विदा होने के लिए तैयार थी, लेकिन चाँद पाटिल तो उस तेजस्वी तरुण को ही खोज रहा था। बारात भी घराती के यहाँ कब तक रहती आखिर विदा हो ही गई। जब बारात विदा होने लगी तो चाँद पाटिल ने अपने अन्य बारातियों से कहा, ''तुम जाओ, मुझे अभी यहाँ कुछ काम है।'' इतना कहकर वह उस तरुण को खोजने लगा, जिसे मंदिर के पुजारी ने सांई नाम दिया था। बारात अपने गाँव आ गई, लेकिन चाँद पाटिल वहीं रह गया और अंततः उन्होंने उस तरुण तेजस्वी को खोज ही लिया, ''चलिए सांई।'' उसने भी यही कहा था।

''चलना तो एक दिन सबको है, जो आता है उसे चलना पड़ता है।''

''मैं उस चलने की बात नहीं, मैं तो घर चलने की बात कर रहा हूँ।''

''घर किसका घर? मनुष्य का तो अपना यह शरीर भी नहीं होता। यह भी मिट्टी का बना हुआ है, एक दिन आत्मा इसे भी त्याग कर चली जाती है और मिट्टी का यह शरीर मिट्टी में मिल जाता है। यह शरीर तो फिर भी कुछ समय के लिए जीवित हो उठता है, लेकिन घर-हवेली तो

ईंट और गारे की होती है, वे तो पहले से ही मृत हैं। फिर कहाँ चलूँ।''

''यदि आप नहीं चलेंगे तो मैं भी नहीं चलूँगा।''

''ठीक बात है, जैसी आपकी इच्छा!''

तरुण संन्यासी का नाम सांई बाबा पड़ गया और सदा-सदा के लिए शिरड़ी में बस गये। वे कौन थे? उनका जन्म कहाँ हुआ था? उनके माता-पिता का नाम क्या था? ये सब प्रश्न अनुत्तरित ही हैं। बाबा ने अपना परिचय कभी दिया नहीं। अपने चमत्कारों से उनकी प्रसिद्धि चारों ओर फैल गई और वे कहलाने लगे शिरड़ी के सांई बाबा। वे कोई भी हों, लेकिन इस्लाम की ओर उनका झुकाव निर्विवादित तथ्य है।

6

चाँद पाटिल भी सांई बाबा के भक्त हो गए और नवाबी या यूँ कहें कि जागीरदारी अपने पुत्र के कंधों पर डाल दी। यहीं से लकड़दादा का प्रभाव बढ़ा और सच पूछिए तो असली जागीरदार अब लकड़दादा ही हो गए थे।

एक तरफ लकड़दादा का प्रभाव बढ़ता जा रहा था, तो दूसरी तरफ सांई बाबा भी प्रसिद्ध होते जा रहे थे। वे लोगों को यही शिक्षा और सन्देश देते थे कि जाति, धर्म, समुदाय, आदि व्यर्थ की बातों में ना पड़कर आपसी मतभेद भुलाकर आपस में प्रेम और सद्भावाना से रहना चाहिए, क्योंकि सबका मलिक एक है। श्रद्धा और सबूरी का महान मंत्र था। उन्होंने एक बार लकड़दादा से भी कहा था, ''श्रद्धा और विश्वास के साथ जीवन-यापन करते हुए सबूरी (सब्र) के साथ जीवन व्यतीत करो, क्योंकि मैं देख रहा हूँ कि तुमने भक्त चाँद पाटिल की जागीरदारी पर अपना अधिकार जमा लिया है।''

''ऐसी कोई बात नहीं सांई'' उन्होंने जवाब दिया था, ''जहाँ तक चाँद पाटिल का सवाल है ये तो आपके भक्त हो गए हैं, लेकिन मैं आज तक नहीं जान पाया कि आप हिन्दू हैं या मुसलमान।''

''हिन्दू या मुसलमान में क्या रखा है, सभी धर्मों का सम्मान करो, हमेशा मनवता को ही सबसे बड़ा धर्म और कर्म समझो।''

''यह कैसे संभव है?''

''क्यों संभव क्यों नहीं'' सांई बाबा ने कहा था, ''जाति, समाज, भेद-भाव आदि सब बातें अल्लाह ने नहीं बल्कि इंसानों द्वारा बनायी गयी हैं खुदा की नजर में न तो कोई उच्च है और न ही कोई निम्न इसलिए जो काम खुदा को भी पसंद नहीं है, वह मनुष्यों को तो करना ही नहीं चाहिए।''

''मतलब?''

''मेरे कहने का सीधा-सादा मतलब है कि जात-पाँत, धर्म, समाज आदि मिथ्या बातों में न पड़ कर आपस में प्रेमपूर्वक रहकर मनुष्य को जीवन व्यतीत करना चाहिए।''

''क्या शेर और गाय एक घाट पर पानी पी सकते हैं?''

''क्यों नहीं पी सकते? तुम अमीर और गरीब की ही बात कर रहे हो ना। मैं तो साफ-साफ कहता हूँ कि सभी के साथ ही समानता का व्यवहार करना चाहिए। गरीबों और लाचारों की यथासम्भव मदद करनी चाहिए और यही सबसे बड़ी पूजा है, यही पाँचों वक्त की नमाज है, क्योंकि जो गरीबों, लाचारों की मदद करता है, ईश्वर उसकी मदद करता है। माता-पिता, बुजुर्गों, गुरुजनों, बड़ों का सम्मान करना चाहिए।''

सांई बाबा हमेशा ही आडम्बरों से मुक्त रह कर यह बताते थे कि आडम्बरों में ही अहंकार की भावना निहित होती है। इसलिए अगर मुक्त होना चाहते हो सबसे पहले स्वयं को आडम्बरों से छुटकारा पाना होगा।

सांई बाबा जो हमेशा ही यही कोशिश करते रहे कि जनमानस के हृदयपटल में से समाज में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों का नाश हो और सभी प्रेम पूर्वक रह कर जीवन का आनंद ले, क्योंकि हमारे भारतवर्ष में कितने ही धर्म जाति के लोग व उनके समुदाय बसे हुए हैं। और सभी अपने-अपने धर्म को श्रेष्ठ बताते हुए आपस में मतभेद रखते हैं। और जिसके परिणाम सामाजिक अराजकता और दंगे के रूप में सामने आते हैं। इसीलिए बाबा ने हमेशा ही यह कह कर की 'सबका मालिक एक' गुरुमंत्र दिया है।[1]

1. सांई बाबा : जीवनी और भजनावली, मधु धामा, हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली पृष्ठ 56
सांई बाबा : एक सूफी फकीर, पृष्ठ 45

7

लकड़दादा का जीवन मस्ती से गुजरता गया। लकड़दादा में एक बुरी आदत थी और वह थी कि वे औरतें कपड़ों की तरह बदलते थे। यहाँ तक कि उन्होंने साठ साल की आयु में भी एक ऐसी युवती से जबर्दस्ती विवाह रचाया था, जिसके हिन्दू पिता लकड़दादा का कर्ज चुकाने में नाकामयाब रहे थे। लेकिन लव जिहाद की शिकार जब वह औरत पेट से थी, तो उन्हें तलाक़ दे दिया गया और लातूर की हवेली और कुछ धन उन्हें मिला, ताकि वह अपनी शेष जिंदगी आराम से गुजार सके, क्योंकि लकड़दादा उन्हें तलाक़ देने के बाद यह भी नहीं चाहते थे कि जो औरत उनके बच्चे की माँ बनने वाली है, वह तलाक़ के बाद किसी और से निकाह पढ़े।

खैर लकड़दादी ने 1902 में लातूर की हवेली में मेरे पड़दादा को जन्म दिया। पड़दादा का नाम नूर कासिम रिजवी रखा गया। पड़दादा में भी सारे लक्षण लकड़दादा के जैसे ही थे। वे भी बचपन से ही कम महत्वाकांक्षी नहीं थे। जिस तरह लकड़दादा शहंशाह बनने का स्वप्न देखा करते थे, ऐसा ही सपना पड़दादा ने भी एक दिन देखा था और इश्कबाजी एवं हिन्दू लड़कियों को सताने के मामले में भी वे नंबर वन थे।

8

सांई बाबा एक सूफी संत थे। ये हजरत ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती रहमतुल्ला अलैह की विचारधारा से प्रभावित थे। मोइनुद्दीन चिश्ती ने 12वीं शताब्दी में अजमेर में चिश्ती पंथ की शुरुआत की थी और दिल्ली से अजमेर की यात्रा के दौरान इन्होंने 1200 हिन्दुओं को मुसलमान बनाया था। ये संत हमेशा खुदा से अपने भक्तों को दुःख दर्द दूर करके उनके जीवन को खुशियों से भरने की दुआ माँगते थे। भारत तो अंधविश्वासियों का ही देश रहा है, फिर भारतीय ऐसे हजरतों के बहकाए में भला कैसे न आएँगे! दुःख-दर्द मिटाने के नाम पर अपने पंथ का प्रचार करना इनका उद्देश्य होता है, यही काम सांई बाबा का भी था। उन्होंने भी न जाने कितने वेद धर्म के मानने वालों को अपना शिष्य बनाकर उन्हें उनके मूल

धर्म से हमेशा के लिए वंचित कर दिया। एक-दो चमत्कार भी ये लोग दिखा देते हैं, लेकिन उसके पीछे अवश्य ही कोई न कोई वैज्ञानिक कारण रहता होगा, ऐसा मेरा मानना है। खैर! सांई बाबा ने एक हिंदू द्वारा बनवाई गई धर्मशाला को मसजिद मानकर उसे अपना ठिकाना बनाया और उसको नाम दिया द्वारकामाई।

सांई बाबा के निर्वाण के कुछ समय पूर्व एक विशेष शकुन हुआ, जो उनके महासमाधि लेने की पूर्व सूचना थी। सांई बाबा के पास 786 अंकों से अंकित एक ईंट थी, जिसे वे हमेशा अपने साथ रखते थे। बाबा उस पर हाथ टिकाकर बैठते थे और रात में सोते समय उस ईंट को तकिये की तरह अपने सिर के नीचे रखते थे। सन् 1918 ई. के सितंबर माह में दशहरे से कुछ दिन पूर्व मसजिद की सफाई करते समय एक भक्त के हाथ से गिरकर वह ईंट टूट गई। द्वारकामाई में उपस्थित भक्तगण स्तब्ध रह गए। सांई बाबा ने भिक्षा से लौटकर जब उस टूटी हुई ईंट को देखा तो वे मुस्कुराकर बोले, ''यह ईंट मेरी जीवनसंगिनी थी। अब यह टूट गई है तो समझ लो कि मेरा समय भी पूरा हो गया।'' बाबा तब से अपनी महासमाधि की तैयारी करने लगे।

नागपुर के प्रसिद्ध धनी बाबू साहिब बूटी सांई बाबा के बड़े भक्त थे। उनके मन में बाबा के आराम से निवास करने हेतु शिरड़ी में एक अच्छा भवन बनाने की इच्छा उत्पन्न हुई। बाबा ने बूटी साहिब को एक आस्था स्थली सहित वाड़ा बनाने का आदेश दिया, तो उन्होंने तत्काल उसे बनवाना शुरू कर दिया। मंदिर में द्वारकाधीश श्रीकृष्ण की प्रतिमा स्थापित करने की योजना थी। लेकिन बाबा श्रीकृष्ण को हिन्दुओं का देवता मानते थे। इसलिए एक सूफी संत कितना ही उदार क्यों न हो, यह कतई सहन नहीं कर सकता था कि श्रीकृष्ण का एक और मंदिर बनाया जाए, इसलिए 15 अक्टूबर सन् 1918 ई. को विजयादशमी महापर्व के दिन जब बाबा ने सीमोल्लंघन करने की घोषणा की, तब भी लोग समझ नहीं पाए कि वे अपने महाप्रयाण का संकेत कर रहे हैं। महासमाधि के पूर्व सांई बाबा ने अपनी अनन्य भक्त श्रीमती लक्ष्मीबाई शिंदे को आशीर्वाद के साथ 9 सिक्के देने के पश्चात् कहा, ''मुझे मसजिद में अब अच्छा नहीं लगता है, इसलिए

तुम लोग मुझे बूटी के पत्थर वाड़े में ले चलो, जहाँ मैं आगे सुखपूर्वक रहूंगा।''

''यहाँ क्या हुआ बाबा।'' अनन्य भक्त शामा ने पूछ ही लिया था।

''मैं द्वारकामाई और चावड़ी में रहते-रहते उकता गया हूँ। मैं बूटी के वाड़े में जाऊँगा जहाँ ऊँचे लोग मेरी देखभाल करेंगे।'' विक्रम संवत् 1975 की विजयादशमी के दिन अपराह्न 2.30 बजे सांई बाबा ने महासमाधि ले ली और तब बूटी साहिब द्वारा बनवाया गया वाड़ा (भवन) बन गया उनकी पावन दरगाह। मुरलीधर श्रीकृष्ण के विग्रह की जगह कालांतर में सांई बाबा की मूर्ति स्थापित हुई। पड़दादा की आस्था सांई बाबा में नहीं थी, क्योंकि वे कट्टर मुस्लिम नहीं थे और यही कारण है कि हमारा परिवार फिर कभी उस सांई के दरबार में नहीं गया, जिस सांई की कृपया से हमारे परिवार का उत्थान हुआ, क्योंकि यदि चाँद पाटिल वैरागी नहीं बनते तो लकड़दादा चाँद के पुत्र पर हावी नहीं होते और निज़ाम की निगाह में अपनी जगह ऊँची कभी नहीं बना पाते।

9

पक्के लव जिहादी मेरे पड़दादा ने कुल मिलाकर सात निकाह पढ़े और सातों बेगम ही हिन्दू परिवार से थी। निजाम सरकार उस्मान अली के काफी वफादार बन गए थे। इसलिए चाँद पाटिल के परिवार की सेवादारी या यूँ कहें कि लगान वसूल कर निजाम के खजाने में जमा करने की अपेक्षा अब वे सीधे उन लोगों के मुखिया बन बैठे थे, जो खुद निजाम के लिए लगान वसूला करते थे। पड़दादा की तीसरी बेगम शहनाज (शाहकौर) थी, जिससे मेरे दादा ने जन्म लिया। कम उम्र में ही उन्होंने भी हिन्दू युवतियों से कई निकाह पढ़ डाले थे। लेकिन एक दुखद घटना घटी, लकड़दादा की तरह पड़दादा ने भी एक निकाह साठ साल की उम्र में पढ़ा था। वह बुजुर्ग आदमी थे और पड़दादी जवान। कहते हैं कि वह नौजवान पड़दादी अपने सौतेले पुत्र यानी कि मेरे दादा के काफ़ी करीब हो गयी थी और यह नजदीकी ही पड़दादा को अच्छी नहीं लगी। उन्होंने दादा को न केवल घर से बेघर किया, वरन अपनी जायदाद से भी बेदखल कर दिया।

10

राजा, अग्नि, गुरु और स्त्री : इनका सेवन मध्य अवस्था से करना चाहिए, क्योंकि ये अत्यंत समीप होने पर विनाश का कारण बन जाते हैं और दूर रहने पर फल नहीं देते। यह बात उस दृष्टांत से सिद्ध होती है, जिसे मैं अब आपको सुनाने जा रही हूँ : बहुत खूबसूरत थी मेरी पड़दादी। इतनी खूबसूरत की परदानशीं होने के बावजूद भी लोगों में चर्चा का विषय बनी रहती थी। सुंदरता की इतनी अति थी कि जो ठीक नहीं कही जा सकती। अत्यधिक सुंदरता के कारण ही तो रावण ने सीता का अपहरण किया था। कहते हैं कि उनके पति तो भगवान थे, फिर भी एक कामुक राक्षस सीता का हरण करके ले गया था, फिर मेरी पड़दादी नूरजहाँ के शौहर यानी कि मेरे पड़दादा नूर कासिम तो कोई फरिश्ते या ईशदूत नहीं थे। इसलिए जाहिर था मेरी पड़दादी पर बुरी नियत रखने वालों की कमी नहीं थी। सौतेले बेटे का खिताब रखने वाले मेरे दादा पड़दादी पर बुरी नजर रखते थे या नहीं, यह तो मुझे नहीं पता, हाँ इतना अवश्य पता है कि उन पर सबसे अधिक बुरी नियत तो निज़ाम सरकार ही रखते थे।

निज़ाम सरकार भी रावण जैसे ही कामुक और पक्के लव जिहादी थे। इतने कामुक कि अश्लील फोटों का एक बड़ा संग्रह तक उन्होंने जमा कर रखा था। इन तस्वीरों को जमा करने के लिए बूढ़े निज़ाम सरकार ने अपने मेहमानखाने की दीवारों और छतों में खुफिया कैमरे लगवा रखे थे, जो उन कमरों में होने वाली एक-एक हरकत की तस्वीरे खींचते रहते थे। महल के मेहमानखाने के बाथरूम में आईने के पीछे भी एक कैमरा लगवा रखा था।[1] यह कैमरा हिन्दुस्तान की बड़ी से बड़ी हस्तियों की तस्वीरें निज़ाम

1. Dominique Lapierre & Larry Collins us 'Freedom at Midnight' में लिखा है : The Nizam of Hyderabad combined his passions for photography & pornography to amass what was believed to be the most extensive collection of pornographic photographs in India. To assemble it, the ageing Nizam had disguised in the walls and ceilings of his guests' quarters automatic cameras that faithfully recorded all that went on in them. He had even installed a camera behind the mirror in his palace's guest bathroom. The cemera's harvest, a portrait gallery of the great and near-great of india relieving themselves on the Nizam's toilet, had pride of place in his collection.

- 'Freedom at Midnight' , page 191

सरकार के शौचालय में निवृत्त होने की मुद्रा में लेता रहता था। पक्के लव जिहादी निजाम हैदराबाद के विषय में आज भी अनेक कहानियाँ सुनी जा सकती हैं। इसी संदर्भ में हैदराबाद ऐसा नगरद्वय है, जिसका सबसे पहला नाम भागमती के नाम पर भागनगर रखा गया और बाद में भाग्यलक्ष्मी के नाम पर भाग्यनगर। गोलकोंडा के पाँचवें कुतुबशाही मोहम्मद कुली (शा. 1580-1612) ने भागमती नामक हिन्दू कन्या से लव जिहाद की नीति पर चलते हुए पाणिग्रहण किया था और उनके नाम पर इस क्षेत्र का नाम भागनगर रख दिया था। जर्मन विद्वान जान पीपर तक ने इस बात का उल्लेख किया है। 'भाग्यनगर दर्पण' नामक पुस्तक में भाग्यलक्ष्मी के विषय में पढ़ने को मिल सकता है। छठवें निज़ाम महबूब अली खान ने भाग्यलक्ष्मी के नाम पर हैदराबाद का नाम भाग्यनगर कर दिया था। महबूब अली खान की लव जिहाद ही कथा 'भाग्यनगर का कैदी' में बड़े रोचक ढंग से लिखी गई है, चलो अपनी कहानी आगे बढ़ाने से पहले लव जिहाद की यह कथा भी पढ़ जाए :

'भाग्यलक्ष्मी! नेनु नीकु चाला प्रेमचेस्ता।''[1] उस युवक ने बड़ी ही आशा भरी दृष्टि से पूछा।

''निजम ने राजा!'' भाग्यलक्ष्मी ने कहा, ''अय्यो रामा! नाकू चाला सिग्गू ओस्तुनई।''[2]

''हाय, इतनी शरम!''

''और बेरशरम हो जाऊँ क्या?'' भाग्यलक्ष्मी ने कहा, ''लड़की विवाह से पहले ही तो शरमाती और उसके बाद तो...।''

''वर जीवनभर पछताता है,'' युवक ने कहा, ''लेकिन मैं ऐसा लड़का नहीं कि विवाह के बाद जीवनभर पछताऊँ!''

''तुम कोई निज़ाम हो क्या?''

''और नहीं तो क्या?'' उस युवक ने कहा, ''मैं निज़ाम ही तो हूं।''

''क्या?'' भाग्यलक्ष्मी की आँखें आश्चर्य से फटी-की-फटी रह गई, ''नुव्वु निजम चेपतुन्नावा?''[3]

1. तेलुगू संवाद का अर्थ है : भाग्यलक्ष्मी क्या तुम मुझे बहुत प्रेम करती हो।
2. हे भगवान! शरम के मारे मैं मर जाऊं।
3. क्या तुम सच कहते हो।

''खुदा कसम!''

''खुदा कसम?'' भाग्यलक्ष्मी ने कहा, ''अर्थात् तुम म्लेच्छ हो, तुमने मुझसे प्रेम करके मेरा धर्म भ्रष्ट किया?''

''एक शहंशाह ने तुमसे प्रेम किया और तुम कहती हो कि तुम्हारा धर्म भ्रष्ट हो गया,'' उस युवक ने कहा, ''तुम्हें तो गर्व होना चाहिए कि तुम्हें उसने चाहा है, जिसको पाने के लिए हैदराबाद रियासत की लाखों हसीनाएँ दिन में भी सपने देखा करती हैं।''

''देखा करती होंगी, लेकिन मैं उनमें से नहीं हूँ। मैं एक आर्य कन्या हूं और आर्य कन्या अपने शरीर, मन और प्रेम से ज्यादा धर्म को महत्व देती है।''

''ओह! समझा। लेकिन मेरी प्रियतमा प्रेम के आगे धर्म को महत्व नहीं दिया जाना चाहिए, क्योंकि जहाँ प्रेम है, धर्म की कल्पना भी वहीं संभव है।''

''धर्म कोई कल्पना नहीं, वह तो शाश्वत सत्य है।''

''तो क्या तुम मुझसे निकाह नहीं पढ़ोगी?''

''निकाह और तुमसे?,'' भाग्यलक्ष्मी ने कहा, ''यदि तुम हिन्दू होते तो तुमसे विवाह अवश्य कर लेती, लेकिन अब संभव नहीं।'' फिर उसने क्रोध में कहा, ''तुमने मुझसे धोखा किया है।''

''कैसा धोखा?''

''तुमने अपना धर्म छिपाकर मेरे साथ विश्वासघात किया है।''

''भाग्यलक्ष्मी, प्रेम करने वालों का कोई धर्म नहीं होता, प्रेम तो अपने आप में एक धर्म है।''

''अपनी दार्शनिकता अपने पास रखो और आइंदा मुझसे मिलने की कोशिश नहीं करना।''

''मगर भाग्यलक्ष्मी, मैं तुम्हारे बिना जिंदा नहीं रह सकता।''

''अच्छा ही होगा!''

''क्या धर्म को तुम प्रेम से बढ़कर समझती हो?''

''हाँ, धर्म के आगे मेरे लिए प्रेम कुछ नहीं, प्रेम तो मिट्टी की इस काया से किया जाता है। यह काया तो नश्वर है, लेकिन धर्म तो मेरी

आत्मा में जन्म-जन्मांतर के संस्कारों से पोषित है, इसलिए इसे त्यागा नहीं जा सकता।''

''एक बात कहूँ भाग्यलक्ष्मी?''

''मैं तुमसे अब कोई बात नहीं करना चाहती।''

''लेकिन मेरी बात सुनो तो,'' उसने फिर कहा, ''यदि मैं हिन्दू धर्म अपना लूँ, तो क्या तुम मुझसे तब विवाह कर लोगी।''

''किसी मुसलमान को हिन्दू नहीं बनाया जा सकता।''

''क्यों नहीं बनाया जा सकता,'' उसने पूछा, ''जब हिन्दू को मुसलमान बनाया जा सकता है, तो मुस्लिम को हिन्दू क्यों नहीं बनाया जा सकता?''

''इसका जवाब मेरे पास नहीं है?''

''तो किसके पास है?''

''काशी के पंडितों के पास।''

''ठीक है तो मैं काशी के पंडितों के पास जाकर ही पूछूँगा कि मैं मुसलमान से हिन्दू कैसे बन सकता हूँ।''

''जाओ पूछो और यदि उन्होंने तुम्हें हिन्दू बना दिया, तो मैं तुमसे विवाह अवश्य कर लूंगी।''

भाग्यलक्ष्मी का यह प्रेमी हैदराबाद रियासत का छह वाँ निज़ाम था। हैदराबाद राज्य की बुनियाद मीर कमरूद्दीन अली खाँ ने डाली थी, जो मुगल बादशाह के दिए खिताब आसफजाह के नाम से मशहूर थे। उनके वालिद ग़ाजीउद्दीन खाँ औरंगजेब की फौज में सिपहसालार थे। वे अपने को पैग़म्बर हजरत मुहम्मद के ससुर ख़लीफा अबू बकर के ख़ानदान का बतलाते थे। मुगल बादशाह औरंगजेब की वर्षों तक सेवा करके, युद्ध और राजनीतिक कुशलता में समान रूप से नाम और यश कमाने के बाद, सन् 1713 में आसफजाह को दक्खिणी इलाके का सूबेदार तैनात किया गया। उनको निजाम-उल-मुल्क का खिताब दिया गया, जो उनके वंश का परंपरागत खिताब बन गया।

मुगल सल्तनत का जब पतन का दौर शुरू हुआ तो आसफजाह ने अपने को स्वतंत्र घोषित कर दिया, इससे मुगल शहंशाह का खून खौल

उठा और उन्होंने उसका दमन करने के लिए खानदेश के सूबेदार मुबारिज खाँ को पोशीदा तौर पर हुक्म जारी किया कि नवाब आसफजाह को फौजी ताकत से दबाया जाए। बरार के बुलडाना जिले में शाकरखेल्डा के मैदान में सन् 1724 में भयंकर लड़ाई हुई, जिसमें मुबारिज खाँ मारा गया, इस प्रकार आसफ़जाह जंग जीतकर एक स्वतंत्र शासक बन गया और उसने बरार को सल्तनत में मिला लिया तथा हैदराबाद को राजधानी बनाया। निज़ाम की राज्य-सीमा में एक बहुत दूर तक फैला हुआ पठार था, जिसकी औसत ऊँचाई समुद्र-तल से 1250 फीट है, उस पठार के बीच-बीच में पहाड़ियाँ हैं, जो 2500 फीट से लेकर 3500 फीट तक ऊँची हैं। तत्कालीन राज्य का कुल 80,000 वर्ग मील का क्षेत्रफल, इंग्लैंड और स्कॉटलैंड के सम्मिलित क्षेत्रफल से भी अधिक था। इस प्रकार मुगलों का हाकिम एक विशाल भू-भाग का भाग्य निर्माता बन गया। निजाम का अर्थ हैहाकिम, जो मुगलों के जमाने में हैदराबाद का सूबेदार हुआ करता था। मुगल साम्राज्य के खात्मे के बाद, निजाम ने, जो स्वतन्त्र हो चुके थे, ईस्ट इण्डिया कम्पनी से सुलह कर ली। बाद में जब भारत में ब्रिटिश सत्ता स्थापित हो गई, तब देश के अन्य राजा-महाराजाओं की तरह निजाम भी ग्रेट ब्रिटेन के सम्राट् के अधीन हो गए। हैदराबाद का छह वाँ निज़ाम एक हिन्दू युवती भाग्यलक्ष्मी से बेहद प्रेम करता था। वह उससे प्रतिदिन अवश्य मिलता था। वर्षा के दिनों में अपनी प्रेमिका से मिलने के लिए उसने बाढ़ के जल से लबालब मूसी नदी को न जाने तैर कर कितनी बार पार किया था। प्रेमिका के लिए अपनी जान को खतरे में डालने वाला निज़ाम भाग्यलक्ष्मी को हर कीमत पर अपनी बेगम बनाना चाहता था, पर भाग्यलक्ष्मी को जब पता चला कि उसका प्रेमी हिन्दू नहीं मुसलमान है, तो उसका प्रेम घृणा में बदल गया। परंतु फिर भी उसने कह दिया कि यदि काशी के पंडितों ने निज़ाम को हिन्दू बना दिया तो वह उससे विवाह अवश्य कर लेगी।

निज़ाम ने काशी के सबसे बड़े पंडित आत्माराम से अपने को शुद्ध करके हिन्दू बनाने की याचना की, ''बिरहमन देव, मैं हिन्दू बनना चाहता हूं।''

''मगर आप तो मुसलमान हैं।''

''जी हाँ।''

''आप हिन्दू क्यों बनना चाहते हैं?''

''दरअसल, मैं एक हिन्दू युवती से विवाह करना चाहता हूँ। उसकी शर्त है कि वह मुझसे विवाह तभी कर सकती है, जब मैं हिन्दू बन जाऊँ।''

''क्या तुम जीवन भर हिन्दू ही रहोगे?''

''अरे पंडित यह तो बस शादी के लिए प्रमाण पत्र चाहिए, बाद में तो निकाह पढ़ ही लूँगा और कल्मा पढ़कर फिर पुनः मुसलमान हो जाऊँगा, क्योंकि सच्चा मजहब तो इस्लाम ही है।''

''फिर तो इस तरह कोई भी तुम्हें हिन्दू होने का मिथ्या प्रमाण पत्र नहीं दे सकता।''

''बताइए कितना धन लोगे?''

''धर्म को धन से नहीं खरीदा सकता।''

''तो फिर?''

''ठीक है तुम्हारी समझ में ऐसे नहीं आएगा, एक गधा ले आओ।''

निज़ाम कहीं से एक गधा ले आया। पंडित निज़ाम व गधे को लेकर गंगा तट पर पहुँचा। वहाँ जाकर उसने निज़ाम को आज्ञा दी, ''गधे को लेकर गंगा में स्नान कराओ और स्वयं भी करो।''

''जो आज्ञा बिरहमन।''

निज़ाम गधे को गंगा जी में स्नान कराने लगा तथा स्वयं भी स्नान करने लगा। जब बहुत देर हो गई तो उसने पूछा, ''बिरहमन देव, क्या मेरे शुद्धीकरण की प्रक्रिया समाप्त हो गई।''

''नहीं?''

''कितना समय लगेगा?''

''जब तक गधा स्नान करते-करते बैल नहीं बन जाता, तब तक तुम्हारा शुद्धीकरण नहीं हो सकता!''

''देव, क्या गधा गंगा जी में नहाने से बैल बन जाएगा?''

''क्यों नहीं बन सकता?''

''यह तो असंभव है?''

''मूर्ख म्लेच्छ, जब गंगा में नहाने से गधा बैल नहीं बन सकता, तो एक मुसलमान गंगा में नहाने से हिन्दू कैसे बन सकता है?''

''तो क्या मेरा शुद्धि संस्कार संभव नहीं।''

''नहीं कदाचित नहीं।''

और इस प्रकार काशी के पंडितों से निराश होकर निज़ाम वापस हैदराबाद लौट आया।

जब भाग्यलक्ष्मी को पता चला कि निज़ाम को काशी के पंडितों ने हिन्दू बनाने से इंकार कर दिया और व्यवस्था दी है कि कोई भी मुसलमान हिन्दू नहीं बन सकता, तो उसने निज़ाम से न केवल विवाह करने से इंकार कर दिया, बल्कि उससे मिलने से भी मना कर दिया। जब यह बात भाग्यलक्ष्मी के घरवालों को पता चली तो उन्होंने यह सोचकर कि कहीं निज़ाम उनकी बेटी का अपहरण न कर ले, जल्दबाजी में एक मारवाड़ी युवक व्योमेश से उसका विवाह कर दिया। जब निज़ाम को भाग्यलक्ष्मी के विवाह का समाचार मिला तो वह बहुत दुःखी हुआ, लेकिन उसने विवाह में अमूल्य उपहार अपनी ओर से भेजे। निज़ाम अत्यंत दुःखित रहने लगा। निज़ाम ने उसे भुलाने की भरसक कोशिश की, लेकिन वह उसे भुला नहीं पाया। उसने अपनी राजधानी हैदराबाद का नाम भाग्यनगर कर दिया, ताकि इसी नाम के सहारे उसका गम थोड़ा कम हो सके, लेकिन कुछ न हुआ, उल्टा मुसलमानों के भारी विरोध का सामना करना पड़ा। निज़ाम के सलाहकारों ने एक के बाद एक कई हिन्दू युवतियों से निज़ाम की शादी करवाई, लेकिन वह तो अपना दिल भाग्यलक्ष्मी को दे चुके थे।

भाग्यलक्ष्मी के वियोग में निज़ाम बड़ा ही उदार व्यक्ति बन गया था। उन्होंने अपनी रियासत को हमेशा खुशहाल रखा। वे रियाया की हालत सुधारने और उसका जीवन सुखी बनाने के लिए शासन में नए सुधार लाने की कोशिश करता था।

कालांतर में चिहम पुत्री भाग्यलक्ष्मी ने एक पुत्र को जन्म दिया, जिसका नाम उमेश रखा गया। उधर, निज़ाम के भी कई निकाह हो चुके थे और वह भी अब तक दो बच्चों का पिता बन चुका था। निज़ाम के दोनों शहजादों का नाम सलावत जाह और बसावत जाह रखा गया था।

भरी-पूरी गृहस्थी होने के बाद भी निज़ाम भाग्यलक्ष्मी को भुला नहीं पाया था। इसलिए उसने एक दिन अपने प्रधानमंत्री को आदेश दिया, ''हम भाग्यलक्ष्मी को भुला नहीं सकते, क्या ऐसा कोई रास्ता नहीं जिससे हमें भाग्यलक्ष्मी मिल जाए?''

''है क्यों नहीं हिज हाइनेस!''

''क्या है ऐसा रास्ता?''

''आप तो भाग्यनगर के शहंशाह हैं, भाग्य-विधाता हैं। भाग्यनगर की हर वस्तु, हर संपत्ति और हर नागरिक पर आपका अधिकार है।''

''हाँ, तुम सही कहते हो, अपनी रियाया पर हमारा पूरा अधिकार है।''

''तो फिर देर किस बात की है, व्योमेश पर दबाव डालें कि वह भाग्यलक्ष्मी को तलाक दे दें और फिर आप उससे निकाह पढ़ लें।''

''आपने वजा फरमाया।''

और फिर व्योमेश पर भाग्यलक्ष्मी को तलाक दिलवाने के लिए दबाव कैसे डलवाया जाए? वे इसकी योजना बनाने लगे।

और एक दिन की बात है।

''राजा प्रजा की इज्जत-आबरू का रक्षक होता है,'' आँखों से शोले भड़काते हुए व्योमेश ने निज़ाम के प्रधानमंत्री से पूछा, ''यदि भक्षक नहीं, फिर निज़ाम ने ऐसा आदेश क्यों दिया?''

''भाग्यलक्ष्मी के वियोग में उनकी देह सूखकर काँटा हो गई है और उन्होंने चारपायी पकड़ ली है,'' प्रधानमंत्री ने सहज होकर कहा, ''यह निर्णय निज़ाम का नहीं, मंत्रिमंडल का है कि आपको भाग्यलक्ष्मी को तलाक देना होगा और उसके बाद निज़ाम उनसे निकाह पढ़कर उन्हें अपनी बेगम बनाएँगे।''

''यह असंभव है, हिन्दू धर्म में धर्मपत्नी को अर्धांग्नी कहा जाता है और हमारे यहाँ विवाह विच्छेद का प्रावधान नहीं है, बल्कि पति मर जाए तो उसके साथ सती होने की व्यवस्था अवश्य है।''

''सती स्त्री के साथ ही तो सात जन्मों तक साथ का प्रावधान है,'' फिर कुछ रुककर उन्होंने कहा, ''परंतु भाग्यलक्ष्मी आपसे विवाह से पहले

निज़ाम को प्रेम करती थी और उमेश आपका नहीं बल्कि हिज हाइनेस का खून...।''

''क्या?'' व्योमेश का खून खौल उठा, ''म्लेच्छ तुम्हारी इतनी हिम्मत कि मेरी पत्नी के चरित्र पर लाँछन लगाते हो?''

''लाँछन नहीं यह सच्चाई है, खुद भाग्यलक्ष्मी से पूछ लो।''

व्योमेश खामोश हो गया, फिर थोड़ा सहज होकर बोला, ''विवाह से पहले भाग्यलक्ष्मी का चरित्र कैसा भी रहा हो, लेकिन मेरे साथ सात फेरे लेकर वह मेरी धर्मपत्नी बन गई है, इसलिए इज्जत के साथ उसके संग जीवन निर्वाह करना अब मेरा धर्म है।''

''नहीं, तुम भाग्यलक्ष्मी के साथ आगे जीवन निर्वाह नहीं कर सकते, तुम्हें उसे तलाक देना ही होगा!''

''लेकिन हिन्दू धर्म में तलाक देने की व्यवस्था नहीं है।''

''तो फिर इस्लामी व्यवस्था के अनुसार तलाक दे दो।''

''वाह! विवाह हिन्दू पद्धति से किया और तलाक मुस्लिम पद्धति से देकर अपने शरीर के आधे अंग को काटकर फेंक दूँ। क्या आधा शरीर काटकर कोई जीवित रह सकता है?''

''अब तक हमने शराफत से काम लिया,'' प्रधानमंत्री गरम हो गए, ''आप जानते ही हैं कि हमने न जाने अब तक कितनी हिन्दू युवतियों को उठाकर हरम में पहुँचाया है। बड़े निज़ाम की तीन हजार बेगमें थीं और उनमें से ढाई हजार हिन्दू युवतियाँ थीं, जिनका अपहरण करने के बाद उनसे निकाह पढ़ाया गया था।''

''तो आपका इशारा...।''

''हाँ हमें शक्ति का इस्तेमाल करना होगा।''

''ठीक है, मुझे कल तक सोच-विचार का समय चाहिए।''

''कल तक सोच-विचार का समय नहीं, भाग्यलक्ष्मी को तलाक का वक्त देते हैं,'' और फिर प्रधानमंत्री ने भाग्यलक्ष्मी के पुत्र उमेश को, जो वहीं खड़ा था, सिपाहियों को उसे हिरासत में लेने का संकेत किया और व्योमेश को कहा, ''जब तक तुम भाग्यलक्ष्मी को तलाक नहीं दे देते, तब तक उमेश हमारी देखरेख में रहेगा।''

"इतना जुल्म न कीजिए।" वह गिड़गिड़ाया।

और निज़ाम की पलटन व्योमेश के घर से चली गई। थोड़ी ही देर में यह बात सारे हैदराबाद में फैल गई। बदनामी के भय और धर्म की रक्षा के लिए व्योमेश और भाग्यलक्ष्मी ने परिवार के अन्य सदस्यों के साथ आत्महत्या कर ली। लेकिन बालक उमेश बच गया था, क्योंकि निज़ाम के आदेश से उसे प्रधानमंत्री अपने साथ लेकर राजमहल में चला आया था।

और फिर एक तरफ तो भाग्यलक्ष्मी की श्मशान यात्रा निकली और दूसरी तरफ ईद के मौके पर निज़ाम की शोभायात्रा। दोनों यात्राओं में कितना अंतर था।

भाग्यलक्ष्मी का लड़का शक्ल-सूरत में मारवाड़ी व्योमेश से ही मिलता-जुलता था। परंतु वह लड़का महल में लाया गया और उसे निजाम का बेटा करार दिया गया। उसका नाम उमेश से उस्मान रख दिया गया। उमेश उस समय इतना छोटा था कि वह ज्यों-ज्यों बड़ा होता गया, निज़ाम को ही अपना बाप समझने लगा। लेकिन ज्यों-ज्यों वह लड़का बड़ा होता गया, त्यों-त्यों उसकी चाल-ढाल और सूरत मारवाड़ी व्योमेश से मिलती गई। वैसी ही, पैसा जोड़ने की आदत उसमें आती गई।[1]

उस्मान की मारवाड़ी जैसी आदतें सुधारने में नाकामयाब होने पर निजाम ने भारत सरकार को शिकायत लिखी, "उस्मान उनका नहीं है, बल्कि उनके दोनों सगे बेटे, जो सलावत जाह और बसावत जाह हैं, उनकी कानूनन ब्याहता बीवियों से पैदा हैं, इसलिए वे दोनों ही तख्त के असली वारिस हैं।"

भारत सरकार की ओर से पत्र आया, "समय आने पर आपकी शिकायत पर गौर फरमाया जाएगा।"

1. दीवान जरमनी दास, जो 1895 में पंजाब में पैदा हुए और कपूरथला व पटियाला में मिनिस्टर रहे उन्होंने भी उस्मान अली को मारवाड़ी की संतान ही लिखा है। उन्होंने लिखा है : Besides his many queens, the father had a liaison with a women of ill repute who was the mistress of a Marwari banker. This women gave birth to a boy who resembled the Marwari. It was alleged by the collaterals that this boy was brought to the Palace and declared the son of the Nizam. As the boy grew up, he had the character and resmblance of the Marwari, and likewise his habits of hoarding money.

-Diwan Jarmani Dass, "Maharajas"
Orient Paperbacks, Delhi, 1971

सलावत जाह और बसावत जाह की शक्ल-सूरत व चाल-ढाल निजाम जैसी थी। उस्मान अली, जो बचपन से ही चालाक था, इस तजवीज का पता पा गया और उसी दिन से दुआ माँगने लगा कि उसका यह नकली बाप मर जाए। अचानक निजाम बीमार पड़े और कुछ दिनों बाद मर गए, परन्तु वह लड़का जिसकी किस्मत में निजाम बनना लिखा था, उनकी बीमारी में उन्हें देखने तक न गया और मरते वक्त भी उनके करीब मौजूद न था। बल्कि वह दरबारियों को घूस देकर उन्हें अपने पक्ष में करने में व्यस्त था। रिश्वत के बल पर अंततः उस्मान ने सभी दरबारियों का विश्वास पा लिया और दरबारियों ने उसे ही गद्दी का असली वारिस स्वीकार किया। उस्मान ने ब्रिटिश अधिकारियों को भी भारी-भरकम रिश्वतें दी थी, इसलिए वह उनका भी वफ़ादार बन गया था।[1]

ब्रिटिश सरकार के वफादार दोस्त, लेफ्टीनेन्ट जनरल हिज एक्जाल्टेड हाईनेस आसफजाह, मुजफ्फर-उल-मुल्क, निजाम-उल-मुल्क, निज़ामुद्दौला सर मीर उस्मान अली खाँ बहादुर, फतेहजंग, जी. सी. एस. आई. जी. बी. ई, सन् 1911 में सातवें निज़ाम के रूप में हैदराबाद के तख्त पर रौनक-अफरोज हुए। जब उस्मान अली तख्त पर बैठे, तब फौरन ही उन्होंने शाही खानदान के सभी लोगों को महल से निकाल बाहर किया। उनमें से कुछ तो सड़कों पर भीख माँगते फिरने लगे। परंतु सलावत जाह और बसावत जाह ने हिम्मत नहीं हारी[2] और वे ब्रिटिश अधिकारियों की मदद से इंग्लैंड के शासक एडवर्ड सप्तम के समक्ष उपस्थित हुए और उनसे प्रत्यक्ष मिलकर अपील की, "शहंशाह-ए-जहाँ! हैदराबाद का राज्य हमको दिया जाए, क्योंकि निजाम के जायज बेटे हम ही हैं और उस्मान अली खाँ जबर्दस्ती तख्त पर काबिज है, जब कि वह हमारे पिता की संतान नहीं है।"

1. महाराजा, दीवान जरमनी दास, हिंद पाकेट बुक्स, नई दिल्ली, 2008, पृष्ठ 132

2. दीवान जरमनी दास लिखते हैं : When Osman Ali succeeded to the throne, he turned out of the palace all members of the royal family and some of them actually became street beggars. Salabat Jah and Basabat Jah appealed to the British Government to restore to them the kingdom of Hyderabad saying that they were the legitimate sons of the Nizam and that Osman Ali was a usurper and not the son of the Nizam.

-"Maharajas", page 189

"आप कैसे कह सकते हैं, उस्मान आपके पिता की न तो संतान हैं और न ही आपका भाई है?"

"उसे तो महल में कैद करके लाया गया था! वह हैदराबाद की रिसासत का वारिस नहीं बल्कि कैदी है।" [1]

"हैदराबाद का वारिस नहीं कैदी है उस्मान, उसे कैद करके महल में लाया गया," एडवर्ड थोड़ा मुस्कराया, "बरखुरदारों, किसी मुजरिम को कैद करके कारागार में ले जाया जाता है, महल में नहीं।"

दोनों शहजादे आगे कुछ सफाई नहीं दे पाये। शहजादे तो चले गए, लेकिन एडवर्ड कुछ सोच-विचार में पड़ गया और उसने गुप्तचर विभाग से सच्चाई की तह तक जाने के लिए आदेश जारी कर दिए।

उस्मान अली की खुशकिस्मती और दोनों शहजादों की बदकिस्मती से, इंग्लैंड के बादशाह एडवर्ड सप्तम, जिसने मामले की पूरी रिपोर्ट तैयार करने के लिए अधिकारियों को आदेश दे दिया था और जो सलावत जाह और बसावत जाह को तख्त का असली वारिस मान कर उनके हक में फैसला देने वाले थे, वे अचानक ही मर गए। बादशाह के मरने से उस्मान अली को काफी मौका मिल गया और उन्होंने सोने की ईंटों व झिलमलाते जवाहरात की मदद से ऐसी तरकीबें लगाई कि उन भाईयों की अपील खारिज कर दी गई और वे हैदाबाद रियासत के जायज व एकछत्र शासक बन बैठे।

और यही एक छत्र शासक आज जो रक्त से हिन्दू था, वह हिन्दू लड़कियों को ही हवस का शिकार बनाने लगा था। मेरी पड़दादी इन्हीं निजाम उस्मान अली के महल में जाती रहती थी, क्योंकि मेरे पड़दादा हैदराबाद में एक पाक रसूल जैसी हैसियत रखते थे। इसका कारण था

---

1. [illegible]

'The Last Nizam' नामक अपनी पुस्तक में John Zubrzycki ने भी लिखा है कि सलावत जाह ही वास्तविक उत्तराधिकारी था। उन्होंने लिखा है कि In late August 1911, Rahat Begum was stalking Mahboob Ali Khan through the corridors of the Purani Haveli insisting that her son Salabat Jah should be the next Nizam on the grounds that she was his legal wife.
- 'The Last Nizam' , page 107

उनका जेहादी होना यानी कि काफिरों को पाक इस्लाम मजहब कबूल करवाना। इस काम के लिए पड़दादा ने हैदराबाद में सन् 1926 में मजलिस-ए-इत्तेहाद-उल-मुसलमीन नामक संगठन स्थापित किया गया था, जिसका उद्देश्य निज़ाम सरकार के समर्थन में मुसलमानों को संगठित करना और काफिर हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन करके पाक मुस्लिम हुकूमत में काफिर हिन्दू बहुमत को घटाना था। धीरे-धीरे यह संगठन बहुत शक्तिशाली हो गया तथा अंग्रेज़ों के चंगुल से मुक्त होकर स्वतंत्र मुस्लिम राज्य बनाने के स्वप्न देखने लगा। पड़दादा कासिम 1944 में इत्तेहाद के नेता बने थे। पड़दादा कासिम ने नाजी पद्धति पर शत्रुओं पर एकाएक आक्रमण करने वाला सैनिक दस्ता खड़ा किया था, जिसके सदस्य रज़ाकार कहलाते थे। इसकी सैनिक कवायद और परेड हैदराबाद में हरदिन होती थी। निज़ाम को पड़दादा कासिम से डर लगता था, क्योंकि पड़दादा कासिम रिज़वी निज़ामशाही का विस्तार दिल्ली के लाल किले तक करने का सपना देखा करते थे। खैर! अब हम अपनी असली बात पर ही आते हैं। पड़दादा कासिम और पड़दादी दोनों को यह तो पता था कि निज़ाम सरकार बहुत कामुक हैं, लेकिन अश्लील तस्वीर खींचने वाले कैमरों के बारे में उन्हें कतई मालूमात नहीं था। लेकिन अंग्रेज़ इस बारे में सबकुछ जानते थे, इसलिए निज़ाम सरकार की फाइल में सबसे ताजा रिपोर्ट रेजिडेंट की इन कोशिशों के बारे में थी कि निज़ाम सरकार के बेटे और वारिस का सेक्स जीवन ऐसा हो जो भावी निज़ाम को शोभा दे। पूरी सावधानी बरतते हुए रेजिडेंट साहब ने निज़ाम सरकार से बातों ही बातों में जिक्र किया, "हिज हाइनेस, मेरे कानों तक कुछ इस तरह की खबरें उड़ती-उड़ती पहुँची हैं कि नौजवान शहजादे मुकर्रम जाह के शौक के दायरे में शहजादियाँ नहीं आती हैं।"

"क्या बकते हो?" भड़क उठे थे निज़ाम सरकार।

"हम बक नहीं रहे ठीक कह रहे हैं।"

"ओह!" फिर उन्होंने एक नौकर से कहा, "शहजादे मुकर्रम को तुरंत हमारे सामने पेश किया जाए।"

पड़दादी भी उस दिन महल में गई थी। पड़दादी के साथ उस दिन

उनकी एक गुजराती सहेली की नाबालिग बेटी रुकमणि बेन भी थी। अचानक ही निज़ाम सरकार की नज़र रुकमणि बेन पर पड़ गई? तो उस शैतान निज़ाम ने फरमान जारी कर दिया, "इस लौंडी को पकड़कर ले आओ।"

पड़दादी ने रुकमणि बेन को बचाने की बहुत कोशिश की, लेकिन निज़ाम सरकार के सामने बेवश थीं। उसी समय निज़ाम सरकार का नालायक बेटा भी आ गया था।

रेजिडेंट साहब और मेरी पड़दादी के लाख मना करने पर भी निज़ाम सरकार उस्मान अली ने अपने बेटे को मजबूर किया, "शहजादे तुम अभी इसी समय फौरन सबके सामने इस बात को झूठ साबित करो कि तुम खानदान का सिलसिला आगे चलाने के लिए आमादा नहीं हो।"[1]

"मगर अब्बा हुजूर, इन सबके सामने....?"

"ओह! माफ करें यहाँ हमारे कई खास मेहमान भी हैं यदि उन्हें शर्म आती हो तो वे हमारी बेगम महल-ए-मुबारक के साथ अतिथिखाने में चले जाएँ। पड़दादी भी क्या करतीं, वे भी बेबस थीं, इसलिए महल-ए-मुबारक के साथ चली गई। और बेचारी रुकमणि बेन जो बाद में रुकैया बानो बन गई थी, उसको छोड़ गई अकेली, ताकि शैतान उसकी नथ तोड़ सके। रुकमणि बेन की अस्मत से खेलने के लिए शहजादे ने एक-एक करके सारे वस्त्र उतार दिए। रुकमणि बेन तो अभी नाबालिग थी, उसे तो मासिक धर्म भी शुरू नहीं हुआ था। कन्या से किशोरी नहीं बनी थी लेकिन आदम और हव्वा के उस शैतान वंशज ने उस नाबालिगा पर ऐसा कहर ढाया कि वह काम पर्दे के पीछे भी शोभा नहीं दे सकता था। क्षणभर में ही रुकमणि बेन की चीख महल में गूँज उठी थी। अक्षत योनि से खून की गंगा बह

1. The most recent report in the Nizam,s file dealt with the British Resident's efforts to make certain that the sexual proclivities of his son and heir were those befitting a future Nizam. As tactfully as he could, the worthy gentelman alluded to certain report reaching his ears which indicated the young prince's tastes did not encompass princesses. The Nizam summoned his son. Then he ordered into their presence a particularly attractive inmate of his harem. Over the embarrassed protest of the Resident, he instructed his son to give an immediate and public refutation of the dastardly insinuation that he might not be inclined to continue the family line.

- 'Freedom at Midnight' , page 192

चली थी। बेहोश होकर गिर पड़ी थी रुकमणि बेन। बाद में जब यह मामला तूल पकड़ गया तो निज़ाम सरकार ने शब्बीर हसन खाँ के साथ रुकैया बानो (रुकमणि बेन) का निकाह पढ़वा दिया।[1] शब्बीर भी नाबालिग था, लेकिन उसकी आवाज़ बड़ी सुरीली थी। निज़ाम सरकार के दरबार में कभी-कभी ग़ज़लें गाकर शब्बीर सबका दिल बहलाया करता था। आगे चलकर शब्बीर को निज़ाम ने इसका बहुत सुंदर पुरस्कार भी दिया था। 1925 में उन्हें उस्मानिया विश्वविद्यालय[2] हैदराबाद रियासत में अनुवाद की निगरानी का कार्य सौंपा गया था। 5 दिसंबर, 1898 मलीहाबाद में जन्में शब्बीर ने बाद में अपना नाम जोश मलीहाबादी रख लिया था। शब्बीर मलीहाबाद में जन्में थे, जो संयुक्त प्रांत, ब्रिटिश भारत का भाग था और वे सेंट पीटर्स कॉलेज आगरा में पढ़े। 1916 में अपने पिता बशीर अहमद खाँ की मृत्यु होने के कारण वे कॉलेज की आगे पढ़ाई जारी नहीं रख सके और अपनी माँ के साथ हैदराबाद चले गए थे। उसकी माँ हैदराबाद के रेडलाइट एरिया में धंधा करने वाली औरतों की दलाल थीं और जब भी कोठों पर कोई क्वारी कन्या अपहरण करके लाई जाती थी, तो इसकी खबर निज़ाम सरकार के पास भेजी जाती थी, वैसे तो निज़ाम सरकार 250 से अधिक औरतों का शौहर था, लेकिन उसे जब कोई कोठे पर आई क्वारी कन्या भा जाती थी, तो उसकी नथ तोड़ने में वह बड़ी बहादुरी समझता था। कोठों पर वह किसी सेठ साहूकार की गाड़ी भी उधार माँगकर ले जाता था और फिर किसी मासूम हिन्दू अबला की नथ तोड़ने के बाद यदि उसे वह भा जाती थी तो उसे अपने हरम में ले आता था और गाड़ी को अपने शाही गैराज में पहुँचा देता था।

अपहरण की गई हिन्दू लड़कियाँ जहाँ उसके हरम की शान बढ़ाती, वहीं लूटी गई गाड़ियाँ शाही गैराज की शान बढ़ाती थी और एक दफा गाड़िया शाही गैराज में दाखिल हुई तो फिर उसकी वापसी का सवाल ही नहीं उठता था। मोटर का मालिक हाथ मलता रह जाता था। इस तरह

1. जोश मलीहाबाद और सरदार पटेल, आलेख रहमान अली, स्वतंत्र वार्ता 2 नवंबर 2003
2. उस्मानिया विश्वविद्यालय सर अकबर हैदरी के सुझाव पर 1917 में स्थापित किया था। वास्तुकला की दृष्टि से उत्कृष्ट इसकी दीवारों की सज्जा फूलों की जाली से की गई है और उनके बीच में संगमरमर का महीन काम किया गया है।

निज़ाम ने 300-400 गाड़ियाँ अपने यहाँ इकट्ठी कर ली थी, हालाँकि ये इस्तेमाल नहीं आती थी और ठीक इसी तरह 250 विवाहिता औरतों के अलावा 400-500 हिन्दू लड़कियाँ और औरतें उसके महल में जमा हो गईं थीं, जो कभी अपने घर न जा सकीं और न उनकी कभी डोलियाँ उठीं। हिन्दू लड़कियों पर जितने अत्याचार निजाम सरकार के शासन में हुए उतने किसी काल में नहीं हुए, यहाँ तक कि उनके स्तनों और यौवनता पर भी कर लगा दिया गया था।[1] हिन्दू युवतियों के उरोजों पर कर लगाना निजाम सरकार का सबसे घृणित कार्य था।

11

इतिहास बड़ी तेजी के साथ करवट बदल रहा था। जब देश में आज़ादी का आंदोलन चला तो साहिब सिंह, जिसका जिक्र हम पीछे कर आए हैं, उनके प्रपौत्र लाल सिंह ने पश्चिम उत्तर प्रदेश में स्वदेशाभिमान की अलख जगाने में महत्वपूर्ण कार्य किया। लाल सिंह का जिक्र इसलिए किया गया कि क्योंकि इनके बड़े भाई चौधरी मेहूँ के पौत्र भी मेरी इस रचना के एक मुख्य पात्र हैं अर्थात् यह कथा कई पीढ़ियों का एक दस्तावेज है। उन्हें नील के नाम से संबोधित किया गया है, क्योंकि उनका एक नाम यह भी है। डूंगर चौधरी के पाँच पुत्रों में से एक थे लाल सिंह आर्य, जिनका जन्म खेकड़ा में 2 सितंबर 1903 को हुआ था। वे गांधी जी के आह्वान पर स्वतंत्रता की जंग में कूदे और कारागार की कठोर यातना तक उन्होंने झेली। अस्तु!

हैदराबाद, भोपाल और जूनागढ़ मुसलमानों की ऐसी रियासतें थी, जिनके शासक मानते थे कि जब तक धरती रहेगी, तब तक इन रियासतों में उनके खानदान का झंडा बुलंद रहेगा। लेकिन ऐसी सोच रखने वाले शासक यह भूल गए थे कि अल्ला ताला ने किसी भी शहंशाह को उम्र कम ही दी है। भारत को आज़ादी तो मिल गई थी, पर इस समय देश में

1. यह सत्य कहरनामा प्रख्यात अभिनेता नागार्जुन और श्वेता की एक तेलुगू फिल्म राजन्ना (हिन्दुस्तानी योद्धा : हिन्दी) में भी दर्शाया गया है, (निर्देशक केवीवी प्रसाद) जो 15 अगस्त 2011 में रीलिज हुई थी।

छोटी-बड़ी लगभग 562 रियासतें थीं, इसलिए आज़ादी अभी भी पूरी नहीं थी। उन्हें एक सूत्र में पिरोकर अखंड भारत का निर्माण करना कोई आसान काम नहीं था, लेकिन सरदार बल्लभ भाई ने अपनी युक्ति एवं दूरदर्शी दृष्टिकोण, जल्दी एवं साहसिक फ़ैसले लेने की क्षमता के चलते सभी रियासतों को भारत में मिला लिया। इस बात में संदेह का कोई स्थान नहीं है कि पटेल जी जैसे नेता के संकल्प एवं साहस के बिना विभिन्न राज्यों का एकीकरण इतनी सरलता से नहीं हो पाता। गांधी जी ने उनके बारे में कहा भी था, ''यह समस्या इतनी पेचीदी है कि उनके अलावा इसे कोई दूसरा नहीं सुलझा सकता था।'' भारत में फैले उस समय छोटे-छोटे राज्य महाराजाओं, नबावों या फिर निज़ामों द्वारा शासित थे। ब्रिटिश राज के दौरान उन्हें तंग नहीं किया जाता था, पर अंग्रेज़ उनके क्रिया-कलापों पर निगाह रखने के लिए अपना एक अधिकारी हर एक राज्य में भेज देते थे। हैदराबाद एवं कश्मीर तो उन राज्यों में से थे, जो इंग्लैंड जितने ही बड़े थे।

भारत में सम्मिलित होने वाले सबसे पहले राज्यों में ग्वालियर, बड़ौदा एवं बीकानेर थे। अगस्त के पहले सप्ताह में शामिल करने वाले दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर करने वाले महाराजाओं एवं नबावों की भीड़ ही लग गई थी। इस प्रकार बल्लभ भाई ने राजकोट, उड़ीसा, छत्तीसगढ़, सौराष्ट्र संघ के राज्य, मालवा का राज्यसंघ, पंजाब राज्यसंघ, फरीदकोट, विन्ध्य प्रदेश, राजस्थान संघ, ट्रावनकोर, कोचीन, रायपुर, भोपाल आदि को भारत के अधीन कर लिया। लेकिन जूनागढ़ के नवाब, बिना किसी तर्क के पाकिस्तान के साथ जाना चाहते थे। इस तथ्य के बावजूद कि उनका राज्य भारतीय सीमा के काफी अंदर था। जब वहाँ की हिंदू-बाहुल्य जनता ने भारत के पक्ष में अपना फैसला लिया, तो नवाब अपनी तीन बीबियों, कुत्तों और रत्न-आभूषणों के साथ पाकिस्तान को पलायन कर गए। उसे भारतीय फौज के आक्रमण का भी भय था।

कश्मीर के महाराजा हरिसिंह, बिल्कुल इसके विपरीत थे। वह हिंदू थे, पर अधिकतर जनता वहाँ मुसलमान थी। महाराजा अपना मन नहीं बना पा रहे थे कि पाकिस्तान के साथ जाएँ या भारत में रहें। वह वास्तव में स्वतंत्र रहना चाहते थे और उनके पास पर्याप्त सेना थी। पर इस बीच

में पाकिस्तान से कबीलाईयों ने उन पर आक्रमण कर दिया (लूट-पाट, घर जलाने और वहाँ की जनता को आतंकित करने लगे), जिसे खदेड़ने के लिए हरिसिंह ने भारतीय फौज की मदद माँगी और साथ ही भारत में रहने का फैसला किया। नई दिल्ली ने जितने लड़ाकू-जहाज और सेना की इकाइयाँ थी, उन्हें द्रुतगति से श्रीनगर रवाना कर दिया। देशभक्त सांसद श्यामा प्रसाद मुखर्जी के आह्वान पर बहुत से हिन्दू भी कश्मीर की मुक्ति के लिए वहाँ गए थे। धरती की जन्नत कही जाने वाली कश्मीर में अब शांति भंग हो गई थी और वह भारत-पाकिस्तान के बीच युद्ध-भूमि बन गई थी। महाराजा हरिसिंह अपने को इस लड़ाई से दूर रखने के लिए श्रीनगर का अपना महल छोड़कर हमेशा के लिए जम्मू चले गये जो कश्मीर की शीतकालीन राजधानी थी। अजीब बात थी कि उन्होंने बेटे कर्ण सिंह को कश्मीर का रीजेंट बना दिया था। नेहरू जी राजाओं के विरोधी थे और भारत की आजादी दिलाने में उनकी अहम भूमिका थी। कुछ समय बाद वे आम चुनाव लड़े और भारत के प्रथम प्रधानमंत्री बने।

तीसरा प्रशासक जो भारत में शामिल नहीं होना चाहता था। वह था हैदराबाद का निज़ाम उस्मान अली, अब वे एक वृद्ध व्यक्ति थे। वजन केवल चालीस किलोग्राम और डेढ़ मीटर का कद। वह अभी भी सबसे ज्यादा सनकी राजा था। पिछले सालों में उनके धन-दौलत में जितनी भी वृद्धि हुई थी, उनकी कंजूसी भी उसी अनुपात में बढ़ती गई थी और वह इस हद तक बढ़ गई थी कि उनके मेहमान जो अधजली सिगरेट ऐश-ट्रे में छोड़ जाते थे, उसे भी इकट्ठा कर लेते थे। बंबई से जो डॉक्टर उनका इलेक्ट्रोकार्डियोग्राम लेने आया था, वह उनका ई.सी.जी. नहीं ले सका, क्योंकि उन्होंने हैदराबाद पॉवर स्टेशन को वोल्टेज कम करने का आदेश दिया था। उनके पास भी हरिसिंह (कश्मीर) की तरह अपनी विशाल फौज थी और लड़ाकू हवाई जहाज भी थे। जब 14 अगस्त को उनको एक आला अफसर यह बताने आया कि अंग्रेज भारत छोड़कर जा रहे हैं, तो वह खुशी के मारे कूद पड़े और बोले, ''अब मैं आजाद हो गया हूँ।''

फिर उसकी आँखों में खुशी के आँसू आ गये।

''प्रधानमंत्री को हाजिर करो।'' उसने संदेशवाहक को आज्ञा दी और फिर बड़बड़ाए, ''मैं आजाद हूँ, मेरा मुल्क आजाद है। मेरी औलादें अब निश्चिंत होकर हैदराबाद पर राज्य करती रहेंगी।''

''आमीन।'' पास खड़े अंगरक्षक ने कहा।

12

निज़ाम सरकार ने एक दिन पड़दादा से कहा था, ''कासिम, अंग्रेजों ने जाने के लिए अपना बोरिया बिस्तरा समेट लिया है और कल सुबह से भारत और पाकिस्तान नामक दो राष्ट्रों का उदय...।''

''हिज हाइनेस मैं जानता हूँ।''

''अंग्रेज चाहते हैं कि यदि हम अपना अस्तित्व बनाये रखना चाहते हैं तो हमें इन दोनों देशों में से किसी एक के साथ मिलकर रहना होगा।''

''हाँ, यह तो पहले से ही निश्चित हो चुका है।''

''तो कुछ करते क्यों नहीं, हम किसी के साथ भी नहीं मिलेंगे और स्वतंत्र ही रहेंगे।''

''महामहिम यह तो आपका जन्म सिद्ध अधिकार है, हैदराबाद ही क्या लाल किले पर भी आपका झण्डा लहराना ही चाहिए। यह धन फिर किस दिन काम आएगा, इसलिए अपनी आज़ादी और हुकूमत बनाए रखने के लिए कुछ तो करना ही होगा।''

''अब हमें क्या करने की जरूरत है, और कुछ करना होगा भी तो फिर उसमें धन की कमी भला आएगी ही कहाँ, आप जानते हैं हमारे पास कितनी धन दौलत है।''

''मैं जानता हूँ हिज हाइनेस, आप इस समय दुनिया के सबसे अमीर आदमी हैं।''

''शायद आप नहीं जानते कि मेरे पास इतने जवाहरात हैं कि सैकड़ों बक्सों में बन्द करके रखे हैं और सोने-चांदी की ईंटें बड़े-बड़े तहखानों में रखी हैं। इन सबको यदि लंदन की सड़कों पर बिछा दिया जाए तो सड़कें कम पड़ जाएँगी।''

''मगर इतने धन का आप...।''

''बेवकूफ क्या मेरे कोई आगे-पीछे नहीं है।''

“रहम शहंशाह। आपके तो अट्ठासी लड़के और लड़कियाँ हैं।”

“आपने सही गिनती की।” फिर निजाम ने मन-ही-मन में कहा, “इसीलिए तो हमने हर एक लड़के और लड़की के नाम एक-एक बक्सा कर दिया, हमारी बुद्धि का कमाल तो देखो कि हमने शर्त यह रखी है कि मेरे मरने के बाद ही यह बँटवारा अमल में लाया जाएगा। इस तरह किसी को पता न चल सकेगा कि उन बक्सों में क्या है, सिवाय मेरे जिसने अपनी निजी डायरी में सब कुछ लिख लिया है।” फिर उन्होंने प्रत्यक्ष कहा, “क्या तुम्हें मेरे जवाहरात की कीमत का अंदाजा है?”

“हिज हाइनेस आपके निजी जवाहरात की कीमत पचास करोड़ आँकी गई है।”

“आपने ठीक आँका, इस सबकी लिस्ट मेरे पास है। मैं हमेशा अपने जवाहरात और जेवरात की पूरी फेहरिस्त सोते-जागते, हर वक्त अपने पास रखता हूँ। मुझे ठीक-ठीक पता रहता है कि कितना रुपया मेरे पास है, किस बक्सों में कौन-से जवाहरात हैं और जेवरात में से कौन-सी चीज कहाँ रखी मिलेगी। जिस जगह जो सामान रखा है, वहीं वह रखा रहता है और मेरी मंजूरी के बग़ैर उसकी जगह बदली नहीं जा सकती। पर इतने धन की हिफाजत भी आसान नहीं। किस पर भरोसा करें, किसी पर भी तो नहीं, तभी तो ख़ज़ाने की ख़ास चाबियाँ बड़ी हिफ़ाजत से अपने पास रखता हूँ।”

“क्षमा करें हिज हाइनेस, एक बात कहना चाहता हूँ।”

“कहो क्या कहना चाहते हो?”

“सुना है दिल्ली में स्वतंत्र भारत की नयी सरकार शक्ति संपन्न होते ही हैदराबाद को अपने में मिलाने के लिए बल प्रयोग कर सकती है।”

“ऐसा कभी नहीं होगा?”

“परंतु क्रांतियाँ होते देर नहीं लगती?”

“बात तो आपकी भी ठीक है, इसलिए क्या किया जाए।”

“भविष्य के लिए कुछ सुरक्षा प्रबंध।”

“क्या आपके मस्तिष्क में कोई योजना है।”

“जी, योजना तो है।”

“जल्दी बोलो।”

“आपको सारा धन लंदन के नेशनल वेस्टमिनिस्टर बैंक में जमा करवा देना चाहिए और अपनी हैदराबाद रियासत की स्वतंत्रता कायम रखने के लिए मामले को संयुक्त राष्ट्र में ले जाना चाहिए।”

“आपने इतनी अच्छी सलाह पहले क्यों नहीं दी,” उनकी आँखों में अद्‌भुत चमक और चेहरे पर नूर छा गया, “वित्त मंत्री मोइन नवाज़ जंग के नेतृत्व में पांच सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल बनाने की मेरी ओर से मौखिक राजाज्ञा है। ताकि वे संयुक्त राष्ट्र में हैदराबाद रियासत की स्वतंत्रता कायम रहने की वकालत कर सकें और आपातकाल के लिए 1007940 पाउंड 9 शिलिंग की भारी भरकम धनराशि नेशनल वेस्टमिनिस्टर बैंक में जमा करवा दें, ताकि हमारे वफादारों के लिए एक लाख .303 की राइफलें खरीदी जा सकें।”

“मगर इतनी रायफलें किसलिए?”

“बेवकूफ, रियासत के विलय का विरोध करने में भारतीय सेना से मुकाबला करने के लिए राइफलों के स्थान पर क्या लाठियाँ खरीदने के लिए यह धन बैंक में जमा करवाऊँ?”

“आपने दुरुस्त फरमाया। जल्द जमा करा देते हैं।”[1]

13

हैदराबाद रियासत का निज़ाम मुस्लिम था, जबकि वहाँ की अधिकाँश जनता हिंदू थी। जनता भारत में शामिल होना चाहती थी, लेकिन निज़ाम बहुत ही हठी एवं दुराग्रही था। उसे अपने धन-बल पर बहुत भरोसा था। यहाँ तक कि वह भारत विरोधी कामों में भी लगा रहता था। पड़दादा ही नहीं बल्कि कुछ रजवाड़े भी उसको भारत के खिलाफ़ उकसा रहे थे कि वह भारत में किसी भी प्रकार न मिले। भारत की आजादी की भनक लगते ही निज़ाम के राज्य में हिंदुओं एवं सिखों पर अत्याचार होने शुरू हो गये,

1. साठ सालों का ब्याज जोड़कर अब यह राशि तीन करोड़ पाउंड यानी 250 करोड़ रुपए हो गई है। संप्रग सरकार के तत्कालीन केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी राज्यमंत्री कपिल सिब्बल ने इस राशि को भारत सरकार को दिलाने की पैरवी की थी, लेकिन इसका कोई निष्कर्ष नहीं निकल पाया। इंडिया टुडे, 14 मई 2008

इसलिए अंततः बल्लभ भाई ने निज़ाम पर सैन्य दबाव डालने की योजना बनाई। बँटवारे के समय हुए समझौते के अनुसार भारत को पाकिस्तान को 55 करोड़ रुपए चुकाने थे। मगर बल्लभ भाई अपने इरादों के पक्के थे। उनके अनुसार पैसे तभी चुकाने चाहिए थे, जब कि पाकिस्तान की फ़ौजें कश्मीर से पीछे हट जाएँ। उनका यह तर्क था कि इस समय पाकिस्तान को दिए गए पैसे भारत के ख़िलाफ़ जंग में ही इस्तेमाल किए जाएँगे। डॉ. भीमराव अंबेडकर, डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी व अन्य लोगों ने भी उनका समर्थन किया, लेकिन कैबिनेट के लोगों ने गांधी जी के दबाव में आकर पाकिस्तान को पैसे दे दिए। इसके जवाब में पटेल जी ने कड़ा विरोध जताया था। पाकिस्तान को इतनी बड़ी धनराशि देने से आहत नाथूराम गोड़से नामक एक युवा ने 30 जनवरी, 1948 को गांधी जी को गोली मारकर उनकी हत्या कर दी। बल्लभ भाई को इस अचानक घटना से गहरा सदमा पहुँचा, पर फिर भी वह लगातार देश की सेवा में लगे रहे। उन्होंने गाँधी जी के नाम पर गांधी स्मारक निधि की स्थापना में खूब मेहनत की। उनकी लगन, मेहनत एवं निःस्वार्थ देश की सेवा देखकर देश की कई शिक्षण संस्थाओं ने उन्हें सम्मानित किया। मानद उपाधियाँ दीं। जब कभी जवाहरलाल नेहरू कुछ दिनों के लिए देश से बाहर चले जाते थे, तब बल्लभ भाई कार्यवाहक प्रधानमंत्री का पद भी संभालते थे। उन्होंने कई महत्त्वपूर्ण फैसले लिए। गांधी ने एक बार कहा भी था, ''जिस प्रकार दो बैल एक साथ काम करते हैं, ठीक उसी प्रकार नेहरू एवं सरदार को भी एक-दूसरे की बराबर ज़रूरत पड़ेगी, दोनों मिलकर राष्ट्र की गाड़ी को आगे बढ़ाएँगे।''

हैदराबाद के निजाम ने भले ही स्वतंत्रता की घोषणा कर दी थी। बिना इस बात पर विचार करे कि उनकी सत्ता-शक्ति अंग्रेजों की वैशाखी पर निर्भर थी और अब अंग्रेज छोड़कर गए तो, वह सपोर्ट-सिस्टम या नेटवर्क भी बिखर गए। हालाँकि कानूनीतौर पर और संवैधानिक तौर पर उनको यह अधिकार था, पर व्यावहारिक तौर पर यह पागलपन था, क्योंकि उनके पास सबसे बड़ा हथियार यानी जनता का समर्थन नहीं था। उनका असलियत से नाता टूट गया था।

14

जनता हैदराबाद में निज़ाम का शासन नहीं चाहती थी, लेकिन निज़ाम ताकत के बल पर शासक बने रहना चाहते थे। इसलिए जनता पर अत्याचार ढाये जाने लगे। पड़दादा यानी कि रज़ाकार फील्ड मार्शल कासिम के इशारे पर देशभक्तों को तेलंगाना के घने जंगलों में बनायी गयी जेलों में ठूँसकर भयंकर यातनाएँ दी जाने लगी। कभी लव जिहाद की शिकार होकर मुसलमानी बनी मेरी दादी ने पाला बदल लिया था और वे सरदार पटेल के पक्ष में बातें करने लगी थी, ''तुम्हें भी अब्बा का पागलपन अच्छा लगता है क्या? जो अलग देश बनाना चाहते हैं।''

''आत्महत्या करने से उन्हें मैं कैसे रोकूँ भला?'' और इस प्रकार मेरे दादा भी पड़दादा के खिलाफ हो गए थे, क्योंकि उन्हें हिन्दुस्तानी सेना की शक्ति का ज्ञान था और यही कारण था कि जब उन्होंने अपने अब्बा यानी कि कासिम रिजवी से मिलकर देशभक्तों की जेल बंदी पर गहरा रोष जताया तो पड़दादा ने उसे भी कैद कर लिया। लेकिन वे किसी तरह से आजाद होकर भाग निकले और कुछ ही दिनों बाद सीधे दिल्ली पहुँच गए थे। उस दिन 14 नवंबर (1947) था, जैसा कि मैंने दादा जी की डायरी में पढ़ा था। दादा जी ने दिल्ली आकर सरदार पटेल को अपना परिचय देते हुए सारी बातें बताई, ''पटेल साहब, हैदराबाद की जनता दिल्ली के साथ है, लेकिन मेरे अब्बा एक और पाकिस्तान बनाना चाहते हैं और वह भी हिन्दुस्तान के अंदर।''

''तो क्या आप अपने अब्बा के साथ नहीं हैं।''

''मेरी हिन्दू पत्नी ने मुझे भी हिन्दी बना दिया है।'' फिर दादाजी ने पटेल को एक लिफाफा दे दिया था। उस लिफाफे में पड़दादा यानी कासिम साहब के तमाम ठिकानों की जानकारी, रज़ाकारों की भावी योजनाएँ एवं बहुत कुछ ऐसी गुप्त बातों को लिखा गया था, जो शायद भारत सरकार के गुप्तचर विभाग के पास भी नहीं थी। पटेल ने जैसे ही उस जानकारी पर सरसरी नजर डाली तो उनकी आँखों में चमक आ गई थी, ''आपने तो मेरा काम बहुत आसान कर दिया।''

"आपका नहीं यह तो राष्ट्र का काम था। लेकिन...."

"लेकिन क्या?"

"मेरा तो कुछ नहीं, लेकिन मेरे अपने परिवार की हिफाजत..."

"उसकी चिंता आप न करें। भारत के हरेक नागरिक की सुरक्षा की चिंता करना भारत सरकार का दायित्व है।"

"ठीक है अच्छा अब चलता हूँ, जय हिन्द।" और दादा जी पटेल से जैसे ही मुलाकात खत्म करके चलते बने वैसे ही पड़दादा ने भी प्रवेश किया था और दादा को कंसाई की तरह घूरा था।

पड़दादा ने सरदार से मिलते अपने दिल की बात कह दी थी, "आप जानते हैं मैं आपसे क्यों मिलने आया हूँ।"

"पहले मेरे सवाल का जवाब दें।"

"कहिए जनाब?"

"आप जानते हैं कि मैंने आपको मिलने पर क्यों सहमति जताई है?"

"शायद इसलिए कि भविष्य में भारत सरकार हैदराबाद से बड़े ही अच्छे संबंध बनाकर रखना चाहती हो।"

"क्या बकते हो?" पटेल गुस्सा हो गए थे, "हम चाहते हैं कि आप देश की एकता और उन्नति के लिए काम करें।"

"असंभव!"

"पर मेरे शब्दकोश में असंभव जैसा कोई शब्द नहीं है।"

"ओह!" पड़दादा ने घूरते हुए कहा था, "आप आखिर हैदराबाद को आजाद क्यों नहीं देखना चाहते?"

"मैं सभी संभव सीमाएँ लाँघ चुका हूँ। हैदराबाद के लिए मैं जितना कुछ स्वीकार कर चुका हूँ, उतना किसी भी रियासत के लिए मैंने नहीं स्वीकारा। यहाँ तक कि मैं निजाम को राजप्रमुख भी बनाने पर सहमत हो गया हूँ।"

"पर असली समस्या यह नहीं है।"

"तो क्या है असली समस्या?"

"मैं चाहता हूँ कि आप हैदराबाद की मुश्किलों को समझें।"

"मुझे इसमें कोई मुश्किल नहीं दिख रही, बशर्ते तुमने पाकिस्तान से

कोई समझौता न कर रखा हो।"

"अगर आप हमारी मुश्किलों को नहीं समझेंगे, तो हम कभी नहीं झुकेंगे", पड़दादा एकदम चीख पड़े थे, "हम हैदराबाद की आज़ादी के लिए आख़िरी दम तक लड़ेंगे।"

"अगर तुम आत्महत्या ही करना चाहते हो, तो मैं तुम्हें कैसे रोक सकता हूँ।" पटेल बड़ी सहजता से कह गए थे।

"तुम्हारी बंदरभभकी से हम बहकाए में आने वाले नहीं हैं, आज तुम्हारी शक्ति बहुत ज़्यादा है, लेकिन यदि हमें जंग के मैदान में पकड़ लिया गया तो जानते हो क्या होगा?"

"क्या होगा?"

"मुकदमा तो लाल किले में ही चलाओगे, लेकिन उसमें हमारी ही जीत होगी, ठीक उसी तरह जिस तरह आजाद हिंद फौज के वीरों पर लाल किले में मुकदमा चलाया गया और आज वे हिन्दुस्तान ही नहीं पाकिस्तान के भी हीरो हैं।"

"तुम जैसे मामूली गुण्डे और धर्मांध को तो लाल किले जैसे ऐतिहासिक और पवित्र स्थल में कदम भी नहीं रखने दिया जाएगा।"

"आपके इरादे आ गए ना सामने! जो लाल किला हमारे पूर्वजों ने बनवाया, हमें उसमें कदम भी नहीं रखने दोगे।"

"बिल्कुल... कोई शक!"

"शक तो तुम्हें है हमें नहीं। हम तो बाबर और महमूद गजनवी की औलाद हैं। अल्ला ताला के करम से लाल किले पर हरा इस्लामी झण्डा फिर लहरायेगा और बंगाल की खाड़ी की लहरें एक बार फिर मुस्लिम भारत के राज्य के पैर चूमेंगी।"[1]

"दिन में ही सपना देख रहे हो क्या?" पटेल ने गुस्से से लाल होकर सुरक्षा अधिकारी को ही आवाज लगा दी, "अरे कोई है क्या? इस गुण्डे मवाली को उठाकर बाहर किसी गंदी नाली के गटर में फेंक दो।"

---

1. K. M. Munsi ने 'The End of the Era' में रिजवी साहब के सपने का वर्णन इस प्रकार किया है : We are the grandsons of Mahmood Ghaznavi and the sons of Babur. When determined, we shall fly the Asaf Jahi Flag on the Red fort.
- 'The End of the Era' , page 163

पड़दादा खाली हाथ और बेइज्जत होकर पटेल के पास से हैदराबाद लौट आए, लेकिन उन्होंने आते ही दादा जी को कैद कर लिया। उस समय दादी पेट से थी और उसे एक हवेली में नजरबंद कर दिया गया था।

15

''यदि हैदराबाद को भारत में नहीं मिलाएँ तो इससे क्या फर्क पड़ता है?'' नेहरू ने एक चर्चा के दौरान सरदार पटेल से पूछा।

''यदि आपको आनंदभवन का चौकीदार बनने के लिए विवश किया जाए तो उससे क्या फर्क पड़ेगा?'' पटेल ने प्रतिक्रिया दी।

''तुम कहना क्या चाहते हो?''

''मैं चाहता हूँ पूरी आजादी।''

''क्या हैदराबाद के बिना आजादी पूरी नहीं है।''

''जी नहीं अधूरी है।''

''हैदराबाद ने अपने अस्तित्व को बचाए रखने के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ में गुहार लगायी है और पाकिस्तान[1] भी उसके समर्थन में कूद पड़ा है, ऐसे में उसके अंतरिम मामलों में दखल देना क्या उचित रहेगा।''

''जब जनता ने ही उसे नकार दिया है, तो फिर वह कौन होता है, संयुक्त राष्ट्र में जाकर ही उसे क्या मिलेगा?''

''जनता ने उसे नकार दिया...अर्थात्?''

''आर्य समाज के नेतृत्व में जनक्रांति हो गयी है, जिसने हैदराबाद

1. यदि जिन्ना की मौत न होती तो पाकिस्तान हैदराबाद को हर संभव सहायता देकर भारत की एकता में रोड़ा अटकाता।

'Indian Summer' में Alex von Tunzelmonn ने लिखा है कि Specifically, he asked wheather Pakistan could guarantee that food, weaponry and troops be supplied...

-'Indian Summer', page 223

निज़ाम के गुर्गे हैदराबाद को स्वतंत्र देश बनाने के लिए विश्व स्तर पर एड़ी-चोटी का जोर लगा रहे थे।

'The Story of the Integration of the Indian States' esa V.P. Menon ने लिखा कि If the Union government takes any action against Hyderabad, 100,000 men are ready to join our army. We also have 100,000 bombers in South Arabia ready to bomb Bombay.

रियासत के विलय की आधारशिला रख दी है, बस आप प्रधानमंत्री होने के नाते पुलिस कार्रवाई करने की अनुमति दे दें।'' नेहरू सामने प्लेट में रखी नमकीन को उठाकर मुँह में डाल चबाने लगे। तो तभी पटेल ने एक कागज उसकी ओर बढ़ा दिया, ''इस पर आपके हस्ताक्षर चाहिएँ।''

''यह क्या है?''

''हवाई जहाज का प्रधानमंत्री कोटे से तुरंत टिकट लेने के लिए फार्म है।''

''ओह, यह बात है।'' और नेहरू ने बिना वह पत्र पढ़े उस पर हस्ताक्षर कर दिये। दरअसल वह कोटे से हवाई टिकट लेने के लिए फार्म नहीं, बल्कि हैदराबाद पर पुलिस कार्रवाई करने के लिए टाइप किया गया प्रधानमंत्री की ओर से लिखा गया आज्ञा पत्र था। इस पत्र को स्वयं पटेल ने टाइप किया था, क्योंकि वह जानते थे कि नेहरू जी आसानी से हैदराबाद पर पुलिस कार्रवाई करने की अनुमति नहीं देंगे।

16

सन् 1948 में 13 सितंबर का दिन ऐतिहासिक क्षणों को लिख रहा था। हैदराबाद में भारतीय सेना 5 दिवसीय अभियान 'पोलो आपरेशन' के तहत 5 भागों में विभाजित होकर नलदुर्ग पुल, हाकिमपेट, बेगमपेट, हैदराबाद नगर, तालमुड, कल्याणी, होमनाबाद, बीदर, जहीराबाद, राजसुर, सदारस्कोपेट आदि मोर्चों पर निजाम सरकार और पड़दादा कासिम की संयुक्त 2 लाख 52 हजार सशस्त्र सैनिकों से युद्ध कर रही थी। इनमें 2 लाख तो रजाकार ही थे। इन सेनाओं का कमाण्डर था मेजर जनरल सैयद अहमद। इसके अलावा ऑस्ट्रेलियाई हवाबाज सिटनी काटन, ब्रिटिश लेफ्टिनेन्ट टी. टी. मूर, मेजर जनरल एल. एल्ड्रॉज़ भी निज़ाम के पक्ष में मुस्लिम सेना की तरफ से युद्धरत थे। भारतीय सेना का नेतृत्व संभाले हुए थे लेफ्टिनेंट जनरल राजेन्द्र सिंह तथा मेजर जनरल चौधरी।

यह कटु सत्य है कि इस अभियान के पूर्व रजाकार न सिर्फ हिन्दू जनता का कत्ल कर रहे थे वरन हिन्दू बहन-बेटियों का अपहरण करके उन पर अत्याचार भी कर रहे थे। पड़दादा कासिम ने इस कत्लेआम को जिहाद

का नाम दिया था और जिहाद का अधिकार तो कुरान-ए-पाक ने दिया है। हथियार-हफ्ता के दौरान पड़दादा ने 31 मार्च, 1948 को अपने भाषण में कहा था, ''मुसलमानो, जिहाद शुरू करो। सभी हिन्दुस्थानी मुस्लिम हमारे लिए फिफ्थ कालमिस्ट (पंचमांगियों) का काम करेंगे।''

फिर अप्रैल में उन्होंने कहा, ''वह दिन करीब है जब बंगाल की खाड़ी से उठने वाली लहरें निज़ाम सरकार की कदमबोसी करेंगी। अगर हिन्दुस्थान ने हैदराबाद पर हमला किया तो उसे यहाँ डेढ़ करोड़ हिन्दुओं की हड्डियाँ ही मिलेंगी।'' पड़दादा उन दिनों निज़ाम सरकार का खास सलाहकार बना हुआ था। इसी बीच 11 सितंबर 1948 को मोहम्मद अली जिन्ना दुनिया से कूच कर गए और पड़दादा का सबसे बड़ा हमदर्द अब इस दुनिया में नहीं रहा था।

वर्षा-काल था। अभी सूर्योदय नहीं हुआ था कि 13 सितंबर को भारतीय सेना ने नलदुर्ग पुल जीतकर उस पर कब्जा कर लिया। ब्रिटिश लेफ्टिनेंट टी. टी. मूर को उस पुल को उड़ाने के लिए भेजा गया था। उसे पकड़ लिया गया। इस युद्ध में पड़दादा के 632 सैनिक मारे गये, कई घायल हुए। उधर भारतीय सेना के 8 सैनिक खेत रहे और 8 ही सैनिक घायल हुए। दूसरी ओर तुलजापुर के मोर्चे पर रज़ाकारों के साथ पठान सैनिक तथा 4 रज़ाकार स्त्रियाँ भी लड़ाई में भाग ले रही थीं। ऐसा आरोप लगाना ठीक नहीं, क्योंकि उन चार औरतों में से एक औरत मेरी दादी थीं और पेट से थीं और इसी दौरान दादी को प्रसव पीड़ा हो गई थीं, यह देखकर भारतीय सेना की मेवाड़ इन्फेन्टरी के राजपूत सैनिकों ने आगे बढ़कर मुस्लिम औरतों को एक ओर कर दिया।

मेवाड़ी सैनिकों ने वहाँ रजाकारों और पठानों की तो लाशें गिरा दीं और तुलजापुर को जीत लिया, परन्तु औरतों पर न तो हाथ उठाया, न उनका कोई अपमान किया और न ही उन्हें गिरफ्तार किया। भला एक जच्चा-बच्चा को गिरफ्तार करके वे दुनिया के सामने मुँह कैसे दिखाते। सच बात तो यह है कि दादी और उसकी सहायिका किसी लड़ाई में भाग नहीं ले रही थी, बल्कि वे तो किसी सुरक्षित स्थान पर जा रही थी। दादी नजरबंदी से भाग निकली थी। यह सच है कि उनके हाथ में हथियार थे,

लेकिन वे आत्मरक्षा के लिए थे, भारतीय सेना पर उठाने के लिए नहीं। दादी भला भारतीय सेना पर हथियार कैसे उठाती, क्योंकि खुद जब दादा ही पड़दादा के सारे गुप्त राजों का कच्चा चिट्ठा पटेल को सौंप आए थे। लेकिन यहाँ एक दुखद घटना भी घटी, भारत सरकार ने 632 सैनिकों के मारे जाने की जो घोषणा की थी, वह सही नहीं थी। क्योंकि उनमें सभी लड़ाका नहीं थे। कई तो कैदी ही थे, जो लड़ाई के दौरान भाग निकले थे और अचानक भारतीय सेना की गोली का निशाना बन गए थे। दुर्भाग्य से दादा भी उनमें से एक थे।

दादा की तो लाश भी नहीं मिली थी, गोला-बारूद से शरीर के चिथड़े-चिथड़े उड़ गए थे। जिस युवक ने पटेल को हैदराबाद में भारतीय सेना भेजने के लिए उकसाया उसी भारतीय सेना के बारूद से उसका अंतिम हश्र ऐसा हुआ था, लेकिन वह दौर ही ऐसा था, यदि दादा भारत की ओर से लड़ते हुए अपने ही देशद्रोही पिता की गोली से मरते तो दादी को भी गर्व होता और आने वाली नई पीढ़ियों को भी।

अंततः सभी मोर्चे जीत लिये गये। रजाकारों ने भारतीय एजेन्ट जनरल के. एम. मुंशी को क़ैद कर रखा था। वे मुक्त हुए और 18 सितंबर को सायं 4 बजे मेजर जनरल एल्ड्रॉज ने हैदराबादी फौजों का बिना शर्त समर्पण कर भारत में हैदराबाद के पूर्ण विलय को स्वीकार किया। निज़ाम का अली मंत्रिमंडल बर्खास्त कर दिया गया।

अली-मंत्रिमंडल के सभी सदस्य गिरफ्तार कर लिये गये। हाईकोर्ट में कभी वकालत का झण्डा गाड़ने वाले पड़दादा कासिम को अपने ही घर से अरेस्ट कर लिया गया। उनके साथ उनके छह अन्य विश्वासपात्र भी अरेस्ट किए गए थे।

इस विलय का श्रेय भी सरदार पटेल को ही था। 48 घंटे के अंदर हैदराबाद नामक स्टेट का अस्तित्व खत्म हो गया। निज़ाम के गुर्गों ने आत्मसमर्पण कर दिया। इसके बाद सरदार बल्लभ भाई पटेल विमान से सीधे हैदराबाद के लिए रवाना हुए। निजाम को यह बात पहले ही पता चल गयी थी।

17

निजाम की गाड़ी बेगमपेट हवाई अड्डे की ओर दौड़ी चली जा रही थी, लेकिन उस दिन उनकी गाड़ी पर हैदराबाद रियासत का ध्वज नहीं लगा हुआ था। शायद उनका ड्राइवर लगाना भूल गया होगा, या फिर पुलिस एक्शन में रज़ाकारों की हार के बाद ध्वज लगाने की हिम्मत नहीं हुई होगी। मैं तो कहती हूँ हिम्मत ही नहीं हुई होगी। जैसे ही एयरपोर्ट के मुख्य द्वार पर गाड़ी पहुँची तो लालसिंह आर्य, जो पटेल के आगमन से पहले उनकी सुरक्षा के लिए द्वार रक्षक बना हुआ था उसने उसे रोक दिया, ''ठहरो, बिना अनुमति पत्र के यह गाड़ी हवाई अड्डे के अंदर नहीं जा सकती।''

''आप जानते नहीं यह गाड़ी किसकी है?'' निज़ाम के ड्राइवर ने अकड़कर कहा।

''किसकी है?''

''निज़ाम सरकार की और वे इसी में हैं।''

''ओह! भूतपूर्व निज़ाम सरकार की।'' लालसिंह आर्य ने कहा।

''भूतपूर्व...।'' ड्राइवर चौंका।

''भूतपूर्व नहीं तो क्या? यदि भूतपूर्व नहीं होते तो क्या इस गाड़ी पर हैदराबाद रियासत का ध्वज नहीं होता।''

यह सुनते ही निज़ाम साहब आपे से बाहर हो गए, ''कौन बदतमीज है।''

''बदतमीज नहीं द्वाररक्षक कहिए श्रीमान?''

''तुम्हारी इतनी हिम्मत कि हमसे जबान लड़ाते हो और सलाम तक ठोका नहीं।''

''सलाम तो पद और प्रतिष्ठा को ठोका जाता है श्रीमान् और आपने दोनों ही गँवा दी है। यदि आप बिना संघर्ष किये भारत में मिल जाते तो हर भारतीय आपके चरणों की धूल मस्तक पर लगाता, लेकिन अब कोई आप पर थूकने पर भी अपनी...।''

''ठीक है...ठीक है...हमें जाने दो।'' हालत देखने लायक थी।

''मगर क्यों?''

''सरदार पटेल का जहाज आने वाला है, उनकी आवभगत करनी है।''

''कुछ फूलों का गुलदस्ता लाए कि नहीं।''

''लाया हूँ ना!''

''दिखता तो नहीं।''

''विलय के संलेख पर हस्ताक्षर करने वाली क्या यह कलम दिखायी नहीं देती।'' उन्होंने अपनी जेब में लगी कलम की ओर इशारा किया।

''ओह! आप हैदराबाद का भारत में विलय करने जा रहे हैं। यह तो बड़े सौभाग्य की बात है। नये भारत में आपका स्वागत है। खुशी से जाइये श्रीमान् और आते वक्त मिठाई खाकर जाना मत भूलना।''

''ठीक है...ठीक है..'' कहकर निजाम गाड़ी में बैठ गये और ड्राइवर ने गाड़ी आगे बढ़ा दी।

18

बहुत से लोग एयरपोर्ट पर सरदार पटेल के आने के ऐतिहासिक क्षणों का इंतजार कर रहे थे। और फिर वे स्वर्णमयी क्षण आ ही गये। जैसे ही उनका प्लेन हवाई पट्टी पर उतरा तो निज़ाम सरकार उनकी ओर दौड़े। जब तक वे प्लेन के पास पहुँचे पटेल भी हवाई जहाज से उतर चुके थे, ''जय हिन्द निज़ाम साहब!'' पटेल ने हाथ जोड़कर प्रमाण किया।

''जय हिन्द...जय भारत...।'' निज़ाम झुकते हुए स्वतः ही करबद्ध हो गये। वह शासक जो इंग्लैंड के सम्राट के सामने भी मुख उठाकर बातें करता था, आज सरदार पटेल ने सामने हाथ जोड़े हुए झुका हुआ खड़ा था। यही वे ऐतिहासिक क्षण थे, जिनके कारण सरदार पटेल को लौह पुरुष की उपाधि से सम्मानित किया गया।

''मेरे लिए क्या आदेश है?'' निज़ाम ने पटेल से पूछा।

''सम्मिलन के संलेख पर हस्ताक्षर कर स्वयं भी सुखपूर्वक रहें और हमें भी आज़ादी की खुली हवा में साँस लेने दें।''

''सम्मिलन का संलेख...हम तो अंग्रेज़ों के अधीन थे और आप हैं स्वतंत्र भारत के प्रतिनिधि, फिर तुम्हारे संलेख पर हस्ताक्षर करना क्या

कानूनन है? हमारे मुताबिक तो आप गलत करवाना चाहते हैं?''

''एकदम कानूनन है महामहिम उस्मान अली,'' पटेल ने उसे कहा, ''जैसी कि भारतीय स्वतन्त्रता अधिनियम 1947 में व्यवस्था है, तदनुसार अगस्त 1947 के पन्द्रहवें दिवस से एक स्वतन्त्र अधिराज्य 'भारत' के नाम से विदित, स्थापित किया गया और भारत सरकार अधिनियम 1935, ऐसी सभी अवक्रियाओं, परिवर्धनों, अनुकूलनों तथा संशोधनों सहित, जिनको गवर्नर जनरल अपनी आज्ञा द्वारा निर्दिष्ट करें, भारत के अधिराज्य पर लागू होगा; और जैसा कि भारत सरकार अधिनियम 1935 इस भाँति गवर्नर जनरल द्वारा अनुकूलित होकर व्यवस्था करता है, तदनुसार कोई भी रियासत शासक द्वारा सम्मिलन के संलेख पर हस्ताक्षर किए जाने पर भारतीय अधिराज्य में सम्मिलित हो सकती है।''

''हो सकती है ना, जरूरी तो नहीं।'' निज़ाम ने कहा।

''जरूरी ही है।''

''क्यों?''

''यह समय की जरूरत है।''

''तो मैं क्या करूँ?''

''विलय के घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर कर दें,'' कहते हुए उन्होंने एक घोषणा पत्र उन्हें थमा दिया।

निज़ाम ने बिना घोषणा पत्र पढ़े उस पर हस्ताक्षर कर दिये और फिर उसे पढ़ना शुरू किया :

'मैं लेफ्टीनेन्ट जनरल हिज एक्जाल्टेड हाईनेस आसफजाह, मुजफ्फर-उल-मुल्क, निजाम-उल-मुल्क, निजामुद्दौला सर मीर उस्मान अली खाँ बहादुर, फतेहजंग, जी. सी. एस. आई. जी. बी. ई।

शासक राज्य हैदराबाद रियासत

उपरोक्त राज्य में तथा उस पर अपने प्रभुत्व के अधिकार प्रयोग द्वारा यहाँ पर यह सम्मिलन का संलेख निष्पादित करता हूँ; और

1. मैं यहाँ पर घोषित करता हूँ कि मैं भारतीय अधिराज्य में सम्मिलित होता हूँ, इस इरादे से कि भारत के गवर्नर जनरल, अधिराज्य का विधान मण्डल, संघीय न्यायालय तथा कोई अन्य अधिराज्य प्राधिकारी सत्ता जो अधिराज्य प्रक्रियाओं के उद्देश्य से स्थापित की गई हो, मेरे इस सम्मिलन के संलेख के प्रभाव द्वारा परन्तु इसकी धाराओं से अनुशासित और केवल अधिराज्य के प्रयोजन से राज्य हैदराबाद दक्खिन (इसके अनन्तर अभ्युद्दिष्टित 'यह राज्य') के सम्बन्ध में, ऐसे कार्यों के हेतु जिनको करने का अधिकार भारत सरकार अधिनियम 1935 के अन्तर्गत, जिस भांति यह अधिनियम भारतीय अधिराज्य में अगस्त 1947 के पन्द्रहवें दिन लागू हो अपने अधिकारों का प्रयोग कर सकते हैं; और मैं यह घोषित करता हूँ कि भारतीय अधिराज्य ऐसे प्रतिनिधि या प्रतिनिधियों द्वारा, जैसा वह उचित समझे इस रियासत के जनपद एवं आपराधिक न्याय की प्रशासनिक व्यवस्था के सम्बन्ध से उन समस्त अधिकारों, शक्तियों और क्षेत्राधिकार का प्रयोग कर सकता है, जो किसी समय सम्राट् के प्रतिनिधि द्वारा सम्राट् की ओर से भारतीय रियासतों के साथ उनके सम्बन्धों के विषय में प्रयोग किए जाते थे।
2. मैं यहाँ पर वैधानिक अनुबन्ध स्वीकार करता हूँ कि विश्वस्त रूप से इस राज्य में मेरे द्वारा अधिनियम के आदेशों को मेरे इस सम्मिलन के संलेख की स्वीकृति के फलस्वरूप उचित रूप से लागू करके प्रभावकारी बनाया जाएगा।
3. अनुच्छेद 1 की व्यवस्था के प्रतिकूल न होकर मैं अनुसूची में निर्दिष्ट सभी बातों (मामलों) को स्वीकार करता हूँ जिनके विषय में अधिराज्य का विधान-मण्डल इस रियासत के लिए कानून बना सकता है।
4. मैं यहाँ पर घोषित करता हूँ कि मैं भारत के अधिराज्य में सम्मिलित होता हूँ इस विश्वास पर कि यदि कोई इकरारनामा गवर्नर जनरल और इस राज्य के शासक के बीच होता है कि अधिराज्य के विधान मण्डल के किसी कानून से सम्बन्धित, इस राज्य के प्रशासन के विषय में कोई कार्य इस राज्य के शासक द्वारा सम्पन्न किया जाएगा, तो ऐसा कोई भी इकरारनामा इस संलेख का एक भाग होगा और तदनुसार व्याख्या द्वारा उसको प्रभावकारी समझा जाएगा।
5. मेरे इस सम्मिलन के संलेख की धाराएँ, अधिनियम अथवा भारतीय स्वतन्त्रता अधिनियम 1947 में किसी प्रकार के संशोधन द्वारा परिवर्तित

न होंगी जब तक वह संशोधन मेरे द्वारा इस संलेख के अनुपूरक संलेख में स्वीकृत न होगा।

6. इस संलेख द्वारा अधिराज्य विधान मण्डल को अधिकार नहीं होगा कि वह इस रियासत हेतु कोई कानून बनाए जिसके द्वारा वह किसी कार्य के लिए अनिवार्यतः भूमि अधिग्रहण करें, परन्तु मैं उत्तरदायित्व लेता हूँ कि यदि अधिराज्य अपने किसी अधिनियम हेतु, जो इस राज्य पर लागू है, भूमि प्राप्त करना ज़रूरी समझता है, तो मैं उसके ख़र्चे पर भूमि प्राप्त कर दूँगा अथवा वह भूमि यदि मेरी होगी तो उन शर्तो पर, जो परस्पर तय हो जाएँगी, अधिराज्य को हस्तान्तरित कर दूँगा अथवा इकरारनामे की अवहेलना पर भारत के प्रधान न्यायाधीश द्वारा नियुक्त मध्यस्थ का निर्णय स्वीकार करूँगा।
7. इस संलेख में कोई बात मुझे अनुबन्धित नहीं करेगी कि मैं भारत के किसी भावी संविधान को स्वीकार करने अथवा उसके अन्तर्गत भारत सरकार से इकरारानामे करने को बाध्य रहूँगा।
8. इस संलेख में कोई बात इस राज्य में या राज्य पर मेरा प्रभुत्व कायम रहने में बाधक न होगी, सिवाय संलेख की व्यवस्थानुसार। इस राज्य के शासक की हैसियत से जो अधिकार, शक्ति और प्रभुता मुझे प्राप्त है उसके प्रयोग में, अथवा जो कानून इस समय इस राज्य में लागू हैं, उनकी वैधता में, संलेख की व्यवस्था मान्य होगी।
9. मैं यहाँ पर घोषित करता हूँ कि मैं इस राज्य के पक्ष से यह संलेख निष्पादित करता हूँ और इस संलेख का कोई सन्दर्भ मुझ से या इस राज्य के शासक से जहाँ भी होगा वहाँ मेरे अतिरिक्त मेरे वारिसों और उत्तराधिकारियों से भी उसका सम्बन्ध माना जाएगा।

मेरे हस्ताक्षर द्वारा आज 15 सितंबर 1948।

उस्मान अली...

मैं यह सम्मिलन का संलेख यहाँ पर स्वीकार करता हूँ...आज दिनाँक ....सन्............।

....

भारत का गवर्नर जनरल''

''शुक्रिया उस्मान अली, अब न होगी देश में खलबली और हम बनाते हैं आपको हैदराबाद राज्य का बली यानी कि प्रमुख।'' उन्होंने हास्यात्मक टिप्पणी की थी।

''हैदराबाद राज्य का प्रमुख...अर्थात् हमारे राज्य में मिले हुए अन्य जिलों का भी प्रमुख...।'' वह प्रसन्न हो उठे थे।

19

पड़दादा और उसके सहयोगियों पर भारत सरकार ने मुकदमा चलाया और उनके मुकदमे का फैसला अभी आया भी नहीं था कि 1949 में पड़दादा का सारा परिवार कराची चला गया। लेकिन मेरी दादी नहीं गई, क्योंकि वह तो अब उस परिवार का हिस्सा ही नहीं थी। दादा भी तो सारे अधिकारों से बेदखल थे और दादी तो जैसे-तैसे अपनी एकमात्र नाबालिग संतान का पालन पोषण करने लगी थी।

10 सितम्बर 1950 को पड़दादा को सात साल की सश्रम कारावास की सजा मिली, लेकिन निजाम सरकार के हस्तक्षेप से उन्हें जल्द छोड़ दिया गया, जिसके बाद वे मुक्त होते ही पाकिस्तान चले गए और 15 जनवरी 1970 को कराची में उनका इंतकाल हो गया और जिस समय उनका इंतकाल हुआ उस समय उनके बहिष्कृत पुत्र का पुत्र यानी कि पौत्र अर्थात् मेरे अब्बा भी एक छोटी बेटी का पिता बन चुके थे, लेकिन मेरा जन्म अभी नहीं हुआ था, क्योंकि मेरा जन्म तो बहुत बाद में हुआ। मुझसे से बड़ी तो दो बहनें और एक भाई हैं, जिसमें से एक बहन का इंतकाल बचपन में ही हो गया था और दो आज मेरी ही तरह बाल-बच्चों वाली बन चुकी हैं। दादी को अपने ही देश में शरणार्थी जैसा जीवन बिताना पड़ा। लेकिन एक जैन परिवार दादी और दादा के बारे में सबकुछ जानते थे, क्योंकि उसी जैन परिवार के एक सज्जन श्रेयांस जैन ने दादा को हैदराबाद से दिल्ली भेजने और फिर दिल्ली में सरदार पटेल से भेंट कराने का प्रबंध किया था और इसी भेंट के दौरान दादा ने सरदार पटेल को पड़दादा के सारे कच्चे चिट्ठों का राज थमा दिया था। दादी की इन सज्जन ने बहुत मदद की। इस जैन परिवार ने टैंक बंड से आधा किलोमीटर दूर दोमलगुड़ा

में भगवान महावीर के नाम से एक विद्यालय की स्थापना करने में अहम योगदान दिया था, जिसका ग्राउंड कई एकड़ तक फैला हुआ था। दादी को स्कूल में सेवा करने का अवसर दे दिया गया था, और वहीं निकट ही उन्होंने सिर छुपाने के लिए अपना आसियाना भी बना लिया था।

दादी ने अब्बा को ज्यादा न पढ़ाया, क्योंकि वे पौराणिक विचारों की थी और मानती थी कि अधिक पढ़े-लिखे वालों का दिमाग खराब हो जाता है। वे इसके लिए पड़दादा का उदाहरण दिया करती थीं, जो कभी हाईकोर्ट में वकील रहे थे और फिर हैदराबाद निज़ाम के साथ एक नया पाकिस्तान बनाने का षड्यंत्र रचा था। लेकिन पड़दादा को क्या मिला, जेल और यातना, जबकि निज़ाम सरकार तो मरते दम तक सरकार ही रहे। पहले निज़ाम थे और बाद में राजप्रमुख बने रहे। भले ही उनके अधिकारों में कटौती कर दी गई हो और बाद में जेब खर्च भी बंद कर दिया हो।

20

सरदार बल्लभ भाई पटेल के लिए मुसलमानों के अंदर बहुत ही ग़लत एवं अनावश्यक दुराग्रह था, जबकि सच्चाई यह है कि पटेल तो राष्ट्रवादी मुसलमानों से बहुत हमदर्दी रखते थे। पटेल ने प्रकाशन विभाग को जो कि उनके अधीन था, ऐसी उर्दू पत्रिका निकालने का निर्देश दिया, जो पाकिस्तान की सर्वश्रेष्ठ पत्रिका के समकक्ष हो। और इस तरह जन्म हुआ उर्दू मासिक 'आजकल' का, जिसने अपने पहले अंक में ही उर्दू पत्रकारिता में अद्वितीय स्थान बना लिया था। उर्दू के प्रख्यात शायर जोश मलीहाबादी इसके प्रथम संपादक नियुक्त हुए। वही जोश जिसने लव जिहादी बनकर रुकमणि (रुकैया) का हाथ थामा था। परंतु उनकी नियुक्ति के प्रस्ताव ने अधिकारियों में काफ़ी विवाद खड़ा कर दिया था। उनका नाम पटेल को यूपी की तत्कालीन राज्यपाल सरोजनी नायुडू ने सुझाया था, जिसके पूर्वज कभी निज़ाम राज्य में जी हजूरी कर चुके थे। पटेल के निजी सचिव वी शंकर भी उर्दू के अच्छे ज्ञाता थे। उन्होंने भी इस नाम का अनुमोदन किया। पर इस नाम का संगठित विरोध भी काफ़ी था, क्योंकि जोश प्रमुख कम्युनिस्ट थे और कम्युनिस्टों से पटेल को काफ़ी अलर्जी थी। पटेल ने

अपने सचिव से पूछा, "सुना है कि जोश सुरा और सुंदरी के भी शौकीन हैं?"

"यह आरोप तो उनके ऊपर निराधार है। वह तो औरतों की बहुत इज़्ज़त करते हैं, यहाँ तक कि उन्होंने तो..."

"उन्होंने तो क्या मतलब!"

"एक ऐसी लड़की को जीवन संगिनी बनाया हुआ है, जो सरेआम दुष्कर्म की शिकार हुई थी।" और फिर उसने निज़ाम वाला किस्सा कह सुनाया था, जब रुकैया की नथ तोड़ी गई थी।

"यह तो अच्छा किया उन्होंने, लेकिन फिर भी आपकी दृष्टि में जोश कैसे हैं?"[1]

"उनकी पृष्ठभूमि राष्ट्रभक्ति की रही है। उनकी रचनाएँ अग्रेंजों के विरूद्ध विद्रोह की आग का कार्य करती थीं, इसलिए तो उन्हें विद्रोही कवि कहा गया।"

"ओह, तो ठीक है, उनकी कोई कविता सुनाओ।"

और वे जोश की एक रचना सुनाने लगे थे :

शिकस्ते-ज़िन्दां का ख़्वाब

क्यों हिन्द का ज़िन्दां कांप रहा है, गूंज रही हैं तकबीरें
उकताए हैं शायद कुछ क़ैदी और तोड़ रहे हैं ज़ंजीरें
दीवारों के नीचे आ-आ कर यूं जमा हुए हैं ज़िन्दानी
सीनों में तलातुम बिजली का, आंखों में झलकती शमशीरें
भूकों की नज़र में बिजली है, तोपों के दहाने ठंडे हैं
तक़दीर के लब को तुम्बिश है, दम तोड़ रही है तद्बीरें
आँखों में गदा की सुर्ख़ी है, बेनूर है चेहरा सुलतां का
तख़रीब ने परचम खोला है, सिजदे में पड़ी हैं तामीरें
क्या उनको ख़बर थी, ज़ेरो-ज़बर रखते थे जो रूहे-मिल्लत को
एक रोज़ इसी बेरंगी से झलकेंगी हज़ारों तसवीरें
क्या उनको ख़बर थी, होंटों पर जो क़ुफ़्ल लगाया करते थे

1. रफ़ीक जकारिया की पुस्तक के अलावा यह प्रसंग तेजपाल सिंह धामा की सरदार पटेल की जीवनी जो रजत प्रकाशन मेरठ से प्रकाशित हुई है, उसमें भी प्रामाणिकता के साथ दिया गया है।

एक रोज़ इसी ख़ामोशी से टपकेंगी दहकती तक़रीरें
संभलो! कि वो ज़िन्दां गूँज उठा, झपटो! कि वो क़ैदी छूट गए
उट्ठो! कि वो बैठीं दीवारें, दौड़ो! कि वो टूटीं ज़ंजीरें

शंकर के मुख से जोश की यह रचना सुनकर पटेल इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने उसी वक़्त जोश की नियुक्ति का ओदश दे दिया। पर विभाग के सचिव एनसी मेहता इस आदेश को महीनों दबाये रखे रहे, क्योंकि वे जानते थे कि जोश पाकिस्तान समर्थक हैं और देश का एक गद्दार, जिसके बारे में पटेल के समक्ष उनकी विपरीत छवि अर्थात् देशभक्ति की छवि पेश की गयी है।

एक दिन अचानक शंकर से पटेल ने पूछा, ''जोश ने पत्रिका का काम शुरू किया है कि नहीं?''

''मेरी जानकारी में अभी तो नहीं किया।''

''क्या?'' पटेल की आँखें लाल हो गयी, कोई भी अफसरशाह पटेल के आदेश की अवहेलना कर ही नहीं सकता था, ''मेहता ने मेरी अवज्ञा की, उन्हें इसी समय बर्खास्तगी का पत्र भेज दो और जोश जहाँ भी हों, उन्हें तुरंत बुलवाकर पत्रिका का कार्य सौंप दो।''

जोश को पत्रिका का कार्य सौंप दिया गया। पर वे तो अंदर ही अंदर पाकिस्तान द्वारा भारत पर आक्रमण करने के सपने देखा करते थे। नेहरू से उनकी खूब पटती थी।

जब जोश मलीहाबादी ने 'आजकल' के संपादक का भार संभाला, तो एक दिन वह पंडित जवाहरलाल नेहरू से मिलने गए, ''नमस्ते, पंडित जी।''

''नमस्ते, कहिए कैसे हैं जोश साहब।''

''अल्लाह का करम है।''

''कभी तो पटेल का भी करम समझ लिया करो, वे तो आपके ही महकमे के वजीर हैं, उनसे अब तक मुलाक़ात की या नहीं?''

''नहीं... मैंने उनसे अब तक भेंट नहीं की और न ही करना चाहता हूँ।''

''क्यों?'' नेहरू जी ने पूछा, ''उनसे मुलाक़ात क्यों नहीं करना

चाहते?''

''उनका चेहरा मुजरिमों का-सा है।''

इस पर नेहरू जी ने बड़ा ही कहकहा लगाया और फिर जोश से कहा, ''नहीं...नहीं...आपको उनसे अवश्य मिलना चाहिए। मैं फोन पर अभी आपकी मुलाक़ात तय किए देता हूँ।''

नेहरू जी ने तुरंत फ़ोन लगाया, ''बड़े भाई नमस्कार।''

''नमस्कार,'' उधर से आवाज आई, ''कहिए पंडित जी, कैसे स्मरण किया?''

''स्मरण क्या? जोश साहब आपसे मिलना चाहते हैं।''

''ओह! जोश साहब,'' उधर से आवाज आई, ''अभी भेज दीजिए, उनसे मिलने का इच्छुक तो मैं भी हूँ।''

और फिर जोश साहब, थोड़ी ही देर में पटेल साहब की कोठी पर जा पहुँचे। पटेल धोती बाँधे हुए बरामदे में खड़े हुए थे।

''स्वागत।''

''शुक्रिया,'' जोश साहब ने पटेल से हाथ मिलाते हुए कहा, ''सरदार साहब मुझे आपसे मिलने का ख़ास इश्तयाक़ था।''

''आपको मुझसे मिलने का क्यों इश्तयाक़ था?''

''इसलिए कि मैं आपकी बहुत सी बुराइयाँ सुन चुका हूँ।''

''बुराइयाँ?'' कहकर मधुर सी मुस्कान के साथ वह उन्हें एक कमरे में ले गए, ''आपने यह सुना होगा कि मैं मुसलमानों का दुश्मन हूँ। आप जितने भयंकर स्पष्टवादी हैं उतना ही मैं भी हूँ। इसलिए आपसे साफ-साफ कहता हूँ कि मैं आप जैसे उन तमाम मुसलमानों की बड़ी इज़्ज़त करता हूँ, जिनके खानदान बाहर से आकर यहाँ आबाद हो गये हैं। लेकिन मैं उन मुसलमानों को कतई पसंद नहीं करता जिनका ताल्लुक हिंदू कौम के शूद्रों से है। उन लोगों ने मुसलमानों की हुकूमत के संपर्क में आकर इस्लाम कबूल किया था। ये लोग दरअसल बड़े मुतास्सब, शरी और फिसादी हैं। और कम गिनती में होने के बावजूद ज़्यादा गिनती के हिंदुओं को दबाकर रखना चाहते हैं।''

''सरदार साहब, पहली बात तो यह कि दुनिया के तमाम इनसान

एक ही नस्ल के हैं। मैं जात-पाँत का बिल्कुल भी कायल नहीं। दूसरी बात यह कि यदि आज से दो सौ या तीन सौ साल पहले किसी का परदादा नीच जाति का हिन्दू था, तो क्या आपका ख्याल है कि उसके अंदर जातिगत गुण आज भी हैं? आज भी वह शूद्र ही होता चला आ रहा है।''

''संस्कार कभी बदलते नहीं, जातिप्रथा को मैं भी नहीं मानता। लेकिन नीच जाति के मैं उन्हें मानता हूँ, जिन्होंने कभी मुस्लिम हुकूमत से डरकर इस्लाम स्वीकार किया और अब अपने को पाक समझते हैं। भारत में प्राचीन काल से ही गुणों के आधार पर वर्णव्यवस्था चली आ रही है।''

उनका तर्क-वितर्क चल ही रहा था कि तभी पटेल साहब के सचिव ने आकर कहा, ''आपने महाराजा पटियाला को टाइम दिया था। वह आ गये हैं।''

''ठीक है।'' सचिव की बात का जवाब देकर उन्होंने जोश से कहा, ''बर्खुरदार फिर कभी चर्चा करेंगे। अभी जरा पटियाला महाराज से भेंट कर ली जाए। ये राजा-महाराजा भारत की अंतिम निशानियाँ हैं।''

पटेल महाराजा पटियाला से मिलने चले गये तो जोश कोठी से निकल अपने आवास की तरफ़ चल पड़े, लेकिन तभी उनकी भेंट मौलाना आज़ाद से हो गयी। आज़ाद ने अपनी मोटर रोक कर जोश को आवाज दी, ''जोश साहब, आप और सरदार पटेल?''

जोश ने गर्दन झुका ली, क्योंकि मौलाना आजाद उनकी विचारधारा को जानते थे, ''दोस्ती संस्कृत के देवता और उर्दू समर्थक के बीच...बात कुछ हजम नहीं हुई?''

आजाद का व्यंग्य सुनकर पुलिस एक्शन में हैदराबाद में नष्ट हुई उर्दू संस्थाओं की अर्धसत्य कहानियाँ उसे स्मरण हो आयी।

वह सोचने लगे, ''क्या हिन्दुस्तान को इसीलिए आजाद कराया था कि उर्दू का बेड़ागर्क कर दिया जाए। एक तरफ तो उर्दू पत्रिका का दिखावा और दूसरी तरफ राष्ट्रभाषा हिन्दी बना दी। हिन्दी के रहते उर्दू की उन्नति भला कैसे संभव है।'' फिर उनके कान में दतिया रियासत के वजीरे आजम काजी अजीजुद्दीन के स्वर गूँज पड़े, ''मैंने कहा था ना, हिन्दुस्तान आज़ाद हो गया तो हिन्दू मुसलमानों का तहतेग़ कर डालेंगे।''

फिर मन ही मन एक और विचार उठा, ''पाकिस्तान बनानेवालों ने यह क्यों नहीं सोचा कि जो मुसलमान हिन्दुस्तान में रह जाएँगे उनका हश्र क्या होगा? वे एक-एक मुसलमान को पाकिस्तान क्यों नहीं ले गए।''

पटेल की भेंट जोश से पहले कभी नहीं हुई थी, उनके सामने तो जोश की देशभक्त की छवि पेश की गयी थी। उसी के आवेश में उन्हें संपादक बना दिया गया, लेकिन जैसे ही पटेल से जोश का सामना हुआ तो पटेल उसके अंतर्भावों को तभी समझ गये थे कि मैंने ग़लत आदमी का चुनाव किया है, लेकिन उन्होंने प्रत्यक्ष में कुछ नहीं कहा था। पर यह बात जोश भी भाँप गये थे, पटेल से उनके वास्तविक विचार भला कब तक छिपे रहेंगे, क्योंकि पत्रिका में उन्हें कुछ न कुछ तो अपनी पाकिस्तान परस्ती परोसनी होगी ही और पाकिस्तान परस्ती को हिन्दुस्तानी नेता भला कैसे सहन करेंगे?

जोश काफी दिनों तक पत्रिका निकालते रहे, उन्हें अच्छा खासा वेतन मिलता रहा और सरकारी सुविधाएँ सो अलग। लेकिन वे पाकिस्तान से भी बराबर संपर्क बनाए हुए थे और भारत के कई गुप्त भेद पाकिस्तानी आकाओं को सौंपते रहे। अंततः भारत सरकार के कानों में इस बात की भनक लग गयी और उन्होंने गुप्त रूप से जोश के खिलाफ जाँच करने के आदेश जारी कर दिए, पर इसकी भनक जोश को भी लग गयी कि उसके खिलाफ जाँच की जा रही है। इसलिए वे एक दिन चुपके से पाकिस्तान चले गए। उनके एक आका सिकन्दर मिर्जा तब पाकिस्तान के मुख्य मार्शल लॉ प्रशासक थे, उन्होंने जोश को लाखों रुपए पुरस्कार में देने का वादा कर रखा था। जिन्हें भारत में कभी पद्म भूषण मिला था, उसे पाकिस्तान जिसकी वह प्रत्यक्ष निंदा किया करता था, उसकी धरती पर कदम रखने के बाद पुरस्कार में उन्हें कराची में रिक्शे चलाने के लिए लाइसेंस दिए गए, कुछ सिनेमाघरों में हिस्सेदारी मिली और लाखों रुपए पुरस्कार में मिले।

चाँदी के चंद टुकड़ों के लिए देशभक्त का चोला पहनने वाला एक मुसलमान जोश मलीहाबादी भारत के साथ गद्दारी करके पाकिस्तान भाग गया। उसने सांप्रदायिक सद्भाव को ऐसी चोट पहुँचायी कि उनके इस

कृत्य ने हिन्दुओं में मुसलमानों के प्रति पुराना संदेह फिर जगा दिया। पर जिसने अपने ही वतन से गद्‌दारी की हो, विदेशी उस पर भला कैसे यकीन कर सकते थे? जोश को चाहने वाले वे पाकिस्तानी ज़्यादा दिनों तक नहीं रह सके और पाकिस्तानी जनता ने उन्हें कभी अपना नहीं कहा। उन्होंने प्रायश्चित करते हुए एक बार भारत आने के लिए आवेदन किया, पर कुछ नेता इस बात पर अड़ गए कि जोश एक ही शर्त पर भारत आ सकते हैं कि उन्हें यहाँ आते ही जेल में डाल दिया जाए।

और इस तरह जोश पाकिस्तान में अत्यंत दयनीय स्थिति में रहने लगे। अधिकांश समय वे नशे में धुत्त रहते थे और कोई सम्मान या कोई भी प्रशस्ति उन्हें पाकिस्तान में नहीं मिली। सरदार पटेल को उनके व्यवहार से कहीं अधिक धक्का पहुँचा था। उस धरती के प्रति जोश की गद्‌दारी को सरदार पटेल तो क्या कोई भी भारतीय कभी क्षमा नहीं कर सकता, जिसने उसे इतना कुछ दिया था। उन्होंने 'यादो की बारात' में अपना जीवन कथांश लिखा, लेकिन खेद है कि रुकैया से तलाक़ के बारे में कुछ नहीं लिखा। उन्होंने रुकैया को तलाक़ देकर किसी और से निकाह पढ़ लिया था। इसी बात से निज़ाम सरकार रुष्ट हो गए थे।

1925 में जोश ने उस्मानिया विश्वविद्याल हैदराबाद रियासत में अनुवाद की निगरानी का कार्य शुरू किया था, परन्तु उनका यह प्रवास हैदराबाद में ज़्यादा दिन न रह सका, क्योंकि रुकैया को छोड़ देने के बाद निज़ाम सरकार ने अपने राज्य से ही निष्कासित कर दिया। कालांतर में रुकैया भी पाकिस्तान चली गई थी और जोश भी। अपने जीवन की संध्या में पाकिस्तान में जोश जहाँ गरीबी की मार झेल रहा था, वहीं भारत के दिल्ली और हैदराबाद जैसे नगरों में उसकी अकूत संपत्ति थी, लेकिन उसे हासिल करे भी तो कैसे! वह तो स्वयं दिल्ली आ नहीं सकता था, क्योंकि आते ही उसे जेल में डाल दिया जाता। हालाँकि उन्होंने 'शालीमार' पिक्चर्स के लिए गीत लिखे हैं और इस दौरान वे अत्यंत अल्प समय के लिए पुणे में भी आए, लेकिन गिरफ्तारी की आशंका से बॉलीवुड में जम न सकें और जल्दी ही पाकिस्तान पुनः भाग गए थे। रुकैया दादी बन चुकी थी और जोश का बुढ़ापे में उसके प्रति प्रेम जागा था, क्योंकि उसकी दूसरी

बीवी के बच्चों ने उसकी सेवा करने से किनारा कर लिया था। बूढ़े मलीहाबादी में अब जोश नहीं था, इसलिए सारे बच्चे उससे किनारा करते थे। परंतु जब उसने मरने से ठीक एक दिन रुकैया के पौत्र अयाज़ को बताया कि दिल्ली और हैदराबाद में मेरे नाम से कुछ संपत्ति है और हवेलियों पर तो अब तक ताले ही जड़े हुए हैं, तो अयाज़ इस संपत्ति को पाने की जुगत भिड़ाने लगा। पाकिस्तानी नागरिक होते हुए वे भारत में किसी भी संपत्ति पर दावा नहीं ठोक सकते थे। इसी सोच-विचार में दिन, महीने और फिर साल दर साल गुजरते चले गए। 22 फरवरी, 1982 को जोश इस दुनिया को अलविदा कह गए।[1]

इसके बाद अयाज ने और उसकी हमसफर अशरफी बेगम ने अजमेर शरीफ में जियारत करने और दिल्ली एवं हैदराबाद के ऐतिहासिक स्थलों को देखने के लिए एक तीर्थयात्री एवं पर्यटक के रूप में आखिरकार वीज़ा हासिल कर ही लिया और वे करांची से हवाई जहाज़ द्वारा नई दिल्ली पहुँचे। अशरफी गर्भ से थी और उसे आठवाँ महीना चल रहा था, लेकिन उन्हें एक महीने में ही पाकिस्तान वापस लौट जाना था। परंतु अजमेर में जियारत करने के बाद जब वे हैदराबाद में गए तो अचानक ही अशरफी बेगम को पेट दर्द की शिकायत बार-बार होने लगी, तो उन्हें किंग कोठी अस्पताल में भर्ती करा दिया गया, जहाँ उन्होंने एक फूल-सी बच्ची को जन्म दिया।

किंग कोठी वही अस्पताल है, जिसमें निज़ाम सरकार ने अपने जीवन के अंतिम दिनों का बहुत हिस्सा तनहाई में गुजारा था। जनवरी 1967 में एक दिन मेरी अम्मी, जो तब तक क्वारी ही थी, निज़ाम सरकार की खैर खबर लेने गई थी, उन्होंने दूर हठो...दूर हठो.. कहकर उनका स्वागत किया था। यानी कि वे जीवन के अंतिम दिनों में इतने भयभीत रहते थे कि उन्हें लगता था कि कोई उनकी हत्या न कर दे। वे भारत सरकार से ज़्यादा खफा थे, जिसने उनके राज्य को ले लिया। लेकिन ईश्वर ने राजाओं को लंबा शासन दिया ही कहाँ है? खैर फरवरी 1967 में ही वे बस चले और हैदराबाद समेत आसपास के समस्त क्षेत्रों में कई दिनों तक किसी भी

1. पाकिस्तानपरस्त जोश, अब्दुल खान, लाहौर

मुस्लिम परिवार के घर में चूल्हा नहीं जला। मुस्लिम लोग तो उसे ही सरकार कहते थे, अम्मी ने भी बताया था कि उन्होंने भी दो दिनों तक खाना नहीं खाया था। और वही किंग कोठी बाद में अस्पताल बना दिया गया। खैर! बात अशरफी देवी के बच्ची पैदा होने की चल रही थी, तो हम बता दें कि इस बच्ची के जन्म के साथ ही जोश परिवार की कहानी में अब एक नया मोड़ आया। जोश मलीहाबादी खुद तो जीते-जी कभी भारत नहीं आ सके, लेकिन उनके मरने के बरसों बाद उनकी पौत्री न केवल भारत आ गई, बल्कि पैदा होते ही भारत की नागरिकता का प्रमाण पत्र भी उसने हासिल कर लिया था।

जन्म से ही भारत की नागरिक होने का गौरव भी उसने हासिल कर लिया था और हैदराबाद एवं दिल्ली में जोश की बेनाम और लावारिश पड़ी अकूत संपत्ति की एकमात्र कानूनन वारिस बन गई थी। जोश की इस पौत्री का नाम सना[1] रखा गया। भले ही उसे जन्म होते ही कोर्ट कचहरियों के चक्कर क्यों न काटने के लिए तैयार किया गया हो। सना को एक रिश्तेदार के यहाँ इस शर्त पर छोड़ दिया गया कि वह रिश्तेदार न केवल सना का पालन-पोषण करेगा वरन् उसे जोश की सारी संपत्ति हासिल करने के लिए कानूनी मदद भी मुहैया करायेगा। परंतु इस एवज में रिश्तेदार ने हासिल होने वाली संपत्ति में से कुल मिलाकर आधा हिस्सा लेने की शर्त रखी थी और सना के बड़ी होने पर उसे अपने बेटे की बेगम बनाने की इच्छा भी पहले ही दर्शा दी थी।

21

जिस उर्दू मॉडल स्कूल में सना की प्रारम्भिक शिक्षा शुरू हुई थी, उसी में मेरी अम्मी ने मेरा भी दाखिला करवाया था और सना मेरी ही कक्षा में थी। वह पढ़ने में बहुत होशियार थी, लेकिन थोड़ी घमंडी भी थी। घमंड तो उसे विरासत में मिला था। हमारी एक और सहपाठी थी वसंता।

सना से मेरी ज़्यादा नहीं बनती थी, लेकिन वसंता मुझे बहुत चाहती

1. 'सना' यह काल्पनिक नाम है, लेकिन यह पात्र सत्य घटना पर ही आधारित है।

थी और अपनी छोटी बहन से ज़्यादा लाड़-प्यार करती थी। वसंता के दादा राजपाट चले जाने के बाद निज़ाम सरकार की रसोई में कभी मछलियाँ और अन्य खाद्य पदार्थ सप्लाई किया करते थे। वसंता का हमारे घर में खूब आना-जाना रहता था।

हमारे ही घर में एक सुंदर युवक जावेद का भी आना-जाना रहता था। लेकिन वह लव जिहादी केवल वसंता की चाहत में ही आता था। लड़की की जात बहुत जल्दी जवान हो जाती है, इसलिए वसंता भी जवानी की दहलीज पर कब कदम रख गई, पता ही नहीं चला। हमने उर्दू और अरबी के साथ-साथ इस्लाम की तालीम योग्य गुरुओं से हासिल की थी, इसलिए मैं मोहल्ले की कुछ बच्चियों को कुरान शरीफ पढ़ाने लगी थी और उसकी एवज में मुझे कुछ दक्षिणा भी मिल जाती थी, जिसे मैं एक गुल्लक में इकट्ठा करती रहती थी।

22

बात उन दिनों की है जब अफगानिस्तान के बामियान में शांतिदूत महात्मा बुद्ध की मूर्तियों को तोप से उड़ाया जा रहा था, तो अफगान से जमात के रूप में एक प्रतिनिधिमंडल हैदराबाद में आया था। उस विदेशी प्रतिनिधिमंडल के अधिकांश सदस्य ख़ूंख़्वार आतंकी ओसामा बिन लादेन की विचारधारा से प्रभावित लगते थे और गुप्त रूप से जगह-जगह मुसलमानों की बैठकें आयोजित कर रहे थे। उनके साथ कुछ मुस्लिम औरतें भी आई थी और वे औरतें पुरुषों की तरह ही मदरसों में पढ़ने वाली मुस्लिम लड़कियों को भी संबोधित किया करती थी। एक दिन मैं, सना और वसंता भी बुरकानशीं होकर उनकी मीटिंग में पहुँची थी। तो एक उपदेशक ने कुरान की कई पाक आयतें कहने के बाद अपनी बात कुछ इस प्रकार रखी थी, ''इस्लाम खतरे में है और हमें इसकी रक्षा करनी है। इस्लाम की रक्षा करने के लिए युवाओं और युवतियों को आगे आना होगा। काफ़िरों को अधिक से अधिक संख्या में मुसलमान बनाकर इंडिया में मुस्लिमों की आबादी बढ़ानी होगी। इसके लिए युवा सबसे अच्छी पहल कर सकते हैं। युवकों को चाहिए कि वे अधिक से अधिक इस कोशिश

में रहें कि अपने साथ शादी के लिए हिन्दू लड़कियों को ही प्रेरित करें, क्योंकि किसी एक हिन्दू लड़की को मुस्लिम बनाने से नौ बार हज करने जितना शबाब मिलता है।''

''और युवतियों को क्या करना चाहिए।'' चंचल सना ने पूछ लिया था।

''युवतियों को हिन्दू लड़कों से शादी करनी चाहिए।''

''लेकिन इस तरह तो वे ढेड़ बन जाएँगी और उनकी संतानें भी ढेड़ ही होंगी, क्योंकि भारत पुरुष प्रधान देश है और यहाँ तो नारी को पुरुष का ही कुल एवं गौत्र अपनाना पड़ता है।''

''इस्लाम में कुल और गौत्र के लिए कोई स्थान नहीं। पुरुष बहुत कमजोर होता है, वह युवतियों के झाँसे में जल्द आ जाता है। इसलिए इस्लाम की रक्षा के लिए अब नए शस्त्र के रूप में मुस्लिम युवतियों को चाहिए कि वे धनवान और प्रतिष्ठित हिन्दू युवकों को प्रेमजाल में फँसाकर उन पर शादी के लिए दबाव डालें और जब शादी की तिथि निश्चित हो जाए तब यह शर्त रखें कि शादी मुस्लिम पद्धति से होगी और निकाह पढ़ने से पहले उसे खतना करवाकर बाकायदा इस्लाम स्वीकार करना होगा। और यदि ऐसा नहीं करता तो छेड़छानी एवं अस्मत से खेलने के जुर्म में जेल की हवा खिला दी जाएगी। और होगा... यह संभव होगा हिन्दू युवक मुसलमान बनेंगे और निकाह के बाद यदि मुस्लिम युवती उस काफिर को तलाक भी दे देगी तो वह दोबारा हिन्दू बनने वाला नहीं, क्योंकि जो हिन्दू मुसलमान बन जाता है उसे फिर हिन्दू धर्म में अछूत और शूद्र कहा जाता है और हिन्दू समाज उसका हुक्का पानी बंद कर देता है। रवीन्द्रनाथ ठाकुर के प्रपितामह के भाई इसके उदाहरण हैं अरे और तो और इंडिया में जिसे राष्ट्रपिता कहते हैं, उसका एक पुत्र 'हरिलाल' भी मुसलमान बन गया था, फिर साधारण हिन्दू युवक मुसलमान क्यों नहीं बनेंगे?''

फिर किसी ने कोई सवाल नहीं किया, वह बोलता रहा।

''वोटों के लालची, हिन्दुत्व के गद्दार यहाँ के कई नेता भी मुस्लिमों के पक्ष में हैं। हमारी ऐसे नेताओं से बात हो चुकी है, उन्होंने आश्वासन दिया है कि ऐसा कानून बना दिया जाएगा कि मुस्लिमों को हर क्षेत्र में

आरक्षण मिलेगा। गरीबी की रेखा से नीचे का राशन कार्ड हैदराबाद के हर मुसलमान को मिलेगा। इसलिए मुस्लिमों की संख्या बढ़ानी होगी। इंडिया में लोकतंत्र है और लोकतंत्र में मुंडियाँ गिनी जाती हैं। यदि हमने अपनी मुंडियाँ बढ़ा ली तो एक दिन हिन्दुस्तान का ताज फिर से मुस्लिमों के सिर पर ही होगा।''

खैर उसकी बकवास लंबी देर तक चली और सब शांत होकर सुनती रहीं। जब हम वहाँ से निकले, तो सना ने कहा, ''मैं तो सात शादियाँ करूँगी और मेरे सातों ही दूल्हे हिन्दू होंगे, जिन्हें मैं मुसलमान बना दूँगी।''

''सात!'' मैं तो लगभग चौंक गई थी, ''तू गधी है क्या? क्या एक से काम नहीं चलेगा।''

''आजकल बराबरी का जमाना है। जब कानूनन मुस्लिम युवक चार शादियाँ कर सकता है तो फिर लड़कियाँ चार शादियाँ क्यों नहीं कर सकती, इसलिए मैंने तो सोच लिया है कि पुरुषों की मानसिकता बदल कर रख दूँगी।''

खैर चलते-चलते हमारी हँसी मज़ाक चल ही रही थी कि जहाँ से हम गुजर रही थीं, तो हमने देखा कि दो बुरके वालियों की लंबाई सामान्य से कुछ अधिक लग रही थी, जो तेजी से हमसे आगे निकल गई। लेकिन जब वे पास से गुजरी तो कुछ बड़बड़ा रही थी और उनकी आवाज़ एकदम पुरुषों जैसी थी। सना, मैं और वसंता ने थोड़ा पीछे रहकर इस मुद्दे पर चर्चा की कि ये लड़कियाँ नहीं पुरुष हैं, जो बुर्का पहनकर मीटिंग में भाग लेने आए थे।

''कहीं ये आतंकी तो नहीं...।'' मैंने शंका की थी, ''यदि ऐसा है तो पुलिस को सूचित करना चाहिए।''

''नहीं पहले देख तो लें, जासूस भी हो सकते हैं।''

हम थोड़ा रुके हुए थे और फिर तेजी से उनका पीछा करने के लिए आगे बढ़े तो हमें कोई नजर नहीं आया। वे जा चुके थे। खैर वे कौन थे हमें नहीं पता, लेकिन अगले दिन हैदराबाद के प्रख्यात हिन्दी दैनिक 'स्वतंत्र वार्ता' में एक समाचार छपा,[1] जिसका शीर्षक था, ''हैदरबाद में

1. यहां अखबार का नाम और पत्रकार का नाम वास्तविक है, यह पत्रकार धर्मेंद्र पंत आजकल पीटीआई न्यूज एजेंसी में खेल संवाददाता हैं।

है लादेन की बीवी'' और भी बहुत कुछ समाचार में लिखा गया था। इस समाचार को धर्मेन्द्र मोहन पंत की बाई लाईन से प्रकाशित किया गया था। तब हमारी समझ में आया कि वे बुरके वाली खुफिया पत्रकार थे। लेकिन इस समाचार के छपने से हैदराबाद में तहलका मच गया और और कई तरह की अफवाहें और प्रतिक्रियाएँ देखने को मिली। उर्दू अखबारों ने इस समाचार का जोरदार खंडन भी छापा। कठमुल्लाओं के दबाव में धर्मेन्द्र पंत की नौकरी चली गई और बाद में उन्होंने दिल्ली में पीटीआई समाचार एजेंसी में खेल संवाददाता के रूप में ज्वाइन किया।

23

सना देखते ही देखते मेरी तरह ही जवान हो गई थी और पढ़-लिखकर एक प्रसिद्ध फैशन डिजायनर बन चुकी थी। उस दिन रैम्प पर मॉडल्स कैटवॉक कर रही थीं।[1] फोटाग्राफरों के कैमरे क्लिक हो रहे थे; तालियों की गड़गड़ाहट से दर्शक दीर्घा गूँज रही थी। फैशन फोटोग्राफर रोनी मॉडलों की पोज शूट करते हुए अपने साथी 'मोंटी' से धीरे से कह उठा था, ''An empty door will tempt the saint''

''मुफ्त की शराब काजी को भी हलाल।'' मोंटी ने कहा था।

''यारो के साथ रहेगा तो ऐसी ही ऐश करेगा!''

''हसीनाओं के फोटो शूट करने को ऐश कहते हो और उसे क्या कहोगे?'' फिर उसने फैशन डिजायनर सना की ओर इशारा करते हुए कहा, ''क्या माल है?''

''अबे साले...माल किसको बोला रे...''

''गुस्सा क्यों करता है यार...सब चलता है।''

''मान सब चलता है, But Not Here!''

''Why!''

''She is My Dilruba, ये जो गुल खिल रहे हैं इन्हीं की तो करामात है।''

1. यह सत्य घटना है, लेकिन यहाँ हमारे पात्र का नाम काल्पनिक है, जबकि कहानी का आधार पूर्ण रूपेण सत्य ही है और कथावस्तु समाज का सही दर्पण दिखाने के उद्‌देश्य से प्रेरित है।

''फैशन डिजायनिंग में तो कमाल हैं।''

''तभी तो बड़े-बड़े डिजायनर इन्हें गुरु और ट्रेंड सैटर की तरह समझते हैं।''

''इस तरह के गुल खिलाएँगी तो गुरु तो मानना ही पड़ेगा।'' कैटवॉक करतीं एक खूबसूरत मॉडल्स की ओर देखते हुए उसने कह दिया था।

रोनी ने मुस्कराते हुए अपने दिल की बात कह दी, ''देखते जाओ आगे-आगे क्या गुल खिलाती हैं!''

तभी कैटवॉक करतीं एक खूबसूरत मॉडल्स के विशेष डिजाइन किए वस्त्र की चुन्नी खिसक गई और वह बैठती हुई झुकती सी अपने उरोजों को ढकने का प्रयास करने लगी, तभी कैमरों की क्लिक से अनेकों फोटो खिंच गये। मोंटी ने भी क्लिक करते हुए कहा, ''लो खिला दिया ना गुल As gods so are the worshippers. पॉपुलरटी पाने के लिए मॉडल्स से क्या-क्या करवा देती हैं फैशन डिजायनर नंबर वन सना...'' रोनी की ओर कटाक्ष करते हुए उसने अपने मन की बात आखिर कह ही दी थी। रैंप पर कपड़े उतारने की यह घटना अखबारों की खूब सुर्खियाँ बनी थी।

24

''यह तो मुझ पर सरासर आरोप है।'' सना अपनी कार्यशाला में बड़ाबड़ा उठी थी।

उस समय सना किसी मॉडल्स से जो केवल ब्रा पहनी हुई थी, उसके सीने से नए वस्त्र लगा-लगाकर देख रही थी। पास ही रोनी खड़ा था जला-भुना सा। हाथ में कुछ पत्रिकाएँ थीं, जो उसको दिखा रहा था। रैम्प पर कपड़े गिरने वाली मॉडल्स की अर्धनग्न-सी तस्वीरें पत्र-पत्रिकाओं में प्रमुखता से छापी गई थीं।

''यदि यह आरोप है तो फिर यह सब क्या है सना?'' गंभीर हो गया था रोनी।

सना पत्रिकाओं की ओर देखकर मुस्कराई तो मॉडल्स चली गई।

''सना! इन पत्रिकाओं ने कैसे छाप दिया कि पॉपुलरटी पाने के लिए

आपने जानबूझकर ऐसे कपड़े डिजाइन किए, जिससे वे कैटवॉक के समय उतर जाएँ।''

''और मैं Headlines में आ जाऊँ, यही कहना चाहते हो ना तुम!'' भड़क उठी थी सना।

''देखो सना तुम जिस रास्ते पर चल रही हो वह ठीक नहीं है।''

''क्या ठीक नहीं है?''

''तुम कॅरियर की ऊँचाई पाने के लिए बने बनाए रास्तों को नहीं छुना चाहती। अंगारों पर पैर रखना ठीक नहीं to invite trouble.''

''लकीर का फकीर बनना मेरी फितरत नहीं है।''

''इसका मतलब यह तो नहीं कि तुम इन्नोवेटिव तरीके से बिना किसी संस्कार की परवाह किए कोई भी बोल्ड कदम उठा लो।''

''बोल्ड कदम!'' वह मुस्कराई, ''...चलो शर्ट उतारो!''

''क्या?''

''हाँ बा ऽ बा ऽ...नई फैशनेबल शर्ट तैयार की है, देखती हूँ कैसी लगेगी।'' कहते हुए सना फैशन किया डिजाइन वस्त्र उसकी छाती को लगाने लगी थी कि कैसी जँचेगी और दोनों रोमांटिक मूड में आ गये थे।

25

मैं बता ही चुकी हूँ कि जावेद और वसंता दोनों ही हमारे घर आया करते थे। लव जेहादियों के उकसाने पर जावेद ने वसंता पर डोरे डालने पहले ही शुरू कर दिए थे, क्योंकि वह एक हिन्दू युवती थी और मैं भी चाहने लगी थी कि लव जिहाद की शुरुआत जल्द से जल्द होनी चाहिए। इसलिए सबसे पहला निशाना वसंता ही बनाई गई। वसंता ने एक दिन मुझसे कहा था, ''यह जावेद बड़ा शरारती है।''

''क्यों तुम्हारे साथ कुछ किया क्या?''

''अकेला पाते ही मुझे छेड़ता है।''

''फिर उससे शादी क्यों नहीं कर लेती? उससे अच्छा दूल्हा कहाँ मिलेगा। सरकारी ड्राइवर है। सरकारी नौकरी वाला दूल्हा मिलता ही कहाँ है।''

''लेकिन मैं एक हिन्दू होकर मुल्ला से शादी कैसे कर सकती हूँ?''

''जोधाबाई अकबर से कर सकती है, तो तू क्यों नहीं, फिर किस जमाने की बात करती है तू। यह जात-पाँत धर्म सब घिसे-पिटे हैं।''

''नहीं...फिर भी धर्म के बिना जीवन तो अधूरा ही है...क्या वह हिन्दू बन सकता है?''

''इसका मतलब तू उससे प्रेम करती है, लेकिन वो हिन्दू नहीं बनेगा। ईमान छोड़कर बेईमान कौन बनना चाहेगा।''

वसंता मांसाहारी थी और एक दिन उसे मांस खिलाकर जब बताया गया कि उसने गोमांस खा लिया है अब वह हिन्दू नहीं रही तो उसके बाद उसने अपने आपको मुसलमान ही मान लिया और स्वेच्छा से इस्लाम धारण कर लिया और जावेद से शादी कर ली। लेकिन इसके बाद हिन्दुओं में जो तूफान मचा, अल्लाह ही बचाए उससे तो। एक दिन तो कई हिन्दू हमारे घर पर चढ़ आए थे मारपीट के लिए, उनका आरोप था कि हमने वसंता को किसी मुस्लिम लड़के के साथ भगा दिया है। लेकिन हमारे घर में तीन औरतें ही थी उस दिन, यदि कोई पुरुष होता तो पता नहीं क्या होता? और उन हिन्दुओं ने नपुंसकों की तरह हथियार डाल दिए, औरतों को थोड़ी बहुत गाली-धुपड़ के सिवा कुछ नहीं किया।

26

वसंता के गोमांस खाने के बाद हिन्दू धर्म छोड़ने पर एक धारणा तो पक्की हो गई कि जो हिन्दू मुसलमान नहीं बनना चाहता उसे किसी भी तरह गोमांस खिला दो और फिर सच-सच बता दो तो वह अपना धर्म स्वयं ही छोड़ देगा। इस घटना से कुछ कट्टर मुसलमानों को बहुत प्रेरणा मिली और अलकबीर बूचड़खाना, जिसे बंद कराने के लिए स्वामी आनंद बोध सरस्वती तक आंदोलन कर चुके थे, जिस आंदोलन में लाल सिंह आर्य के बड़े भाई के पौत्र नील ने भी भाग लिया था, उस कत्लखाने से ज़्यादा गौकसी वीरान जगहों पर होने लगी और वह गोमांस ऐसी जगह भेजा जाने लगा, जहाँ से मांसाहारी हिन्दू मांस खरीदा करते थे।[1] गोमांस उन हिन्दू

1. तेलगू वार्ता, हैदराबाद 8 दिसंबर 2006

होटलों में भी सप्लाई किया जाने लगा, जिनमें मांसाहार पकाया जाता था। और एक दिन तो चमत्कार ही हो गया, एक हिन्दू होटल पर पुलिस ने छापा मारकर भारी मात्रा में गोमांस बरामद किया और परीक्षण के लिए लैब में भेज दिया, मजेदार बात तो यह है कि उस हिन्दू होटल का मालिक एक प्रख्यात हिन्दूवादी राजनैतिक पार्टी का नेता था।

27

वसंता के बाद अगली निशाना बनी रेणु,[1] जिसे सना के एक मित्र मस्तान ने प्रेम जाल में फँसाया और शादी के लिए जोर डाला। लेकिन इस मामले का शादी से पहले ही भंडाफोड़ हो गया और रेणु के माता-पिता ने उसकी हत्या कर दी और उस हत्या को आत्महत्या का रूप दे दिया गया, कई दिनों तक मामला अखबारों की सुर्खियों में रहा, लेकिन मुस्लिम युवक इससे दबनेवाले नहीं थे। हैदराबाद के एक प्रख्यात मुस्लिम सांसद ने लव जिहाद की कमान अब अपने हाथ में ले ली थी और इसी क्रम में एक साल के अंदर सौ से अधिक हिन्दू लड़कियों को मुसलमान बनाया गया। यह लव जिहाद बड़ी तेजी से प्यार की पींगे बढ़ा रहा था, लेकिन एक दिन अचानक लव जिहाद ब्रेकिंग लव बन गया।

दरअसल कट्टर हिन्दू परिवार और भाजपा से संबंध रखने वाली पल्लवी को एक मुस्लिम युवक ने फँसाने की बहुत कोशिश की, लेकिन जब वह कामयाब न हुआ तो एक नेता की सलाह पर पल्लवी का अपहरण कर लिया गया और उसका मुस्लिम युवक के साथ जबर्दस्ती निकाह पढ़वाया गया।[2] इस घटना ने हिन्दुओं को आक्रोशित करके रख दिया था और वे सड़कों पर उतर आए थे।[3] लेकिन पल्लवी का मुसलमान बनाया जाना मुल्लाओं के लिए बहुत जरूरी था, क्योंकि आंध्रा में हिन्दुओं में कट्टरता बढ़ रही थी और भारतीय जनता पार्टी के बंडारू दत्तात्रेय पहली बार सांसद बने थे और कई एमएलए आंध्रा से पहली बार चुने गए थे।

1. स्वतंत्र वार्ता, हैदराबाद 16 जनवरी 2006
2. स्वतंत्र वार्ता, 25 अक्टूबर 2005
3. स्वतंत्र वार्ता, 19 नवंबर 2005

कट्टरपंथियों को राजनीति की अपनी रोटी तवे पर जलती नजर आने लगी थी। लेकिन इन घटनाओं से सरकार घबरा उठी थी और उसने आनन-फानन में इस पर लगाम लगाने के उपाय सोचने शुरू किए।

क्योंकि मुसलमान कई शादी कर सकते हैं, इसलिए आंध्रा में एक कानून ऐसा भी बनाने के लिए तैयार किया गया कि अब हिन्दू भी एक से अधिक विवाह कर सकता है। इसका एक तर्क यह भी दिया गया कि आंध्रा में हिन्दुओं में लड़कियों का अनुपात लड़कों की अपेक्षा अधिक है। इस कारण कई हिन्दू लड़कियाँ शादी से वंचित रह जाती हैं और वे सहज ही मुस्लिम युवकों से शादी करने के लिए प्रेरित हो जाती हैं या फिर अवैध संबंधों को इससे बढ़ावा मिलता है। लेकिन मुसलमानों के वोट की चहेती देश पर सबसे अधिक शासन करने वाली कांग्रेस पार्टी हिन्दुओं के लिए ऐसा कानून भला कैसे बनने देती। सबसे पहला विरोध कांग्रेस ने ही किया[1] और ऐसे कानून को देश की संस्कृति के विपरीत बताया। लेकिन क्या मुसलमानों में एक से अधिक विवाह देश की संस्कृति के खिलाफ नहीं है। यदि मुसलमानों का मामला धर्म से जोड़ा जाए तो क्या हिन्दू राजा-महाराजा एक से अधिक विवाह नहीं करते थे। क्या भगवान राम की कई माताएँ नहीं थी, तो फिर इस कानून पर कांग्रेस को सबसे पहले आपत्ति क्यों हुई, यह तो कांग्रेस ही जाने, लेकिन यदि ऐसा होता, निश्चित रूप से हिन्दू युवतियों के धर्मांतरण पर रोक काफी हद तक लगनी संभव थी, ऐसा मेरा मानना है।

28

उस दिन रोनी अपने मित्र मोंटी के साथ बिग बाजार में खरीदारी करने के लिए गया था। रोनी शूज देख रहा था, ''यह चलेगा।'' कहते हुए उसने शूज सलैक्ट कर लिया था, फिर मोंटी की ओर मुखातिब होकर कहा, ''यार तू भी भाभी के लिए कुछ ले ले।''

''भाभी के लिए, अरे अभी तो तुमने शादी की ही नहीं, फिर मैं भाभी के लिए क्या गिफ्ट खरीदूँ।''

1. स्वतंत्र वार्ता, अप्रैल 2006

''अरे यार मैं अपनी भाभी के लिए कह रहा हूँ यानी कि तुम्हारी छम्मक-छल्लो के लिए।''

''ओह! तो ऐसा कह ना, लेकिन क्या लूँ यार....'' होंठों पर उँगलियाँ रखते हुए मोंटी ने कहा, ''ठीक है एक जोड़ी सैंडल ले लेता हूँ।''

''लेडीज सैंडल?''

''एक जोड़ी लेडीज सैंडल दिखाओ।''

''किस नंबर के?'' सेल्समैन पूछ बैठा था।

मोंटी ने पीठ से शर्ट उठाकर पीठ सेल्समैन की ओर कर दी थी, ''नंबर पता नहीं साहब, लेकिन पीठ पर बीवी के सैंडल की छाप पड़ी हुई है, इसी नाप की दे दे मेरे भाई।'' सिसकी सी भरने लगा था। मोंटी वास्तव में खूब मज़ाकिया है। मज़ाक-मज़ाक में सिसकी सी भरने लगा ही था कि तभी सना भी वहाँ आ पहुँची थी, ''हाय रोनी...''

''हाय।''

''तुम और यहाँ!''

''क्यों मैं यहाँ नहीं आ सकता? क्या शॉपिंग का ठेका लड़कियों ने ही ले रखा है।''

''नहीं बाबा, ऐसी बात नहीं।''

''ऐसी बात नहीं तो फिर?''

''आप तो इतने फैमश फोटोग्राफर हैं कि....?''

''हर सामान गिफ्ट में मिल जाता होगा, यही कहना चाहती हो ना।''

''नहीं बाबा ऐसी भी बात नहीं।''

''ऐसी बात नहीं तो फिर कैसी बात है?'' मुसकराकर उसकी नकल उतारता है, ''चलो मेरी बात छोड़ो तुम सुनाओ आज क्या खरीद रही हो।''

''विवटैक्स के कुछ नए फैब्रिक सैंपल आए हैं। सोचती हूँ ले ही लूँ।''

''विवटैक्स के नए फैब्रिक सैंपल! उसके लिए यहाँ आने की ज़रूरत क्या थी!''

''तो फिर कहाँ जाती?''

''विवटैक्स के एमडी का बेटा रोहन मेरा बेस्ट फ्रेंड है, मैं उनसे कह दूँगा, सारे सैंपल आपके घर ही भिजवा देगा।''

''विवटैक्स के एमडी का बेटा आपका मित्र?''

''क्यों क्या किसी बड़े उद्योगपति का बेटा मेरा फ्रेंड नहीं हो सकता?''

''नहीं ऐसी बात नहीं।''

''तो फिर?''

''सोचती हूँ फिर तो रोहन सिंहानिया से आज मिल ही लूँ।''

''हाँ क्यों नहीं मैं फोन करके अप्वाइंटमेंट फिक्स कर देता हूँ।'' और मोंटी तभी फ़ोन मिलाने लगा था।

29

उस दिन रोहन अपने चैंबर में बैठा हुआ कुछ लिख रहा था। दरवाजे पर दस्तक हुई तो अचानक ही उसके मुँह से निकला, ''कम इन।'' सना को देखते ही उसने मुसकराकर उसका स्वागत किया, ''वेल्कम सना जी।''

''गुड मोर्निंग सर!''

''गुड मोर्निंग।''

''सर ऽ ऽ ऽ''

''सना जी सर नहीं हमें केवल रोहन कहिए।''[1]

''High winds blow on high hills but आप तो बहुत साधारण हैं। फिर तो आप भी हमें सना जी नहीं केवल सना कहिए।''

''ओके...क्या लेंगी ठंडा या गर्म।''

''कोल्ड लेकर रोल्ड कौन होना चाहेगा!''

''बहुत खूब'' उसने फोन पर इंटरकाम नंबर घुमाते हुए आगे कहा, ''टू हॉट कॉफी..'' फिर एक सैंपल उनकी ओर करते हुए सना से मुखातिब हुआ था, ''टैक्सटाइल इंडस्ट्रीज का सबसे लेटेस्ट फैब्रिक सैंपल है।''

''इससे लेटेस्ट तो आप हैं।'' धीरे से कहकर मुसकरा उठी थी सना

1. यह सत्य घटना है, लेकिन पात्र का नाम काल्पनिक है, क्योंकि बहुत बड़े उद्योगपति से इस घटना का संबंध रहा है।

और सैंपल को देखने लगी थी।

''क्या मतलब।'' कहकर रोहन फिर मन-ही-मन में जैसे कह उठा था, 'सैंपल तो तुम्हें बनाया है ऊपरवाले ने।'

''हम ऐसा सैंपल देखना चाहते हैं, जो अभी मार्केट में न गया हो।''

''हाँ...हाँ...क्यों नहीं, लेकिन...''

''लेकिन क्या?''

''ऐसा सैंपल तो पॉवरलूमों पर विविंग हो रहा है।''

''तो क्या हमें पॉवरलूम नहीं दिखाएँगे।''

''हाँ...हाँ...क्यों नहीं लेकिन आज तो...''

''आज तो क्या?''

''It is Holiday, कारखाने में कोई भी वीवर नहीं होगा।''

''यह तो और भी अच्छा है।'' कहते हुए उठ खड़ी हुई थी सना और रोहन का हाथ पकड़ लिया था।

''तुमने तो मेरे मन की बात कह दी।'' रोहन ने खड़ा होते हुए उसका हाथ धीरे से दबा कर उसकी हथेली पर धीरे से खुजा दिया था। सना ने मुस्कराते हुए हाथ छुड़ा लिया था।

30

बड़े हॉल में पॉवरलूम मशीनें लगी हुई थीं, रोहन व सना दोनों हॉल में अकेले थे। रोहन ने हत्था दबाकर एक पॉवरलूम को चालू कर दिया था और सना उसी पॉवरलूम पर बुने जा रहे कपड़े के डिजाइन को देख रही थी। मशीन में शटल इधर-उधर दौड़ने लगी थी।

''वाह! कितना सुंदर फैब्रिक है, इससे तो ऐसा फैशनेबल डिजाइन तैयार हो सकता है कि...'' सना ने बात अधूरी ही छोड़ दी थी।

''तुम्हारा नेशनल अवॉर्ड पक्का!'' रोहन ने छूटी बात आगे बढ़ा दी थी।

''But.''

'' Why?''

''यह मार्केट में गया तो और कोई फैशन डिजायनर इस सैंपल का

यूज कर सकती हैं।''

''तो नहीं जाएगा मार्किट में...क्या हम तुम्हारे लिए इतना नहीं कर सकते।''

''लेकिन मार्केट में न जाने से तो आपका बहुत नुकसान हो जाएगा?''

''Early sow early mow में हम विश्वास नहीं करते।''

''तो किसमें विश्वास करते हैं आप!''

''हम तो कहते हैं कुछ पाने के लिए कुछ खोना भी पड़ता है माई डियर।''

''क्या पाना चाहते हो तुम...'' सना अँगडाई भरने लगी थी, फिर हत्थे से पॉवरलूम बंद कर दी और झुककर आईग्लास से कपड़े के पिक गिनने लगी थी।

''कुछ तो पाने की हसरत पाल बैठे हैं हम।'' रोहन ने उसके निकट आते हुए कहा, ''ऐसे नहीं होता फैब्रिक चैक।'' फिर रोहन उसके कंधे पर हाथ ले जाते हुए झुक गया और आईग्लास को उसकी आँखों पर ठीक लगा दिया।

सना मुसकरा उठी थी, लेकिन कुछ कहा नहीं।

''कैसा लग रहा है...कुछ तो बोलो...या मैं समझूँ...''

''क्या समझोगे?''

'' Silence is half consent''

'' Word to the wise is enough..'' सना घूम गई थी और रोहन करीब आ गया था, ''आप तो बहुत रोमांटिक हैं...।''

मिशन लव जिहाद की जकड़ में एक धनवान हिन्दू युवक बुरी तरह फँस चुका था। पॉवरलूम चल रही थी और अचानक ही शटल निकल कर दूसरी मशीन के कपड़े को चीरती हुई उसे फाड़ कर जमीन में धँस गई थी और मशीन अब खाली चल रही थी।

31

सना लव जिहाद के रास्ते पर चल चुकी थी, अब थोड़ा अपने बारे में बता

दूँ। मैं भी चाहती थी कि लव जिहाद में योगदान दूँ और किसी काफिर को मुसलमान बनाकर शबाब बटोर लूँ, मिशन लव जिहाद में ऐसे फोकट के दामादों की बहुत सख्त जरूरत थी।

खैर ओल्ड सिटी में एक घटना घट गई। फलकनुमा रेलवे स्टेशन के निकट हिन्दुओं के कुछ छोटे-छोटे देवालय बने हुए हैं, किसी शरारती ने रात के समय उन बुतों पर मांस के टुकड़े फेंक दिए और अगले ही दिन ओल्ड सिटी में तनाव हो गया। सुरक्षा के कड़े प्रबंध कर दिए गए। इसी दौरान छह दिसंबर आ गया यानी कि मुसलमानों के लिए काला दिवस और हिन्दुओं के लिए शौर्य दिवस। इसी दिन अयोध्या में बाबरी मस्जिद तोड़ दी गई थी। मुसलमानों ने एक भारी जुलूस निकाला, लेकिन शहर में फिर भी दिनभर शांति बनी रही, परंतु रात में किसी शरारती ने एक विवादित पेंटिंग के पोस्टर बनाकर कई जगह चिपका दिए। वह पेंटिंग प्रख्यात चित्रकार एमएफ हुसैन ने बनाई थी। एमएफ हुसैन को प्रसिद्ध किसने किया? हिन्दुओं ने ही ना, क्योंकि वे किशोर अवस्था में ही हैदराबाद की बदरीविशाल पित्ती की 'कल्पना' पत्रिका में चित्र बनाया करते थे। मुलायम सिंह यादव जैसे नेता भी पित्ती जी को अपना आदर्श मानते हैं। इसी विवादित एवं घृणित पेंटिंग से वे विश्वभर में तो जाने गए, लेकिन देश से उन्हें स्वतः ही निर्वासित होना और विदेशी धरती पर ही उन्होंने जीवन की अंतिम साँस ली।

खैर पेंटिंग में एक नग्न स्त्री बनाई गई थी, जो भारत के नक्शे जैसे आकार में थी और जिसमें दिल्ली, मुंबई, अयोध्या आदि स्थानों के नाम भी अंकित थे। हाँ ये पेंटिंग वास्तव में ही घृणित थी, हालाँकि हिन्दुओं ने इसे केवल भारत माता का अपमान समझा, लेकिन मेरी दृष्टि में तो यह संपूर्ण स्त्री जाति का अपमान था।

एक उत्साही हिन्दू युवक नील ने इसका जवाब दिया और उन्होंने एक विवादित पुस्तक प्रकाशित करके सुबह-ही-सुबह चारमीनार एवं उसके पास मक्का मस्जिद के आसपास वितरण करवा दिया। कई लोगों ने वह पुस्तक पढ़ी। दरअसल पुस्तक का नाम 'रंगीला रसूल' था और इसी पुस्तक को छापने के कारण आज़ादी से पहले महाशय राजपाल को लाहौर

में अपनी जान से हाथ धोना पड़ा था। लेकिन संयुक्त राष्ट्र महासंघ ने वर्षों बाद महाशय राजपाल की हत्या को प्रकाशन की स्वतंत्रता के लिए बलिदान की श्रेणी में रखा और उनके पुत्र दीनानाथ मल्होत्रा को सम्मानित भी किया, जो हिन्द पॉकेट बुक्स के संस्थापक हैं। पुस्तक ने भी शायद तनाव का वातावरण पैदा किया, लेकिन स्वतंत्र भारत में अब यह पुस्तक प्रतिबंधित है या नहीं इस बारे में मुझे मालूम नहीं। यह नील कौन युवक था किसी को पता नहीं था, लेकिन बाद में पता चला कि यह तो एक पत्रकार था, जिसने केवल एमएफ हुसैन की पेंटिंग के प्रतिशोध स्वरूप ही एक विवादित पुस्तक की कुछ प्रतियाँ रीप्रिंट कर दी थी।

फिर दिन गुजरते गए और हैदराबाद में शांति का माहौल पैदा हो गया। जनवरी 2003 में एक दिन एक घटना घटी। अब्बा देर रात तक घर नहीं आए तो सबको चिंता सताने लगी, वे उन दिनों अपने स्वयं के वाहन को चलाया करते थे। करीब रात के एक बजे वे घर आए।

"आज बहुत देर कर दी।" अम्मी ने पूछ लिया था।

"हाँ एक बुरी घटना घट गई और जेल जाता-जाता बच गया।" अब्बा ने जवाब दिया था।

"क्यों?"

"तुम तो जानती ही हो कि बेमौसम की बरसात से सब परेशान हैं। इंदिरा पार्क के पास बंडा मौसम्मा की सड़क पर पैदल जाते एक युवक को किसी कार ने टक्कर मार दी। वह बेचारा मरने के लिए तड़पने लगा।[1] लोगों की भीड़ तो वहाँ लग गई थी, लेकिन कार वाला भाग गया था और उसे अस्पताल ले जाने के लिए कोई तैयार नहीं था। भीड़ देखकर मैंने भी अपनी गाड़ी रोकी थी कि देखूँ माजरा क्या है? मुझे उस पर तरस आ गया तो मैं अपनी गाड़ी में उस घायल को लेकर सांई वाणी हॉस्पिटल में चला गया। वहाँ उसे भर्ती कराया तो अस्पताल वालों ने पुलिस बुला ली। वह युवक बेहोश था, इसलिए पुलिसवालों ने उसके होश आने तक मुझे वहीं बैठा कर रखा, क्योंकि वे इस बात को स्वीकार नहीं कर रहे थे कि मैं तो सड़क पर पड़े घायल को उठाकर लाया हूँ। वे मान रहे थे कि मेरी गाड़ी

1. यह घटना भी एकदम सत्य है और यह हादसा हुआ था।

से ही इसे चोट लगी है। खैर उसे बहुत देर में होश आया, हालाँकि एक बार तो डॉक्टरों ने बोल दिया था कि इसे ले जाओ, इसमें कुछ नहीं रहा, लेकिन खुदा का शुक्र है उसकी धड़कन फिर चलने लगी थी और उसने होश में आते ही अपना बयान देकर पुलिस के चंगुल से मेरी छुट्टी करवा दी थी। मुझे तो बड़ा शरीफ आदमी लग रहा था बेचारा। जब तक उसके घर वाले नहीं आ जाते सुबह सांई वाणी में तुम चली जाना और उसकी देखभाल कर देना। लगता है कि किसी दूर के शहर का है।''

''हिन्दू है कि मुसलमान।'' अम्मी ने पूछा।

''नहीं पता, लेकिन इंसान था।''

खैर! अगले दिन अम्मी उस युवक को देखने अस्पताल में चली गई और उसके लिए खाना भी बनाकर ले गई। कोई रिश्तेदार या संबंधी उसका पता लेने के लिए अस्पताल में नहीं आया। ठीक होने पर सबसे पहले वह युवक हमारे ही घर आया, लेकिन अब तक हम यह नहीं जान पाए थे कि वह युवक हिन्दू है या मुसलमान, क्योंकि सांईवाणी में भर्ती करवाते वक्त अब्बा ने एक नया नाम अपनी ओर से लिखवा दिया था : ताज।

घर आकर एक दिन उसने एक अजीब कहानी सुनाई। उसने जो सुनाया, उस पर कोई भी विश्वास नहीं कर सकता। लेकिन उसने जो सुनाया, मैं यहाँ उसी के शब्दों में बता रही हूँ :

''उस दिन मैं तो फुटपाथ के किनारे चल रहा था, लेकिन अचानक ही किसी कार ने मुझे पीछे से टक्कर मारी तो मेरी जोरदार चीख निकल गई, लेकिन इसके बाद मुझे कुछ भी दर्द नहीं हुआ, क्योंकि मैं तो बेहोश होकर सपना देखने लगा था। मैंने सपने में देखा कि मैं एक बहुत अंधेरी सुरंग में सुपरमैन की तरह चला जा रहा हूँ और कुछ देर के बाद जब सुरंग खत्म हुई तो मैंने एक राजा को देखा, जिसके सिर पर हीरे-मोतियों का मुकुट चमक रहा था और उसके वस्त्र भी अद्भुत और दिव्य थे। उसके सिर के पीछे से चारों तरफ इतना प्रकाश फैल रहा था कि एक हज़ार मर्करी बल्ब भी लगा दिए जाएँ तो कम होंगे। मैंने उसे हाथ जोड़कर प्रणाम किया तो उन्होंने कहा, ''तुम वापस जाओ।''

''मगर कहाँ?'' मैंने उससे प्रश्न किया था, क्योंकि मुझे कुछ भी याद नहीं था कि मैं कौन हूँ।

''जहाँ से वापस आए हो। तुम वहीं चले जाओ।''

''कहाँ से आया हूँ मैं और कैसे वापस जाऊँ?''

''ऐसे।'' और फिर उन्होंने धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाई और एक दिव्य वाण छोड़ा और उस दिव्य वाण के पीछे-पीछे फिर उसी सुरंग का सफर मैंने किया और जब मेरी आँख खुली तो मैं सांई वाणी अस्पताल में बिस्तर पड़ा था। आँख खुलते ही मुझे टक्कर लगने की घटना याद आ गयी और शरीर बहुत जोर से दर्द करने लगा। मैंने देखा कि मेरे तो दोनों हाथों की अँगुलियाँ तक भी दर्ज़ा हो चुकी थी।''

मृत्यु का अनुभव सुनाने वाले उस युवक का हमारे घर आना-जाना शुरू हो गया। वह युवक पास ही बंडा मौसम्मा में किराये के मकान में रहता था और एक अखबार में पत्रकार था। केवल हम इतना ही जान पाए थे। एक दिन अम्मी ने उससे पूछ ही लिया था, ''बेटा तुम्हारा नाम क्या है?''

''जो नाम आप लोगों ने रख दिया है, वही समझ लो।''

''इसका मतलब तुम मुसलमान हो।''

''क्या हिन्दू क्या मुसलमान मैं तो इनसान हूँ।''

''अच्छी बात है।'' फिर अम्मी ने नहीं पूछा उसका नाम और उसे ताज कहकर पुकारने लगी थी।

फिर अचानक ही उसने हमारे घर आना बंद कर दिया, लेकिन एक दिन मैं अपनी चाची के साथ बिजली का बिल जमा कराने जा रही थी। इंदिरा पार्क के पास एक व्यक्ति घड़ी की दुकान लगाता था। उसका नाम था लड्डू भाई और वह कट्टर मुसलमान था। उसी के खोखे के पास बैठा था वह। मैंने उसको ध्यान से देखा, लेकिन मुझे यह तो याद आ रहा था कि इसे कहीं देखा है, लेकिन यह कौन है नहीं स्मरण कर पा रही थी, इस कारण मैंने उसे कई बार पीछे मुड़-मुड़कर देखा। मुझे ऐसा करते हुए लड्डू भाई ने देख लिया और उन्होंने उस युवक से कहा, ''कोई इश्क-विश्क का चक्कर है क्या?''

"क्या मतलब।" उसने लड्डू भाई जिसका असली नाम जहाँगीर था से पूछ ही लिया था।

"देखो वह बुरके वाली आपको बार-बार पीछे मुड़-मुड़कर देख रही है।"

घटना आई-गई हो गई, लेकिन जब भी मैं इंदिरा पार्क की ओर जाती, तो मैं उसको लड्डू भाई के पास अक्सर बैठा हुआ देखती थी, इससे मुझे यकीन हो गया कि वह युवक निश्चय ही कोई मुस्लिम युवक है और याद भी हो गया कि यह तो वही है, जिसकी अब्बा ने जान बचाई थी।

कुछ दिनों बाद उस युवक ने हमारी ही बस्ती में एक मकान किराये पर ले लिया तो हमारा आना-जाना उसके पास और बढ़ गया। बस्ती में खलील नामक एक 12-13 साल का युवक था, जिसके पिता ने कई साल पहले आत्महत्या कर ली थी। उसकी बड़ी बहन का रिश्ता पक्का हो गया। एक दिन खलील उस युवक के पास आया, जिसे अब सभी प्रतिष्ठा के साथ भाईजान के नाम से पुकारने लगे थे और उस दिन अम्मी भी उसके पास हाल-चाल पूछने गई थी, क्योंकि उसे कई दिनों से बुखार आ रहा था। तो खलील ने उससे कहा, "भाई जान मेरी बड़ी बहन का निकाह है।"

"यह तो अच्छी बात है।"

"बात तो अच्छी है, लेकिन आपसे एक मदद चाहता हूँ।"

"बोलो क्या मदद चाहते हो।"

"मुझे पाँच हजार रुपए की जरूरत है, बहन के लिए अलमारी और बिस्तर खरीदना है। मैं आपके पैसे धीरे-धीरे चुका दूँगा।"

"इसमें चुकाने की क्या बात है, मेरे साथ चलना मैं दिलवा दूँगा जो भी शादी का सामान चाहिए और मेरी तरफ से शादी में कन्यादान समझ लेना।"

अम्मी को उसकी बातों पर यकीन नहीं आ रहा था कि कोई युवक इस तरह भी किसी की मदद कर सकता है, लेकिन जब उसने खलील की बहन की शादी में उसकी जरूरत का सब सामान खरीदकर कन्यादान में दे दिया तो सारी बस्ती में यह घटना चर्चा का विषय बन गई और इसी

तरह कई लोगों की उसने मदद की, तो उसकी इज़्ज़त फरिश्ते की तरह की जाने लगी। अब्बा से उसकी गाढ़ी मित्रता हो गई थी और अब्बा उसे हैदराबाद निज़ाम की ऐतिहासिक घटनाएँ सुनाया करते थे और वह युवक भी ऐतिहासिक घटनाओं को बड़े चाव से सुना करता था। बातों-ही-बातों में एक दिन अब्बा ने उससे कह दिया था, "बरखुर्दार तुम शादी क्यों नहीं कर लेते।"

"मुझे कौन अपनी लड़की देगा?"

"बस्ती में तो कई व्यक्ति चाहते हैं कि तुम इसी बस्ती के दामाद बन जाओ।"

"अच्छा, लेकिन यह संभव नहीं।"

"क्यों...संभव क्यों नहीं।"

"बस यूँ ही मैं नहीं बता सकता।"

"ठीक है मत बताओ लेकिन मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे दामाद बनो। मैं अपनी तीसरी बेटी का निकाह आपसे करना चाहता हूँ।"

"मगर क्यों?"

"दो बेटियों की शादी की है। पहली बेटी की शादी में तो घर बिक गया और दूसरी बेटी की शादी में दो में से एक गाड़ी बेचनी पड़ी, क्योंकि भले ही मैं इस समय गरीब हूँ, लेकिन कभी हम भी महल और हवेली वाले थे, इसलिए शादी विवाह में सभी रस्में तो उसी हिसाब से करनी पड़ती हैं।"

"लेकिन निकाह के लिए घर फूँक कर तमाशा देखना जरूरी है क्या?"

"इसीलिए तो मैं चाहता हूँ कि तुम मेरी बेटी से शादी कर लो, क्योंकि तुम कुछ भी दहेज नहीं लोगे और मेरी बेटी को सुखी भी रखोगे।"

"लेकिन आपकी बेटी तो मुझसे दस-बारह साल छोटी है।"

"उससे क्या होता है, उसकी जिंदगी तो सँवर जाएगी। बहुत दीन-ईमान वाली है। मुहल्लेभर की बच्चियों को कुरान शरीफ पढ़ाकर दीन की तरक्की में बहुत योगदान दे रही है।"

"लेकिन..."

''अब लेकिन-वेकिन कुछ नहीं, तारीख तय कर लेते हैं और तुम्हारे घर से कोई आता है तो ठीक है नहीं तो मत आने दो। जब तुम मर रहे थे, तभी कौन सा तुम्हारे घर से तुम्हारी खैर-खबर कोई लेने आया था। मैंने तो तुम्हें तभी अपना बेटा मान लिया था, जब तुमने अस्पताल में पुलिस को बताया कि इन सज्जन ने तो मेरी जान बचाई है, मारने वाला तो कोई और है।''

''मगर...''

''अब अगर-मगर कुछ नहीं...'' कहते हुए अब्बा तेजी से खिसक लिए थे और घर आकर यह बात अम्मी को बताई तो वह भी बहुत खुश हुई, लेकिन मुझे इस बात की खुशी नहीं थी, क्योंकि मैं हर हाल में किसी हिन्दू युवक से विवाह करना चाहती थी, ताकि उसे मुसलमान बनाकर मरने के बाद कयामत के दिन सीधे जन्नत में जा सकूँ।

32

झठ मँगनी और पट विवाह! कुछ ऐसी ही कहावत सार्थक सिद्ध हुई थी मेरे जीवन में। लेकिन विवाह से एक दिन पहले मेरी सहेली वसंता जो मुस्लिम बनकर मुस्कान बन चुकी थी उसने मुझे बताया, ''जीजू आपसे मिलना चाहते हैं, उसे तो इतना भी चैन नहीं निकाह होने तक।''

''मगर क्यों?'' मैंने उससे पूछ लिया था।

''पता नहीं, लेकिन कहते हैं मिलना बहुत जरूरी है, नहीं तो निकाह से पहले ही वह हैदराबाद छोड़कर भाग जाएगा।''

''ठीक है, लेकिन कहाँ मिलें। यहाँ तो मेहमानों में मिलना ठीक नहीं।''

''इसकी व्यवस्था मैंने कर दी है, उन्होंने जेवर और कपड़ों के लिए कुछ रुपए दिए हैं और कहा है कि जेवर वह अपनी पसंद के ही खरीदे।''

मैं जेवर और कपड़े खरीदने के बहाने वसंता के साथ बाहर निकली और चार मीनार के लिए ऑटो कर लिया। वह हमें चार मीनार पर मिला। मेरे लिए उसने एक जोड़ी सोने के झूमके खरीदे और पूरी ग्यारह तौले की पाजेब, जरी की कीमती साड़ियाँ और कुछ अन्य सामान की खरीदारी की।

इसके बाद हम लोग सालारजंग म्यूजियम चले गए। वसंता हमसे अलग हो ली थी और हम दोनों ही रह गए थे। बात मैंने ही शुरू की, ''तो जनाब निकाह से ही पहले क्यों मिलना चाहते थे?''

''इसलिए कि इस मूर्ति को देखो।'' उसने कहा और मैंने देखा सालारजंग म्यूजियम में संगमरमर की एक बहुत ही सुंदर मूर्ति थी, जो एक तरफ से देखने पर स्वर्ग की परी जैसी थी और दूसरी ओर से देखने पर कोई दिव्य पुरुष था। नारी की छवि में खास बात यह थी कि वह एक के बाद एक कई वस्त्र पहने हुए थी, लेकिन फिर भी नग्न सी प्रतीत होती थी और हर वस्त्र एक भ्रम को दर्शा रहा था। निश्चय ही जिस भी मूर्तिकार ने यह मूर्ति बनाई होगी, वह बड़ा ही महान मूर्तिकार होगा। उसने अपनी बात आगे बढ़ाई, ''इस मूर्ति की तरह ही मेरे दो रूप हैं।''

''वह कैसे?'' मैं तो चौंक गई थी।

''तुम लोग मुझे मुसलमान समझते हो, लेकिन मैं वह इनसान हूँ, जिसे तुम्हारी भाषा में काफिर कहते हैं।''

''काफिर यानी कि हिन्दू हो तुम।''

''हिन्दू नहीं आर्य।''

''ओह तो आप आर्य समाजी हैं, आर्य समाजी तो आधे मुसलमान पहले से ही होते हैं, भगवान को मानते नहीं, मूर्तिपूजा करते नहीं। यह तो मेरे लिए गर्व की बात है कि मैं एक काफिर को मुसलमान बनने का अवसर देकर नौ बार हज कितना शबाब लूट रही हूँ।'' लेकिन फिर मैंने पूछा था, ''क्या अब्बा को इस बारे में पता है?''

''नहीं...किसी को भी नहीं पता।''

''और पता चलना भी नहीं चाहिए, नहीं तो मुसलमान तुम्हें जिंदा नहीं छोड़ेंगे।'' फिर मैंने अपनी बात आगे बढ़ाई थी, ''निकाह होने के बाद तुम मुसलमान ही बने रहना और पाँचों वक्त की नमाज पढ़ना, तुम्हें तो सीधी जन्नत मिलेगी। ईमान लाना तो बहुत शबाब का काम है और फिर आज के युग में ईमान लाता ही कौन है!''

''नहीं लेकिन मैं मुसलमान नहीं बन सकता।''

''नहीं बन सकते तो तुम जिंदा नहीं रह सकते, मेरा जीवन तबाह कर

दिया तुमने। अब शादी पक्की हो चुकी है और मैंने दिल से आपको अपना हमसफ़र चुन लिया है। शादी करूँगी तो तुमसे ही, तुम ही मेरे ताज हो।''

''मैं तुमसे शादी कर सकता हूँ, लेकिन मंदिर में...''

''मैं इतनी प्रेम दीवानी नहीं हूँ कि माँ-बाप की इज्जत का जनाजा निकाल दूँ। तुम्हें निकाह ही करना होगा और वह भी मेरे ही साथ, वरना तुम्हें जेल की हवा खानी होगी।''

''मैं निकाह पढ़ सकता हूँ, लेकिन निकाह से पहले क्या तुम आर्य समाज मंदिर में मेरे साथ शादी करोगी।''

''ठीक है, लेकिन इसके लिए समय ही कहाँ है?''

''आर्य समाज सुलतान बाजार में मैंने बात कर रखी है, वहाँ शादी का सारा सामान तैयार है।''

''ठीक है, लेकिन पंडित!''

''वह भी वहीं है।'' उसका जवाब था और हम दोनों ने आर्य समाज मंदिर में वेद मंत्रों के साथ विवाह कर लिया। लेकिन विवाह होते ही वह मुझे अपने किराए के रूम में ले गया। जहाँ मैंने शादी के कपड़े उतारे और पुराने कपड़े पहनकर जल्दी में पतिदेव की अनुमति लेकर घर के लिए ऑटो पकड़ा। जानते हो मैंने यह शादी क्यों की? इसलिए कि इससे क्या होता है, असली विवाह यानी कि निकाह तो मेरा अगले दिन होने ही वाला था। उनको खुश रखने के लिए मैंने उनकी बात भी मान ली थी और अगले दिन वाकई में मेरा निकाह भी हो गया और क्या किसी ने ऐसा देखा है कि किसी लड़की की 24 घंटे के अंदर दो बार शादी, और दूल्हा भी एक और दुल्हन भी वही। अपने फूफा की मर्सीडीज कार में मैं देर रात अपने पति के साथ विदा हुई। उसके किराए के मकान में दहेज का सामान पहले ही पहुँचा दिया गया था। बिस्तर भी पता नहीं किसने सजाया था, लेकिन कई हज़ार रुपए के फूल उस पर लगाए गए थे। लेकिन जैसे ही हम कमरे का दरवाजा बंद करने वाले थे कि लड्डू भाई आ गए और बोले, ''बच्चो, अब एंज्वॉय करो अच्छा गुड़नाइट।'' अब पता चला वह बिस्तर लड्डू भाई ने सजाया था। दो बार शादी लेकिन सुहागरात छह महीने तक भी नहीं। जानते हो क्यों इसका कारण था कि पति वाकई मुसलमान नहीं था।

उसका खतना नहीं हुआ था, उसने कलमा नहीं पढ़ा था और वह नमाज नहीं पढ़ता था। मैंने जिद कर ली थी कि मुझे नहीं छूना, जब तक तुम मुसलमान नहीं बन जाते, खतना नहीं करवा लेते। लेकिन वह भी बड़ा जिद्दी था, उसकी नसों में वीर जाति जाट का खून था।

''सर कटा सकता हूँ, लेकिन खतना नहीं करा सकता।''

हर बार यही जवाब होता था उसका।

33

कुछ आप बीती के साथ अब जग बीती भी हो जाए। उस दिन रोनी मोटरसाइकिल पर सड़क से जा रहा था। उसने देखा कि वह मॉडल जिसके कपड़े कैटवॉक करते समय उतरे थे, अफजलगंज बस स्टैंड पर बस का इंजतार कर रही थी। रोनी एक मुसलमान था और उसका असली नाम था रहमान, उसने उसे देखकर मोटरसाइकिल रोक ली थी, ''हाय अंशु।''

''हाय!''

''किसका वेट कर रही हो डियर!''

''बस स्टैंड पर हूँ तो बस का करूँगी ना, आपका तो करने से रही!''

''क्यों हम इतने बुरे हैं क्या जो हमारा वेट नहीं कर सकती?''

''नहीं ऐसी बात नहीं।''

''तो फिर? आओ बैठो... कहाँ चलोगी।''

''जहाँ तुम ले जाना चाहो।'' वह मुसकरा दी थी।

''अरे वाह तुमने तो मेरे दिल की बात कह दी!''

''अरे बाबा, मैं तो यूँ ही कह रही थी, सना के पास जाना है। वे नए फैशन का एक और कार्यक्रम करने जा रही हैं।'' मोटरसाइकिल पर पीछे बैठती हुई कह उठी थी।

''लगता है तुम्हारे कपड़े फिर से उतरने वाले हैं।'' मोटरसाइकिल चलाते हुए रोनी बोल उठा था।

''Handsome is that handsome dose.''

''तुम्हें तो काम प्यारा है चाम नहीं।''

''Practice makes perfect.''

''उस दिन कैटवॉक करते वक्त कपड़े गिराने की योजना सना की थी ना! Wits have gone wool-gathering

अंशु मुसकरा उठी थी, लेकिन जवाब कुछ नहीं दिया, जवाब उसके पास था भी नहीं।

''सना तो चर्चा में आ गई कि उसके डिजाइन किए कपड़ों का प्रदर्शन हो रहा था, लेकिन तुम्हें क्या मिला...शर्मिंदगी ना...''

''Even a good horse stumbles. परंतु इसमें इतना बुरा ही क्या हुआ!''

''Good deeds need no show.''

''Necessity knows no law''

''अरे हमें तो पता नहीं था कि आप इतनी बोल्ड हैं, यदि पहले पता होता तो अब तक तो आप कहाँ से कहाँ पहुँच गई होती।''

''कहाँ पहुँच गई होती।''

''जानती हो सना को नंबर वन बनाने में किसका हाथ है?''

''किसका है?''

''हमारा और किसका!''

''वह तो है।''

''तो फिर क्या ख्याल है?''

''जो तुम चाहो, मैं दुनिया की टॉप मॉडल बनना चाहती हूँ, उसके लिए मुझे चाहे कुछ भी करना पड़े मैं करूँगी।''

''वैरी वैल।'' मोटरसाइकिल तेज दौड़ पड़ी थी।

34

बड़ा सा ऑफिस था। रोनी कैमरा स्टैंड ठीक से लगा रहा था। दीवारों पर मॉडलिंग के तरह-तरह के सीन लगे हुए थे। एक चित्र में छोटी-सी चिड़िया पर एक बाज झपट रहा था।

दरवाजे पर दस्तक हुई तो रोनी का चेहरा खिल उठा था, ''कम इन।''

''मैं चेंज करके आ गई सर...''

रोनी ने उसकी ओर देखते हुए कहा, ''यह क्या? क्या इस ड्रैस में मॉडलिंग के टिप्स ले पाओगी। अभी भी किस जमाने में हो?''

''क्यों इस ड्रेस को क्या हुआ?''

''कुछ नहीं सत्तर साल की बुढ़िया लग रही हो, तुम समझती क्यों नहीं An old dog will learn no tricks''

''लेकिन...''

''लेकिन-वेकिन कुछ नहीं, देखो जो संबंध एक डॉक्टर व मरीज का होता है, वही संबंध एक फोटोग्राफर और मॉडल का होता है।''

''मैं कुछ समझी नहीं सर।''

''यदि टॉपर मॉडल बनना है, तो जो मैं कहता हूँ वह करो!''

''जी सर।''

''चलो कपड़े उतारो।''

''क्या?''

''अरे भई सारे नहीं...''

मुसकराती हुई अंशु ने कुरती उतार दी थी।

''वो भी।'' रोनी ने उसके स्कर्ट की ओर इशारा किया था।

अंशु सहमी-सहमी सी स्कर्ट उतारने लगी थी।

लेकिन जोरदार आवाज़ के साथ द्वार खुल गया था। दरअसल सना गुस्से से तिलमिलाई रोनी के स्टूडियो आ पहुँची थी, क्योंकि उसको गुस्सा इस बात को लेकर था कि उसके आज के शो की मुख्य मॉडल अंशु रोनी की वजह से नहीं आई, इसलिए वो भी लाल-पीली होती जोर से रोनी के ऑफिस के दरवाजे पर दस्तक देने की बजाय जोर से उसे धक्का देते हुए द्वार खोलकर अंदर चली आई थी, यहाँ आते ही उसने देखा कि रोनी तो उसी मॉडल के साथ प्रेमालाप कर रहा था।

लेकिन जब द्वार खुलने की आवाज़ हुई तो, तो अंशु ने गर्दन उस ओर घुमाई, ''...मैडम ...'' उसे छाती से धकाकर पास से चुन्नी उठाने लगी थी अंशु, रोनी सना को देखकर थोड़ा नरवस हो उठा था, ''तुम...।''

''तुम्हारे फलर्ट नेचर की वजह से मेरी मॉडल भाग गई।''

''फलर्ट नेचर? क्या तुम दूध की धुली हुई हो!''

''दूध की नहीं तो छाछ की फूँकी जरूर हूँ और तुम जानते हो। burnt child dreads the fire.''

''आँधी की तरह आकर तूफ़ान की तरह दरख्त मत गिराओ, हमें भी तो पता चले कि हमने किया क्या है?''

''मेरी मॉडल्स को बहकाकर मेरे ही पेट पर लात मारते हो?''

''मैंने अंशु को कहाँ बहकाया है यह तो अपनी इच्छा से ही यहाँ आई है।''

''अपनी इच्छा से आई है, लेकिन मेरा आज का शो तो खराब हो गया और तुम...''

''हमारी हरकतों को तो तुम हमेशा से ही देखती हो।''

''देखती हूँ...लेकिन तुम ऐसी हरकतें करते रहे तो...''

''तो क्या...तुम दूध की धुली हुई हो क्या?''

35

उस दिन सना को एक बहुत बड़े फैशन शो के लिए साल का बेस्ट डिजाइनर का अवॉर्ड मिल रहा था। अवॉर्ड बॉलीवुड के मशहूर स्टार जावेद प्रदान कर रहे थे, तभी उद्‌घोषक बोल उठी थी, ''दिल थाम के बैठिए अब बॉलीवुड के मशहूर स्टार और हम सबके चहेते जावेद खान भारत की नंबर वन फैशन डिजाइनर मिस सना को लैक्मे फैशन अवॉर्ड प्रदान करेंगे।''

जावेद पहले से ही मंच पर था और सना पाकिस्तान से आई अपनी माँ के पास से उठकर आई और अवॉर्ड ग्रहण करने लगी, तो जावेद ने धीरे से कहा, ''बहुत-बहुत मुबारक! सना जी मैं आज बहुत खुश हूँ।''

''वैरी...वैरी थैंक्स!''

''मैं आपका बहुत बड़ा फैन हूँ।'' अवॉर्ड प्रदान करता हुआ बोला, तभी हॉल तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा था।

''आप तो मेरे दिल की बात कह रहे हैं। मैं भी तो आपकी फैन हूँ।'' सना ने कहा था।

''वाकई...'' फिर धीरे से बोला, ''हम पर्सनली अननोन होते हुए भी एक दूसरे के कितने करीब हैं।'' और कहते हुए उसने सना का हाथ चूम

लिया था। सना धीरे से मुसकरा उठी थी। शायद उसे अच्छा लगा था।

''फिर भी दिले मोहब्बत से गरीब हैं।'' दोनों की निकटता पर कैमरा फोकस हो गया था, जो क्षणभर दोनों एक दूसरे को प्यास भरी नजरों से देखते रहे, तालियों की गड़गड़ाहट और कैमरों की लाइट से सना की निद्रा सी टूट गई, उसने गर्दन झटकी और हाथ में माइक ले लिया था, ''कहते हैं कि किसी पुरुष की कामयाबी के पीछे किसी औरत का हाथ होता है और किसी औरत की कामयाबी के पीछे किसी पुरुष का। लेकिन मेरी कामयाबी के पीछे केवल मेरी माँ अशरफी बेगम का हाथ है। जो कराची में एक प्रिंसिपल हैं, लेकिन उन्होंने मुझे इस ग्लैमर एवं फैशन की दुनिया में आगे बढ़ने के लिए हमेशा प्रोत्साहित किया।''

टीवी चैनल का कैमरा सना की माँ पर फोकस हो गया था, मॉडल अंशु सना की माँ को आश्चर्य भरी नजरों से देखने लगी थी और अतीत में चली गई थी।

उसी दिन शाम को अवॉर्ड की खुशी में सना ने एक बड़ी पार्टी थी।

सना की माँ अशरफी बेगम रोनी यानी कि रहमान को अच्छी तरह जानती थी और उसका चेहरा उस समय मुस्करा उठा था, जब उसकी नजर रोनी पर पड़ी। रोनी मोंटी के पास खड़ा पी रहा था, और वह मोंटी को एक मॉडल की ओर संकेत करके कुछ कह रहा था। बात बीच में छोड़कर मोंटी उस मॉडल के पास चला गया और पास जाकर...मॉडल से कह उठा, ''आपका फेश... माई डियर वाईफ से कितना मिलता है।''

''बदतमीज!'' मॉडल ने उसे जोर का थप्पड़ जड़ दिया था।

''कमाल है, आदत भी वही है।'' मोंटी अपमानित की बजाय खिल उठा था।

कुछ लोग खड़े थे तो कुछ साइड़ों में बैठे थे, एक मंच सोंग के लिए तैयार था, सना को लोग आ..आ..कर बधाई दे रहे थे। मैंने भी उसे बधाई दी थी।

मोंटी को थप्पड़ लगने के बाद रोनी वहाँ से खिसककर सना की ओर आ गया था, ''केंग्रचुलेशन सना...'' रोनी हाथ में पैक लेकर आया था, ''इस खुशी के अवसर पर कम-से-कम आज तो एंज्वोय करो।''

''थैंक्स... नो ड्रिंक्स।''

''यार सबको पिलाए जा रही हो और खुद नो ड्रिंक्स!'' तभी सना की अम्मी अशरफी बेगम उनके पास आ पहुँची थी, रोनी ने उसे देखकर आगे कुछ नहीं कहा और किनारा कर लिया।

''बेटा मैं स्पेशली तुम्हारे इस प्रोग्राम के लिए पाकिस्तान से यहाँ आई हूँ।'' असरफी बेगम ने कहा था, ''तुम सक्सेस तो अचीव करती जा रही हो, कभी कुछ अपनी लाइफ के बारे में भी सोचो।''

''अब तो यही मेरी लाइफ है मॉम।''

''नहीं बेटे! कॅरियर और लाइफ में डिफरेंस होता है When so u settle down।''

''Mom , it is just beginning''

36

उस दिन समुद्र की लहरें कुछ ज्यादा ही जोर से उठ रही थीं, उधर से ही भीगे तन के साथ बालों को झटकते हुए सना आ रही थी। जावेद चेयर पर बैठा और स्टूल पर पैर रखे हुए मैगजीन पढ़ने के बहाने उसे ही देख रहा था। सना जावेद के पास आकर बैठ गई थी।

''माई डियर आज तुम कितनी हसीन लग रही हो! जैसे स्वर्ग से उतरकर अप्सरा आ गई हो!'' जावेद ने उसे कहा था।

सना ने बाल जोर से झटके थे, जिससे जल की कुछ बूंदे जावेद के चेहरे पर पड़ गई थी, ''क्या मैं पहले हसीन नहीं थीं?'' मुसकरा उठी थी सना।

अभिनेता जावेद सना का तोलिया लेकर मुँह से जल के छींटे पोछने लगा था, ''तुम तो कुदरत का अनमोल नगीना हो, लेकिन इस नगीने की चमक आज कुछ ज़्यादा ही है।''

''प्रशंसा के पुल बाँधना कोई तुमसे सीखे।'' मुसकरा उठी थी वह।

''चलो ऐसा ही सही, लेकिन इस कुदरत के नगीने में आज हम धरती का भी एक नगीना जड़कर इसकी चमक में और चार चाँद लगाना चाहते हैं।'' खुले हुए बटनों वाले ओवरकोट की जेब में हाथ डालकर हीरे

की एक अँगूठी निकाली थी जावेद ने, ''अगर साहिबां की इजाजत हो तो...''

''मेरे लिए...'' खुशी से उछल पड़ी थी सना।

''हाँ माई डियर हाँ...आपके ही लिए...'' वह झुककर उसकी ओर हुआ और सना ने भी अपना हाथ जावेद की ओर बढ़ा दिया था। फिर वह उसे अँगूठी पहनाने लगा था...लेकिन तभी एक साथ कई कैमरे क्लिक हो उठे थे और प्रेस फोटोग्राफर उन दोनों की पोज ले रहे थे। आज उन्हें एक नया मसाला मिल गया था।

37

अख़बार सना की माँ अशरफी बेगम के हाथ में था, जिस पर सना और जावेद की फोटो छपी थी, उसमें जावेद सना को अँगूठी पहना रहा था और हैडिंग लगा था : सना और जावेद की सगाई।

अशरफी ने तुरंत ही कराची से सना को फोन मिला दिया था, ''बेटा कैसी हो तुम!''

''ठीक हूँ मॉम!'' भारत से आवाज आई थी।

''बेटा तुम्हारी खुशी में ही हमारी खुशी है, लेकिन तुमने इतना बड़ा डिसीजन ले लिया और हमें बताया भी नहीं!''

''डिसीजन...''

''उसने इस्लाम कबूल कर लिया ना, तुम जानती ही हो उसका असली नाम रवि है, वह जन्म से हिन्दू है, जावेद केवल फिल्मी नाम है।''

''तुम क्या कह रही हो मॉम, मेरी कुछ समझ में नहीं आ रहा।'' फिर अचानक ही सना की दृष्टि टेबल पर पड़े अख़बार पर चली गई थी, जिस पर उसका व जावेद का फोटो छपा था।

''बेटा...क्या बात है कुछ बोलो तो सही...''

''Oh Mom तुम भी. I thought it was a beginning but its over we are two guys who are from different planets we cannot stay together.'' उसने फोन बंद कर दिया था, जैसे उसका मूड़ खराब हो गया हो।

“बेटा...बेटा...बेटा...” फोन के रिसीवर स्टेंड को हिलाती हुई अशरफी ने भी फोन पटक दिया था।

38

सना अपने कार्यालय में बैठी फोन कर रही थी, “देखिए एचसी तिवारी जी मैं आपकी पत्रकारिता की कायल हूँ, लेकिन मुझे तो विश्वास ही नहीं होता कि आपने मेरे साथ इतना भद्दा मज़ाक किया है।”

तिवारी अपने चैंबर में बैठा हुआ था, जहाँ उसने सना का फ़ोन उठाया था, सामने टीवी पर न्यूज चल रही थी, उसके हाथ में मोबाइल था, “मैं और मज़ाक!”

“हाँ...मज़ाक, उस दिन आपने ही बिच पर जावेद और मेरा फोटो शूट किया था और आपकी पीटीआई एजेंसी का फोटो ही दुनियाभर के अख़बारों ने कैरी किया है।”

“सॉरी मैम! लेकिन उस दिन आप दोनों के हाव-भाव से तो कुछ ऐसा ही...”

“लग रहा होगा, लेकिन इसका मतलब यह तो नहीं कि सच्चाई जाने बिना ही कुछ भी गर्म मसाला तैयार कर लो।”

“तो आप क्या चाहती हैं, क्या भूल सुधार छाप दी जाए!”

“मिलकर कुछ सोचते हैं यार।”

“कब!”

“कल शाम सात बजे कैफे कनखल में।”

“ओके।”

39

अगले दिन शाम के समय कैफे कनखल में तिवारी और सना बैठे हुए कॉफी पी रहे थे और कुछ बात कर रहे थे।

“आप पत्रकारों को तो बस मसाला चाहिए।” सना कहती हुई मुसकरा उठी थी।

“नहीं ऐसी बात नहीं है, दुनियाभर के रहस्य और घोटालों को भी तो उजागर पत्रकार ही करते हैं।” तिवारी ने सफाई थी।

“हाँ वह तो है, टू जी स्कैम का पर्दाफाश भी पत्रकारों ने ही किया है।”

“जिसके कारण तिहाड़ में इतने नेता पहुँच गए थे कि संसद का एक सत्र वहीं बुलाया जा सकता था।”

“नेताओं के लिए तो जेल ही ठीक है, पहले आज़ादी की जंग में जेल जाते थे और अब आज़ादी से घोटाले करते हुए जेल जाते हैं। परंतु पत्रकार जिसे चाहें उसे हीरो बना देते हैं चाहे वह अपराधी हो या आम आदमी।”

“नहीं...पत्रकार हीरो तो बस उसी को बनाते हैं, जिसके खून में कुछ कर गुजरने का जज्बा हो।”

“मैं नहीं मानती। पत्रकार जिसके पीछे पड़ जाते हैं, हाथ धोकर पड़ जाते हैं। मणिपुर की आयरन लेड़ी चानू शर्मिला पिछले बारह सालों से आमरण अनशन पर हैं और पत्रकारों ने उसे आज तक हाइलाइट नहीं किया।”

“और अन्ना हजारे को ग्यारह ही दिनों में दुनिया का नंबर वन समाजसेवी बना दिया था। आगे यही कहना चाहोगी।”

“हाँ सच्चाई तो यही है।”

“नहीं सच्चाई यह नहीं है, सच्चाई है मुद्दा। अन्ना हजारे जनभावनाओं का मुद्दा लेकर खड़े हुए थे। कई सालों से भ्रष्टाचार और महंगाई की मार से सारा देश त्राहिमाम...त्राहिमाम...कर रहा था और हमारे नेता ईस्ट इंडिया जैसी कंपनियों को हमारे देश में आमंत्रण देकर हमें दोबारा और गरीब एवं गुलाम बनाने का षड्यंत्र रच रहे थे।”

“और ऐसे में अन्ना हजारे का आज़ादी की दूसरी जंग के लिए आह्वान करना...”

“बिल्कुल सही था।”

“और फिर सारा देश अन्ना हो गया...मैं भी अन्ना...” उसकी ओर अँगुली करते हुए सना हँस दी थी, “तू भी अन्ना...”

“और हम भी अन्ना।” कहते हुए रोहन ने प्रवेश किया था।

और सना से आते ही बोला, ''माई डियर तुमने तो फ़ोन ही उठाना बंद कर दिया...'' वह उन्हीं के पास की चेयर पर बैठ गया था।

''सॉरी रोहन...परंतु हम कुछ पर्सनल डिस्कस कर रहे हैं।'' सना को उसका बैठना अच्छा नहीं लगा था।

''पर्सनल डिस्कस...'' गुस्से से उठ गया था रोहन, ''एक नेशनल अवॉर्ड क्या मिल गया कि आसमान पर चढ़ बैठी... हमारी बिल्ली हमें ही म्याऊँ!''

तिवारी ने गुस्से से उठते हुए रोहन का गिरेवाँ पकड़ लिया था, ''बिल्ली किसको बोला रे...रामलीला मैदान के बाबा...!''

''हाथ हटाता है कि नहीं...योग का चमत्कार दिखा दिया तो भोग की धिक्कार भूल जाएगा। पराए थूक के चटोरे।''

''तेरी तो...साले थूक चाटता होगा तू...'' उसको मुक्का मारने की कोशिश करने लगा था, लेकिन बीच में सना बचाने की कोशिश करने लगी थी।

''इस छिछोरी लौंडी को तो हमने नींबू की तरह कभी का निचोड़ कर फेंक दिया'' रोहन ने सना की ओर घूरते हुए कहा था, ''और हमारे उगले हुए को चाटकर तू अपने आपको महारम पहलवान समझता है...'' दोनों में झपट हो गई थी और इसी दौरान रोहन ने बचाने की कोशिश में सना को धक्का दे दिया था, सना का सिर टेबल के किनारे पर लग गया और उसे खून निकलता देख दोनों ने लड़ना छोड़ दिया था। तिवारी ने सना की कमर में हाथ डालकर उसे उठाया एवं ऐसे ही साथ लेकर बाहर निकल गया..एक हाथ से अपने होंठ का लहू पोंछते हुए। सना ने तिवारी के कंधे पर सिर रख लिया था।

''तूझे देख लूँगा साले।'' तिवारी ने रोहन की ओर गर्दन घुमाकर उसे धमकी दी थी।

''माँ-बाप के साथ आकर खूब देख लेना और जी में आए तो बहन का रिश्ता कर देना...फिर कहना साला कौन बनता है!'' रोहन ने कहा था।

सना का सिर तिवारी के कंधे पर टिका हुआ था और दोनों की गाड़ी की ओर बढ़ चले थे।

40

तिवारी के कंधे पर सना का सिर टिका हुआ था और चलते हुए दोनों फिर हुसैन सागर झील के किनारे बैठ गए थे। 1562 में निर्मित हुसैन सागर झील सिकंदराबाद को हैदराबाद से अलग करती है। आज़ादी के बाद इस झील के पुश्ते के किनारे 30 ऐतिहासिक व्यक्तियों की मूर्तियाँ स्थापित की गई। टैंक बंड के नाम से प्रसिद्ध इस झील के मध्य जिब्राल्टर चट्टान पर 16 फुट ऊँची और 350 टन की एक ही शिलाखंड पर बनी भगवान बुद्ध की विशालकाय मूर्ति स्थापित की गई है। शाम के समय यहाँ अक्सर प्रेमी जोड़े खूब गुटरगूँ करते हैं। कई जोड़े तो मूर्तियों के पीछे बैठकर अश्लील हरकतें तक करते हैं। यहीं पास ही इंदिरा पार्क है, वह भी प्रेमी जोड़ों के लिए प्रसिद्ध है और पास प्रसिद्ध अखबार तेलुगू दैनिक वार्ता और स्वतंत्र वार्ता का कार्यालय भी यहीं है। खैर सना पानी में कंकर फेंकने लगी थी, ''क्या सोच रहे हो तिवारी जी?''

''जो तुम सोच रही हो।''

''अच्छा बताओ तो हम दोनों क्या सोच रहे हैं?''

''केश्वर्या के बारे में।''

''केश्वर्या के बारे में।'' टुनकती हुई वह जैसे ही नींद से जाग उठी थी।

''हाँ..केश को बेटी हुई है, लेकिन कोई भी फोटोग्राफर आज तक उसका फोटो नहीं खींच सका। यदि उसका फोटो मिल जाए, तो हमारी फोटो एजेंसी उसके लिए मुँह माँगी कीमत दे सकती है।''[1]

''लेकिन इसमें मैं क्या कर सकती हूँ?''

''केश तुम्हारी बेस्ट फ्रेंड हैं और तुम...''

''उसकी बेटी का फोटो शूट कर सकती हूँ...यही कहना चाहते हो ना।''

''और क्या कह सकता हूँ।''

''इसका मतलब है कि तुम अपने कॅरियर के लिए मुझे इस्तेमाल

1. यह घटना सत्य है, लेकिन पात्र का नाम बदल गया है। समाचार पत्रों की सुर्खियाँ भी बनी थी यह घटना।

करना चाहते हो, मेरे जरिए टॉप मॉडल्स और हीरोइनों तक अपनी पहुँच बनाना चाहते हो।''

''तो इसमें हर्ज़ ही क्या है?''

''यू आर'' उठते हुए गुस्से से उबल पड़ी थी वह, ''बिग बास्टर्ड।''

चल दी थी वह और तिवारी उसे पुकारता रह गया था।

''सना सुनो तो...मेरी बात समझने की कोशिश तो करो...''

41

एसआई के सामने एक मॉडल्स डिम्पल खड़ी थी, जो रिपोर्ट लिखा रही थी[1], ''जी साहब।''

''ओह! तो तुम रोनी के खिलाफ कंपलेंट लिखाने आई हो।'' एसआई ने गंभीरता से कहा था।

''जी!''

''जब तुम जानती हो रोनी और Controversies का चोली-दामन का साथ है, तो तुम उसके पास गई ही क्यों थी?''

''गई...क्यों गई थी...अब सवाल यह नहीं...''

''अब सवाल यह है कि रोनी ने तुम्हारे साथ ऐसा क्या किया कि तुम्हें थाने में उसके खिलाफ एफआईआर लिखाने आना पड़ा। अच्छा तो क्या किया उसने ऐसा?'' उससे बड़ी मासूमियत भरी अदा के साथ पूछ ही लिया गया था।

''उसने कल मुझे एक शॉट लेने के लिए अपने कार्यालय बुलाया था!''

''शॉट लेने के लिए क्यों?''

''क्योंकि वह शॉट किसी प्रसिद्ध साबुन कंपनी के विज्ञापन के लिए था।''

''तो फिर?''

''उसने मुझे कपड़े उतारकर पानी के अंदर बैठने को कहा।''

1. सत्य घटना, लेकिन पात्र का नाम कथानुसार काल्पनिक है।

''और तुम बैठ गई।''

''हाँ रोनी ने मुझे Intentionally ...तीन घंटे पानी के अंदर बिठाके रखा और फिर...''

फ्लेस बैक में चली गई थी डिम्पल।

मॉडल्स डिम्पल बाथटब में बैठी अपने शरीर को साबुन मल रही थी, सारे टब में कई तरह के फूल तैर रहे थे, उसके शरीर के ऊपरी हिस्से पर बॉडी थी और बाल खुले हुए।

''ठंडे...ठंडे...पानी से नहाना चाहिए'' गुनगुना रही थी वह हिन्दू माडल्स, ''...रोनी मुझे कितनी देर और...''

''माई डियर'' कैमरे से क्लिक करते हुए रोनी बोल उठा था, ''वो सिचुएशन अभी बनी ही नहीं जो कंपनी को चाहिए।''

''सिचुएशन बनी नहीं और मुझे ठंडी लगने लगी...'' वह दाँत कड़कड़ाने लगी थी।

''तुम ठीक रास्ते पर जा रही हो माई डियर।''

''क्या मतलब।'' कड़कड़ाते दाँतों से उठने की कोशिश करने लगी थी और टब में ही उठते हुए गिर पड़ी थी।

''ओह! माई गॉड।'' गिरती हुई मॉडल को बचाने के लिए रोनी झट से उसके पास आया और हाथों में उठाकर बैडरूम की ओर ले गया। और अंदर जाते हुए लात मारकर बैडरूम का दरवाजा बंद कर दिया था।

42

सना खड़े हुए प्लेन की सीट पर बैठी थी। उसके हाथ में एक मैगजीन थी, जिसे वह देख रही थी। उसमें एक न्यूज पर उसका विशेष ध्यान था : सनी बंधुजा करेंगे प्रसिद्ध ब्रिटिश कंपनी एयरो स्पेश का अधिग्रहण। मैगजीन में सनी बंधुजा का फोटो भी छपा था, तभी सीट पर आकर सनी बंधुजा ही बैठ गया था और एयर होस्टेज उनके आते ही दौड़कर उनके पास आ पहुँची थी और बैल्ट बाँधने में मदद करने के लिए झुक पड़ी थी।

''नो...थैंक्स।'' वह अपनी बैल्ट खुद बाँधने लगा था।

सना पास वाली सीट पर ही थी, ''हैलो...''

''हैलो...'' सनी ने उसकी बात का जवाब दिया।

''सर शायद आपने मुझे पहचाना नहीं!'' सना बोल उठी थी।

''क्या मतलब!''

''मैं सना यानी कि मशहूर फैशन डिजा...''

सनी से आश्चर्य से पूछा, ''कौन सना?''

सना फिलिंग सी करती हुई बोली, ''फैशन डिजायनर।''

''ओह याद आया एक दो बार अख़बारों में तुम्हारे बारे में पढ़ा है।''

''चलो पढ़ा तो सही।''

''हूँ...'' और वह एक डायरी में कुछ लिखने लगा था और सना को नजर अंदाज कर दिया था उसने।

सना ने मन-ही-मन में कहा था, 'इस दुनिया में ऐसे भी लोग हैं, जो मुझे नहीं जानते।' फिर प्रत्यक्ष बोली थी, ''सर कभी तो आराम किया कीजिए।''

''चाचा नेहरू ने कहा था...''

''आराम हराम है।'' वाक्य सना ने पूरा किया और मुसकराते हुए उसकी डायरी बंद कर दी थी।

''तो कहाँ जा रही हैं आप।''

''जहाँ आप जा रहे हैं!''

''बहुत खूब...हम तो एक बिजनेस डिल करने स्विट्ज़रलैंड जा रहे हैं, क्या चलोगी हमारे साथ।''[1]

''जब प्लेन जा ही स्विट्ज़रलैंड रहा है, तो फिर मैं उड़ते प्लेन से किसी और देश में तो कूदने से रही!''

''बहुत हँसमुख हो तुम...हमें ऐसे लोग बहुत पसंद हैं।''

''चलो किसी को तो हम जैसे लोग पसंद हैं।'' फिर मुसकराते हुए बोली थी, ''और हम आप जैसे टेलैंटेड बिजनेसमैन को लाइक करते हैं।''

तभी प्लेन चलने की उद्घोषणा हो गई थी, ''कृपया अपनी-अपनी बैल्ट बाँध लें, प्लेन उड़ान भरने वाला है।''

1. यह एक सत्य घटना है, लेकिन बड़े प्रतिष्ठित उद्योगपति से जुड़ी होने के कारण नाम और कंपनी का नाम भी काल्पनिक रखा गया है।

सना और सनी ने मुसकराकर अपनी-अपनी बंधी बैल्ट पर हाथ रख लिया था।

43

एयरपोर्ट से बाहर यात्री निकल रहे थे। सनी और सना भी निकले। सनी का स्वागत करने के लिए जहाँ कई लोग फूल माला लिए हुए थे, वहीं सना किसी का इंतजार-सा करने लगी थी, तो सनी ने गले से मालाएँ निकालकर अपनी एसिसटेंट को दी थी और सना से आकर बोला, ''क्या किसी का इंतज़ार...''

''नहीं ऐसी बात नहीं...''

''तो फिर...चलिए कहाँ जाना है हम छोड़ देंगे।'' अपने एक सेवक की ओर संकेत किया था उसने और सेवक ने सना का सामान ले लिया था। सना और सनी जब एक कार में बैठने लगे तो, तभी सना और सनी का पत्रकारों ने साथ-साथ होने का विडियो क्लीपिंग व फोटो शूट कर लिया था।

सना को बैठाने के लिए सनी खुद अपनी गाड़ी का द्वार खोल रहा था और तभी उनकी फिल्म बन गई और विदेशी मीडिया को भी अच्छा मसाला मिल गया था।

44

गोल कांफ्रेंसिग टेबल पर सब अपनी-अपनी जगह बैठे हुए थे, सनी मुख्य सीट पर बैठा कुछ पन्नों को उल्ट-पलट रहा था, उसके ठीक सामने सना बैठी थी। चारों और सनी की कंपनी के कुछ अधिकारी बैठे थे।

''लेडीज एंड जैंटलमैन एयरो स्पेश के अधिग्रहण के बाद हमारी कंपनी दुनिया में नंबर वन बन गई है।'' जैसे ही सनी ने कहा तो तालियों की गड़गड़ाहट से सम्मेलन हाल गूँज उठा था, ''हमने निर्णय लिया है हम अपनी कंपनी में नया ड्रैस कोड़ लागू करेंगे और उसके लिए हम सना जी को नई ड्रैस डिजाइनिंग के लिए कांट्रैक्ट सौंपते हैं।'' एक बार फिर

तालियों की गड़गड़ाहट हो उठी थी, ''हमारा टारगेट सक्सेसफुल रहा, अब इस खुशी के मौके पर एंज्वॉय कीजिए।'' उसने पार्टी हॉल की ओर संकेत किया था।

45

पार्टी चल रही थी, कुछ पी रहे थे, तो कुछ जोड़े नृत्य कर रहे थे। सना भी सनी के साथ डाँस कर रही थी, तभी कैमरे की क्लिक से सनी व सना के एक साथ कई फोटो खींचे थे, नाचते-नाचते सना थक गई थी, तो सनी ने सहारा देकर उसे एक चेयर पर बैठाया था, उस समय भी उसका कोई फोटो खींच रहा था।

''तुम रेस्ट करो।'' सनी ने उसे प्यार के साथ कहा था।

सना ने नशे की सी हालत में उसका हाथ पकड़कर अपने पास की चेयर पर बैठाया था, ''तुम भी बैठो ना माई डियर।'' वेटर वाइन लेकर आया था, उनकी ओर की।

''सर।'' वेटर ने बस इतना ही कहा था।

सनी गिलास उठाकर सना को देने लगा था, ''एक-एक जाम और हो जाए माई डियर।''

''नहीं...बहुत हो गई।''

''बस एक जाम मेरे लिए।'' और उसे गिलास थमा दिया था और दूसरा गिलास अपने लिए ले लिया था।

''और यह जाम हम दोनों के नाम।'' गिलास आपस में भिड़ाया था और पीने लगी थी, वहीं लुढ़क गई थी, सनी उसे संभालने लगा था।

46

कैफे में सना और सनी बैठे हुए चाय पी रहे रहे थे। और सामने कुछ मैगजीन पड़ी हुई थीं, जिन पर सनी और सना के फोटो छपे हुए थे। एक मैगजीन की हैडिंग थी 'सना का नया शिकार सनी'

''बास्टर्ड!'' सनी बड़बड़ाया था, ''ये पत्रकार भी!''

''हम लोग दुनिया की जानी-मानी शख्यिसत हैं।'' सना ने कहा था, ''हमारी हर बात सार्वजनिक हो ही जाती है।''

''आपको तो कोई फर्क नहीं पड़ेगा, लेकिन मुझे तो बिजनेस करना है और बिजनेस में ये सब नहीं चलता।''

''नहीं चलता तो अब चला लो।''

''हाँ...ऐसा ही कुछ करना होगा!'' फिर कुछ रुककर बोला, ''मुझसे शादी करोगी।''

''शादी!''

''हाँ शादी, लोगों का मुँह रोकने का यही एक तरीक़ा है।''

''लोग तो मेरा नाम न जाने किस-किस के साथ जोड़ते हैं, तो क्या मैं हर किसी से शादी कर लूँ।''

''मैं हर किसी से नहीं....अपनी और तुम्हारी बात कर रहा हूँ!''

''हाँ मैं कर सकती हूँ, लेकिन पहले तुम्हें इस्लाम कबूल करना होगा।''

''दो दिलों के प्रेम के बीच ये धर्म की दीवार कहाँ से आ गई...''

''अरे बाबा...यदि तुम मुझसे सच्चा प्रेम करते हो तो क्या इस्लाम को स्वीकार नहीं कर सकते!''

''ठीक है मैं इसके लिए भी तैयार हूँ।''

''ओके बाबा।'' मुसकरा उठी थी सना।

47

सनी अपने कार्यालय में बैठा हुआ कुछ कार्य कर रहा था, तभी फ़ोन की घंटी बज उठी थी, उसने फ़ोन उठाया, उधर से रोहन की आवाज़ आई। अपने केबिन में रोहन के सामने एक मैगजीन पड़ी थी, जिसमें सनी और सना का फोटो छपा हुआ था, वह मैगजीन उठाकर पलटने लगा था, तो कुछ काग़ज़ नीचे गिर गए थे, तभी रोहन के केबिन में चाय लेकर मोंटी आ पहुँचा था और चाय रखकर काग़ज़ उठाने लगा था और रोहन की फ़ोन पर की जा रही बातें भी सुनता जा रहा था, उसका ध्यान पूरी तरह बातों पर ही था।

“झट मँगनी पट विवाह! सनी ये क्या सुन रहा हूँ मैं!” रोहन थोड़ा गुस्से में बोला था।

“जो सुन रहे हो ठीक सुन रहे हो।” सनी ने जवाब दिया था।

“झट मँगनी पट विवाह...बेटा क्या तुम सबकुछ कर दोगे स्वाह।” कटाक्ष किया था उसने।

“रोहन ये क्या कह रहे हो?”

“देखो सनी! तुमने एयरो स्पेश का अधिग्रहण किया और हमने उस अधिग्रहण में फाइनेंशियल तुम्हारी मदद की, जानते हो क्यों!”

“क्यों!”

“हमने अपनी बहन की शादी करने का सपना तुम्हारे साथ देखा था।”

“लेकिन यार बिजनेस बिजनेस की जगह होता है और संबंध संबंधों की जगह।”

“बर्खुदार कुछ बिजनेस संबंधों के लिए ही डील किए जाते हैं।”

“तो फिर!”

“कान खोलकर सुन लो सनी, यदि तुमने सना को मन से निकालकर मेरी बहन से शादी नहीं की तो...सड़क पर आ जाओगे तुम और ऐसे हालात में तुमसे सना तो क्या दुनिया की कोई भी लड़की शादी नहीं करेगी।”

“ये तो सरासर ब्लेकमेलिंग है।”

“बहन के लिए ब्लेकमेलिंग तो क्या? मैं कुछ भी कर सकता हूँ।”

“हूँ...” गुस्से से फ़ोन पटक दिया था सनी ने।

48

रोनी और मोंटी पार्क में मोर्निंग वॉक कर रहे थे और धीरे-धीरे दौड़ते हुए बातचीत भी उनकी जारी थी।

“यार क्या तुम बता सकते हो...” मोंटी ने कहा था, “कि बिना शादी जुड़वाँ बच्चे पैदा करने पर चीनी प्रेमी-प्रेमिका उनके क्या नाम रखेंगे!”

“जो हुआ सो हुआ!” रोनी ने चीनी भाषियों की नकल की थी।

“जो हुआ सो हुआ...और सना और सनी...”

“सना और सनी...क्या वो बिना शादी के बच्चे...”

“अब तो ऐसा ही होगा, सना के झड़ते मौसम में फूल खिलने से पहले ही उन कलियों को रोहन ने कुचल जो दिया।”

“घुमा-फिराकर मत कह यार, जो कहना है साफ-साफ कहो।”

मोंटी ने उसे रोहन की सनी के साथ हुई सारी बात बता दी थी।

“ओह तो यह बात है।”

“क्या बात है रोनी!” तभी आगे से मोर्निंग वॉक करती हुई सना आ पहुँची थी।

रोनी और मोंटी सना व सनी की शादी की वार्ता और बीच में रोहन के खलनायक की भूमिका पर चर्चा क्षण भर में विराम ले गई थी।

“मुझे छोड़कर सनी रोहन की बहन से शादी कर ही नहीं सकता।” सना ने कहा था।

“क्यों नहीं कर सकता” रोनी ने कहा था, “रोहन की बहन को बिन ब्याहे ही तलाक़ देकर उसे सड़क छाप मजनूँ बनना है क्या! जिस कंपनी का अधिग्रहण सनी ने किया है, उसके लिए आधा फाइनेंस तो रोहन ने ही किया है। बिजनेस के लिए बेबी की कोई औक़ात नहीं होती, आज के युग में।”

सना उदास हो गई थी, तभी उसके मोबाइल की घंटी बज उठी थी, जिस पर सनी का नाम लिखा था, लेकिन नाम देखकर उसने फोन काट दिया था, “यू बास्टर्ड।”

और टूटते हुए पैरों से चल पड़ी थी, रोनी व मोंटी उसे देखते ही रह गए थे।

49

टूटते हुए पैरों से भावुक हुई सना टहल रही थी, तो सना की नजर दंड मारते हुए एक युवा पर पड़ी, उसने उसे देखा तो उसकी ओर देखती ही रह गई थी। दंड मारते हुए युवक तेज गिल ने तिरछी गर्दन करते हुए सना

को देख लिया था और उठकर अपनी शर्ट पहनते हुए सना को पुकारा था, ''हाय सना!''

''हाय...आप...आप मुझे जानते हैं!''

''ओए..तैन्नू कौण नहीं जाणता...आप तो दुनिया की नंबर वन फैशन डिजायनर हो जी।''

''ताज्जुब है, लेकिन मैं तो आपको नहीं जाणती।''

''ओए, मैन्नू क्यों नहीं जाणती?'' दोनों बात करते हुए साथ-साथ चलने लगे थे। तेज के हाथ में घास का तिनका था, जिससे दाँतों को साफ करता जा रहा था, सना चुन्नी में गाँठ मारती और खोलती जा रही थी।

''पता नहीं।'' सना ने कहा था।

''लो गई भैंस पानी में।''

''मतलब।''

''ओ जी मैं तेज।''

''कौन तेज?''

''तेज यानी तेज गिल।''

''कौन तेज गिल?''

''कॉमनवेल्थ गेम में गोल्ड मैडल विजेता।''

''ओह, मैं भी कितनी भुलक्कड़ हूँ, टीवी पर देखी तो थी आपकी परफोरमेंस।'' वे बात करते हुए चलते रहते हैं।

रोनी, मोंटी और उसका एक और साथी मोटर साइकिल पर बैठे हुए जा रहे थे, रास्ते में ट्रैफिक पुलिस वाले ने उन्हें देखा कि एक तो बिना हेल्मेट के और दूसरे तीन-तीन सवारी तो उन्हें रोकने को हाथ दिया, ''रोको..बिना हेल्मेट के तिन तिगाड़े कहाँ जा रहे हैं?'' उसने सीटी बजाकर हाथ दिया था।

''सॉरी अंकल चौथे को बैठाने के लिए जगह नहीं है।'' मोंटी ने मज़ाक सा किया था।

''हूँ...चला गया चप्पू...'' पुलिस वाले ने सीटी पर सीटी बजाई थी और फिर अपनी मोटरसाइकिल पर सवार होकर उनका पीछा करने लगा था, रोनी ने पीछे मुड़कर देखा और ट्रैफिक पुलिस वाले को देखकर गेयर

बदल मोटरसाइकिल और तेज कर दी थी, सामने से तेज गिल और सना टहलते हुए आ रहे थे, तेजी से मोटरसाइकिल उनके पास गुजरी, तो कीचड़ उछलकर सना पर जा गिरा था। सना बड़बड़ाई थी, ''यू बास्टर्ड।''

''देखकर भी नहीं चलते मरजाणे, घोड़ी पर बैठते ही महाराजा बण जाते हैं।'' तेज गिल ने भी भड़ास निकाली थी, फिर सना की ओर देखते हुए बोला था, ''ऐसा करो जी, मेरा घर पास ही है, वहाँ चलके कपड़े-सपड़े बदल लो।''

''थैंक्स।'' उसके घर की ओर चलने लगी थी सना।

50

सना बाल झकटते हुए बाथरूम से निकलकर आ रही थी, तेज गिल टेबल पर चाय बना रहा था। तेज गिल ख्यालों में खो गया था उसे लगा कि बाथरूम से निकलकर उसकी नई नवेली दुल्हन आ रही है।

''तुस्सी बड़ी खूबसूरत लग रही हो जी।'' उसने मन-ही-मन सोचा था और सपनों में खो गया था, वह मन में सोच बैठा था कि जैसे उसकी शादी हो चुकी है और उसकी पत्नी बाथरूम से आ रही है। ''अजी मैं एक बात बोल्लूं, तुम मुझसे घर का सारा काम करवाती हो, क्या आपको पता है जी, पति तो घर का हैड होता है।''

'हाँ...हाँ...पता है, लेकिन आपको पता है कि पत्नी गर्दन होती है और जब चाहे जिधर घुमा सकती है।' उसे लगा जैसे सना ने ऐसा ही कहा है।

उसके मन का सपना टूट गया था और अपने सिर पर हाथ ऊपर से नाक की ओर फेरकर देखा कि कहीं उसका सिर घुमा तो नहीं दिया गया, ''ओए चलो यार कुछ चाय-शाय हो जाए।''

बाथरूम से बालों को झटकते हुए बाहर आ चुकी थी सना, ''चाय के लिए क्यों तकलीफ़ की?''

''अजी आप पहली बार हमारे घर आई, आपके लिए तो थोड़ी सी तकलीफ़ तो की जा सकती है..सोण्ये वैसे तुस्सी खुद ही बड़े मीट्ठे हो लेकिन फिर भी चाय में शक्कर कितनी लोगे।''

''थैंक्स रहने दीजिए...मैं डाल लूँगी।''

''ये भी ठीक रहा जी।''

तेज गिल बैठा उसे चाय बनाती को देखता रहा था और उसकी नजर अपनी बेबे अमृतकौर के फोटो पर टिक गयी थी।

51

कुछ दिन बाद की बात है। गेस्ट रूम में तेज गिल की माँ बैठी हुई थी। पास ही तेज बैठा था और सना चाय बनाकर लाई थी। यह सना का ही घर था।

''माँ जी शक्कर कितनी?'' सना ने तेज गिल की माँ से पूछ ही लिया था।

''ओए तैन्नू देखके दिल ही खुश हो गया...डाल दे दो चम्मच।''

''अच्छा किया जो आप तेज के साथ मिलने आ गईं।''

''अजी आती क्यूँ नहीं मैं तैन्नू लेणे आई हूँ।''

''मुझे लेने...क्या मतलब?''

''तेज की तेरे संग शादी करके तैन्नू अपणे घर ले जाऊँगी।''

सना केवल मुस्कराई ''...अभी शादी कहाँ...अभी तो हमें बहुत कुछ करना है।''

''अब कुछ करने की उम्र कहाँ रही जी।'' तेज गिल ने कहा था।

''क्यों...उम्र कहीं भाग गई है क्या?'' सना ने पूछा था।

''20 बरस की उम्र में मैं समझता था कि दुनिया को बदल दूँगा।''

''अब तो तीस के हो गये हो अब क्या महसूस होता है?''

''अपनी कमाई से कुछ बचा सकूँ तो खुद को हैप्पी समझूँगा।''

''जब अभी यही हाल है तो फिर बीवी बच्चों का क्या हाल होगा?''

''ओए सुण चिंता ना कर।'' उनके बीच में तेज गिल की माँ बोल उठी थी, ''तैन्नू ब्याह के गाँव ले जाणा, औत्थे अपनी वडी बड्डी जमीन है, मैं गंठे लगा दूँगी और फसल तैयार होने पर तू ओन्नू मंडी में बेच आया करना।''

''हाँ जी माँ ठीक कहती है उत्तम खेती मध्यम बाण।'' तेज बोला।

सना मन-ही-मन में कह उठी थी, 'देशी रेस का घोड़ा' फिर प्रत्यक्ष

कहा, ''माफ़ करें माँ जी मैं आपके बेटे से शादी नहीं कर सकती।''

''ओए क्यों?''

''क्योंकि ये मुसलमान बनने के लिए मना कर चुका है।''

''ये मुसलमान नहीं बण सकता, तू तो सरदारनी बन सकती है ना।''

''मैं क्यों ईमान छोडूँ और फिर गाँव में जाके मैन्नू गोबर ना उठाना।'' उसने पंजाबी लहजे में उनकी नकल उतार दी थी।

गुस्से से उठ चली थी तेज गिल की माँ, ''चल उठ पुत्तर...तू तो कहता था कुडी तेरे ऊपर जान छिड़कती है।'' और तेज अपनी माँ के साथ उठकर चलता बना था, सना कप-प्लेट उठाने लगी थी, तभी उसके फ़ोन की घंटी बज उठी थी, उसने कप-प्लेट छोड़कर फ़ोन उठा लिया था।

''हैलो....'' फिर कुछ रुक कर बोली थी, ''क्या नाम बताया आपने शेखर...अरे भई आप जैसे मशहूर डायरेक्टर को कौन नहीं जानता, आपकी फिल्म की हीरोइन के लिए कपड़े डिजाइन करना तो मेरे लिए गर्व की बात होगी। ठीक है आप कल दस बजे आ जाइए....थैंक्स।''

52

शेखर को सना हैंगर पर टंगे कुछ डिजाइन दिखा रही थी।

''यह देखिए शेखर जी, आपने जो सीन बताया उसमें आपकी फिल्म की हीरोइन केश पर यह खूब जँचेगा, इसे पहनते ही विश्व सुंदरी की आभा में और चार चाँद लग जाएँगे।''

''अच्छा है...लेकिन?''

''लेकिन क्या?''

''यह कैसे मानें कि जँचेगा या नहीं?''

''अब यह तो जब केश पहनेंगी तभी पता चलेगा ना...''

''आप सुंदरता में केश से कम हैं क्या?''

''क्या मतलब?''

''केश को तकलीफ़ देने से पहले आप पहनकर दिखा देतीं तो?''

''हाँ...हाँ...क्यों नहीं।'' कहकर सना ड्रेस पहनने दूसरे कक्ष में चली गई थी, शेखर बैठ गया था और जिस कक्ष में सना गई थी उसका दरवाजा

बंद हो गया था, शेखर ने सिगरेट सुलगा ली थी और कश मारने लगा था और तभी द्वार खुला तो शेखर चौंककर खड़ा हो गया था...जलती सिगरेट उसके हाथ में थी, जो जलती जा रही थी

''वाउ...how beautiful rose...ऐसी सुंदरता कभी नहीं देखी... कुदरत का अनमोल नगीना।''

''No rose without a thorn. बाइदवे आप मेरी तारीफ़ कर रहे हैं या मेरे इस डिजाइन की।''

''अजी गोली मारिए डिजाइन को हम तो आपकी सुंदरता के कायल हो गए।''

''आप भी अच्छी मज़ाक करते हैं।''

''हम मज़ाक नहीं...दिल की बात कह रहे हैं।''

सना मुसकरा उठी थी, ''तो इस डिजाइन को पैक करवा दूँ...''

''डिजाइन करने वाली को भी पैक करवा देना, खूब जमेगा रंग...जब मिल बैठेंगे दो यार।''

''लगता है आपको शायरी का बहुत शौक है...'' तभी उसकी निगाह शेखर के उस हाथ पर चली गई थी, जिसमें जलती सिगरेट थी, वह झठ से आगे बढ़ी और सिगरेट छीनकर उसके हाथ से फेंक दी, उसके हाथ पर जलने का निशान हो चुका था। सना भावुक हो उठी थी और जल्दबाजी में उसकी जली अंगुली मुँह में डाल ली थी उसने, ताकि जलन कम हो जाए, ''जला लिया ना हाथ।''

''जब दिल ही भट्टी बन गया हो, कम्बख्त हाथ क्या हम तो सारे ही जलने को तैयार हैं।''

''दिल तो हमारा भी घायल हो गया है। किसी ने ठीक ही कहा है Diamond cuts diamond.''

53

सना ने कैफे कनखल में प्रवेश किया था। वहाँ पहले से ही शेखर और रोहन बैठे कुछ खाते हुए बात कर रहे थे। रोहन को शेखर के पास बैठा देख सना का पारा चढ़ गया था और वह थाम की ओट में दूसरी चेयर

पर बैठकर उनकी बात सुनने की कोशिश करने लगी थी।

''क्या माल है यार...आपने जैसा कहा ठीक वैसा ही निकला।'' शेखर ने कहा था।

''साली दुलत्ती बहुत मारती है।'' रोहन ने भी कस मारा था।

''दुलत्ती...क्या बात करता है यार...हमने तो पहली ही मुलाक़ात में दुधारू गाय बनाकर छोड़ दिया था।''

''तो अब दूध निकालना बाकी है!''

''कम्बख्त खार के की बछिया है, दूध से पहले हरी करनी पड़ेगी।''

''खार के की बछिया नहीं, ध्यान से भी देखा है साझे की हांडी है।''

''चलो साझे की हंडिया ही सही।''

''साझे की हंडिया चौराहे पर फूटती है।''

''क्या मतलब!''

''तुम्हारे जैसे न जाने कितनों को गोद में खिला चुकी है।''

''तो फिर हम भी खेल लेंगे, आज आने वाली है हमारे बंगले में।''

''हम भी आएँ क्या... बहती गंगा में हाथ धोने।''

''हाँ...हाँ...क्यों नहीं...जब हम शरारत कर रहे होंगे, तुम छिपकर हम दोनों का एमएमएस बना लेना...''

''उस एमएमएस को नेट पर डालने की धमकी देकर साली का रोज दूध निकालेंगे।''

उधर वेटर सना के पास जा पहुँचा था, ''क्या लेंगी मैम?''

सना गुस्से से उठी और ऑर्डर कापी पर हाथ दे मारा था, कॉपी शेखर व रोहन की ओर जाकर गिरी थी, सना गुस्से में उठकर चल पड़ी थी और रोहन व शेखर अवाक् खड़े रह गए थे।

''लो गई भैंस पानी में...बिन दुहे ही साली दुलत्ती मार गई।'' रोहन बोल उठा था।

54

पब-बार में रात के समय सना शराब पी रही थी। बार में संगीत और अन्य लोगों की आवाज आ रही थी। कुछ मॉडल्स के साथ रोनी आया और एक

मॉडल्स से बात करता हुआ एक पैक तैयार करवाया था। मॉडल्स से बात करता हुआ रोनी जैसे ही मुड़ा, तो उसकी नजर सना पर जा पड़ी थी, "हे सना आई वांट यू।"

"ओह! अगेन वही पुराना डायलोग।"

"दिल की बात कर रहा हूँ ऑनेस्टली।" उसके पास आकर बैठ गया था रोनी।

"ओह! ग्रेट तो तुम ओनेस्ट भी हो।" हँसी थी सना।

"बिल्कुल।"

"रोनी हर चीज़ का एक टाइम होता है।"

"वाउ वी आर लक्की। इट इज राइट टाइम..."

"बिल्कुल सही! एंज्वॉय तो तुम कर ही रहे हो अपनी बेबीस के साथ ...बाइ ऽ..ऽ...ऽ..." रोनी के हाथ में खाली गिलास थमाकर वह उठकर चलती बनी थी। रोनी ने पहले खाली गिलास देखा, फिर सना को देखते हुए उसे पुकारता रह गया, "हे सना...ऽ सना...ऽ... ऽ..."

55

रात के समय सना के घर लॉन में गाड़ी आकर रुकी। सना नशे की हालत में गिरती-पड़ती द्वार की ओर बढ़ी। हैंड बैग से चाबी निकाली, नशे में झूमती हुई दरवाजा खोला और अंदर प्रवेश किया। सना अपना हैंड बैग एक ओर फेंककर जैसे ही बैठने को हुई, फोन की घंटती बज उठी तो उसने फ़ोन उठाया। "कौन कम्बख्त इतनी रात को।" फ़ोन उठाते हुए बड़बड़ाई थी, "हैलो ....मॉम तुम...दिन में फोन नहीं कर सकती थी..." गुस्से में फिर बोली, "तुम्हें तो चैन नहीं है, कम-से-कम मुझे तो चैन से रहने दो।" फ़ोन पटक दिया था उसने और अलमारी पर हाथ रखकर संभली थी, तो अलमारी की खिड़की खुल गई थी, उसमें शराब की बोतलें रखी थीं। उसमें से एक बोतल उठा ली और टेबल पर आकर गिलास में बिना पानी मिलाए ही उसे पीना शुरू कर दिया, बीच-बीच में सिगरेट के कस भी मारती जाती थी। सिगरेट मरोड़कर फेंक दी थी और खाली बोतल पर उसका हाथ लग गया था, जो लुढ़क गई थी, "साली बोतल भी साथ छोड़ गई..." उठकर

दूसरी बोतल लेने की कोशिश करने लगी थी, लेकिन अलमारी खोलने की जैसे ही कोशिश की, नशे की हालत में लुढ़क गई और वहीं पड़ गई।

56

सूर्य काफ़ी ऊपर चढ़ चुका था, लेकिन सना का द्वार बंद था, अखबार कुंडी में टंगे हुए थे। पहले दूध वाला आया और घंटी बजाई। कुंडी नहीं खुली तो वह चलने लगा ही था कि तभी काम वाली बाई आ गई। उसने दूध वाले को टोका, "आज दूध इतनी देर से..."

"दोबारा आया हूँ कि मैम साब जाग गई होंगी, लेकिन दरवाजा अभी भी नहीं खुला...घंटी बजा-बजाकर थक गए, चलते हैं शायद आज दूध की जरूरत नहीं होगी।"

"क्या मैम साब अभी तक उठी नहीं...मगर क्यों?"

"हमें क्या पता....चलते हैं हम तो।"

"ठहरो काका मैं कोशिश करती हूँ।" दोनों फिर द्वार पर आए, घंटी बजाई, लेकिन द्वार नहीं खुला, तभी रोनी भी आ गया था, "ये गेट पर मजमा कैसा?"

"पता नहीं साब मैम साब को क्या हुआ? आज अभी तक उठी नहीं और दरवाजा भी अंदर से बंद है...घंटी बजा-बजाकर थक गए हम तो।" बाई ने रोनी को बताया था।

"क्या?" उसने भी घंटी बजाई, गार्ड भी आ पहुँचा था।

"क्या बात है साब!" गार्ड ने रोनी से पूछा था।

"आपको ज़्यादा पता होना चाहिए क्या हुआ?"

"हम कुछ समझा नहीं साब।"

"मैम साब दरवाज़ा नहीं खोल रही हैं, रात को कितने बजे आई थीं?"

"यही कोई साढ़े बारह बजे।"

"उनके साथ और कौन था?"

"और कौन होता...अकेली थी...लेकिन लग रहा था मैम साब बहुत नशे में थीं।"

“नशे में थी...”

“दरवाजा तोड़ दीजिए साब।” बाई ने बीच में कहा था।

“हाँ यही करना पड़ेगा।” रोनी द्वार की ओर बढ़ चला था, लेकिन अचानक ही ठहर गया था, “खुदा ना करे पुलिस केस हुआ तो?” मोबाइल से पुलिस को फोन करने लगा था, “हैलो पुलिस स्टेशन...”

“पुलिस क्या करेगी साब...” बाई ने उसे रोकना चाहा था, “आप इतने हट्ठे-खट्ठे होकर एक दरवाजा भी नहीं तोड़ सकते?”

“माना कि हम हट्ठे-खट्ठे हैं लेकिन बाद में पड़े यदि पुलिस के पट्ठे तो दूध में हल्दी मिलाकर तुम पिलाओगी क्या?”

“ओ बाबा यह तो हमने सोचा ही नहीं।”

कुछ ही देर में पुलिस आ गई थी, “लो आ गई पुलिस भी।” सब बोल पड़े थे।

एसआई ने आते ही मामला समझ आदेश दे दिया था, “द्वार तोड़ दो।” रोनी ने एसआई का संकेत पाते ही दूर हटकर दौड़कर द्वार को जोर से लात मारी, वह टूट गया था और चरमराकर गिर पड़ा था और रोनी, पुलिस, बाई सबने कमरे में प्रवेश किया तो देखा सना कक्ष की दीवार के पास लुढ़की पड़ी थी, सबसे पहले उसके पास गार्ड पहुँचा। सना को गौर से देखते हुए वह चिल्ला उठा, “रे बाबा! मैडम तो मर गई।”

57

अस्पताल के बेड पर सफेद चद्दर आधी ओढ़ी हुई सना पड़ी थी, डॉक्टर चैकअप कर रहा था। बैड के पास रोनी खड़ा हुआ था। चैकअप के बाद चलते हुए डॉक्टर ने रोनी को कहा, “She is ok. she was over-dosed. Now she is ok!”

“थैंक्स डॉक्टर” फिर सना के पास बैठते हुए, “यार तुमने तो मुझे डरा ही दिया, आई थॉट तुमने सुसाइड की कोशिश की है।”

“Stupid! why should I suicide. I was frustrated. i thougt it is my world but it is not my world. I am fed up with this all. This is all bullshit. I thought it is emotion, it is love, its relation, its nothing, nothing, just bullshit thing, I am really emotional fool. They all fooled me, All of them.”

58

सना की माँ भी पाकिस्तान से आ पहुँची थी, “बेटा तुमने तो मेरी जान ही निकाल दी होती।”

“माँ तुम भी इतनी छोटी सी बात को लेकर परेशान हो।”

“यह छोटी बात नहीं है बेटा, तुमने अपनी तरह से जिंदगी जी ली है, मैंने कभी नहीं रोका तुम्हें कुछ करने से। अब मैं चाहती हूँ कि...”

“क्या चाहती हो मॉम?”

“जैसे मैं चाहती हूँ अब तुम वैसे जिओ, तुम्हें वो सब मिलेगा, जो तुम्हें चाहिए।”

“I didn't understand what you mean?”

“ मैं चाहती हूँ कि तुम रोनी से शादी कर लो।”

“ what? रोनी से शादी...”

“क्यों? तुम दोनों तो एक दूसरे को लाइक भी करते हो ना।”

“मॉम रोनी और मेरे बीच ऐसा कुछ नहीं है। We are just proffessional friends.” तभी सना का फोन बज उठा था, उसने फोन सुना, अपनी माँ को देखा और हँसी और फिर टीवी ऑन करते हुए माँ से कहा, “तुम मुझे रोनी से शादी करने को कहती हो, ले देखो उसके कारनामे... ” टीवी पर न्यूज चल रही था।

‘मुंबई पुलिस ने अब तक की सबसे बड़ी रेव पार्टी का भंडाफोड़ किया है।’ टीवी में पुलिस कुछ युवक-युवतियों को जीप में बैठा रही थी, उनमें रोनी भी था जो मुँह छिपाने की कोशिश कर रहा था, लेकिन एक पुलिसवाले ने उसका हाथ पकड़ गाड़ी की ओर धक्का दे दिया, तो उसका चेहरा स्पष्ट दिखाई पड़ा था। इस रेव पार्टी में कई हाई प्रोफाइल हस्तियों को भी धर दबोचा गया था। ‘मशहूर फोटोग्राफर रोनी इसके आयोजक बताए जाते हैं। सभी लोगों को अरेस्ट करके जेल भेज दिया गया है।’ न्यूज सबको चौंका रही थी।

"See Mom I saved you!"

सना की माँ चिंतित हो उठी थी और फिर कुछ न बोल पाई, अपनी बेटी के सवाल के जवाब में।

59

हवालात में रोनी बेचैन सा इधर-उधर टहल रहा था, तभी एक पुलिसकर्मी ने आकर हवालात का ताला खोलते हुए रोनी से कहा, "चलिए आपकी जमानत हो गई।"

"जमानत..." चौंक कर रोनी हवालात से निकला तो, उसकी नजर मोंटी पर पड़ी।

60

रात के समय सुनसान सड़क से सना गाड़ी दौड़ाती आ रही थी, अचानक ही झटके से उसने सड़क पर गाड़ी रोक दी थी, क्योंकि उसकी गाड़ी के पहिए में पंक्चर हो गया था, वह गाड़ी से उतरी, उसके टायर को देखा और गुस्से से उसमें लात मारी, "...बास्टर्ड...फिर सड़क पर देखा, तो जलती लाइट के साथ उसे एक कार आती हुई दिखाई दी, उसने लिफ्ट के लिए हाथ दिया, तो गाड़ी रुक गई, लेकिन वह देखकर अवॉक रह गई कि उस गाड़ी में रोहन और शेखर थे, दोनों शराब के नशे में धुत थे। गाड़ी से झूमते हुए उतरे तो सना चौंक उठी, "ओह तुम!"

"हम-तुम में रात क्यों गँवाती हो जानेमन चलो बैठो गाड़ी में।" रोहन ने कहा था।

"तुम जाओ..." सना ने प्रतिशोध किया था, "मुझे कहीं नहीं जाना।"

"कैसे नहीं जाओगी, हीरोइन बनने के लिए जो पेशगी ली थी" शेखर ने कहा था, "उसकी मुहूर्त शूटिंग तो तुम्हें करनी ही होगी।" उसने उसका हाथ पकड़ लिया था।

"मुझे छोड़ दो...नहीं तो मैं चिल्लाऊँगी।" सना ने धमकी दी थी।

"चिल्लाओ चिल्लाओ..यहाँ सुनसान जगह में तुम्हारी आवाज सुनने वाला कोई नहीं।" रोहन राक्षसों की तरह हँस दिया था। फिर दोनों जबर्दस्ती उसे गाड़ी में धकेलने लगे तो, वह चिल्लाने लगी थी, "बचाओ. ..बचाओ...बचाओ..."

"बचाओ...बचाओ..." शेखर ने उसकी नकल उतारी थी और गाड़ी चलाने के लिए हाथ से स्टियरिंग से गेर बदला, लेकिन उसकी गाड़ी नहीं चली, जैसे कि कहीं पहिया फँस गया हो।

उसने पीछे मुड़कर देखा तो अवाक् रह गया था, एक हट्ठा-खट्ठा युवा संन्यासी गाड़ी को पीछे से पकड़े हुए खड़ा था, अंधेरे में भी उसकी आँखों में खून उतरा हुआ था। उनसे छुड़ाकर सना गाड़ी से उतर गई और संन्यासी के पैर पकड़ लिए। संन्यासी ने गाड़ी छोड़ दी थी और दोनों डरकर गाड़ी लेकर भाग गए थे।

संन्यासी ने सना को उठाया तो उसे अहसास हुआ कि सना ने शराब पी रखी है, उसने नाक सी सिकोड़ी और मुँह के आगे से हाथ ले गया, जैसे कि धुँआ हटा रहा हो, "तुमने ड्रिंक्स..."

"सॉरी।" सना ने संन्यासी से माफ़ी माँगी थी।

"तुम जो भी हो हीरा हो, लेकिन कीचड़ में पड़ी हो।" संन्यासी ने गंभीरता से कहा था।

61

सना के सामने शराब की बोतल थी, उसने सिगरेट पीते हुए शराब की बोतल खोली, तो बोतल खोलते हुए बोतल पर उसे भ्रमवश उस संन्यासी की छवि नजर आई। उसने गौर से देखा और वहम समझकर बोतल से गिलास भर लिया और कस मारते हुए गिलास उठाकर जैसे ही पीने को हुई, वैसे ही गिलास पर फिर उस संन्यासी की छवि उभरी और उसके कानों में वही आवाज़ गूँज उठी, "तुम जो भी हो हीरा हो, लेकिन कीचड़ में पड़ी हो।" सना ने गुस्से के साथ गिलास पटक दिया था और उससे शराब छलक कर बिखर गई थी, वह उठी काउंटर पर पर्स से नोट निकालकर थमाए और बाहर निकल आई।

62

सना कार में बैठी, कार स्टार्ट की और स्टार्ट होने के बाद सिगरेट सुलगाने के लिए जैसे ही डिब्बी उठाई, उसे फिर सिगरेट की डिब्बी पर भ्रमवश उसी संन्यासी की छवि उभरती दिखाई पड़ी और उसके कानों में वही आवाज़ गूँज उठी, ''तुम जो भी हो हीरा हो, लेकिन कीचड़ में पड़ी हो।''

''हूँ...हीरा...'' उसने सिगरेट और लाइटर गाड़ी से बाहर फेंक दी थी, गाड़ी दौड़ पड़ी थी।

63

सना ने कक्ष में प्रवेश किया, टेबल पर हैंड बैग फेंका और डायनिंग टेबल पर बैठ गई, नौकरानी आ धमकी थी, ''मैम आज तो बहुत देर कर दी, मुझे घर भी जाना है, खाना लगा दूँ क्या..''

''आउट...गेटआउट...जाओ घर...मैं खुद लगा लूँगी।'' सना ने गुस्से से उसे देखा, नौकरानी के माथे पर बड़ी सी बिंदी लगी थी, सना उसकी बड़ी बिंदी को देखने लगी तो उस बिंदी में भ्रमवश उसी संन्यासी की छवि उभरी, और उसके कानों में वही आवाज गूँज उठी थी :

''तुम जो भी हो हीरा हो, लेकिन कीचड़ में पड़ी हो।''

''ओह सॉरी, मैं बाद में खा लूँगी, तुम जाओ बच्चे इंतजार कर रहे होंगे।'' सना ने नौकरानी से कहा, क्योंकि उसे गुस्से में कही गई बातों का अहसास हो चुका था या फिर उसकी बिंदी में उस साधु की प्रतिकृति देखकर डर गई थी। दरअसल वह मानसिक रोगी हो गई थी और साधु का दिखना मात्र भ्रम था। नौकरानी मुस्कराती हुई चली गई थी, नौकरानी के जाते ही सना ने टेबल पर रखे खाने को थाली में लगाया और खाने लगी थी। दो-चार निवाले खाते ही पास की अलमारी से उठकर बोतल निकाली और गिलास में डालने लगी, तभी शराब की धारा में वही संन्यासी फिर दिखाई दिया और वही आवाज गूँज उठती है :

''तुम जो भी हो हीरा हो, लेकिन कीचड़ में पड़ी हो।''

सना गुस्से से उठ खड़ी हुई थी और बोतल को फर्श पर दे मारा था।

उठकर बेडरूम में प्रवेश किया। बेड पर बैठी, और फिर अपने आप ही कुछ बड़बड़ाई।

''आज तो सोने के लिए नींद की दो नहीं चार गोलियाँ लेनी पड़ेंगी, तभी नींद आएगी।''

पास की ड्रेसिंग टेबल की दराज से नींद की कुछ गोलियाँ निकाली और छोटी सी टेबल पर रखे पानी के गिलास को उठाया, गोलियाँ लेने के लिए, जैसे ही गोली लेने को हुई, उस गोली पर उसी संन्यासी की छवि उभरकर आई और उसके कानों में वही आवाज गूँज उठी थी :

''तुम जो भी हो हीरा हो, लेकिन कीचड़ में पड़ी हो।''

सना छवि को देखकर मुस्कराई और गोली डस्टबीन में डाल दी, संन्यासी की छवि भी मुस्करा उठी, चद्दर तानकर सो गई।

64

मंदिर से आवाज आ रही थी :

उठ जाग मुसाफिर भोर भई अब रैन कहाँ जो सोवत है
जो सोवत है सो खोवत है, जो जागत है सो पावत है।

सना के बेडरूम पर खिड़की से धूप पड़ रही थी, चिड़ियाओं के चहचहाने की आवाज आ रही थी, तभी अपने द्वार की घंटी बजने की आवाज़ पर सना बैठ उठी।

''हूँ...तुम जो भी हो हीरा हो, लेकिन कीचड़ में पड़ी हो...'' खुद ही बड़बड़ाई और फिर मुस्करा उठी थी, ''थैंक्स गॉड!'' नाइटी में ही कमरे से बाहर निकली और दरवाजे की चिटकनी खोली, तो अपने सामने रोनी को पाया।

''गुड़ मोर्निंग!''

''वैरी गुड़ मोर्निंग, चमत्कार! आज ईद का चाँद सुबह-सुबह निकल आया। वैलकम! आइए!''

''आपके लिए बहुत बड़ा ऑफर लेकर आया हूँ।'' पीछे-पीछे चलता हुआ गेस्टरूम में चेयर पर बैठ गया था, उसके पीछे-पीछे ही काम करने वाली बाई भी प्रवेश कर गई थी।

"शांता पहले साहब के लिए चाय लेकर आओ।" सना ने बाई को आते ही आदेश दे दिया था।

"जी मैम साब।" शांता किचिन में चली गई थी।

"तो आप कुछ कह रहे थे?" सना रोनी की ओर मुखातिब हुई थी।

"हॉलीवुड के मशहूर निर्माता निर्देशक मिस्टर टॉम अपनी नई फिल्म में फैशन डिजाइनिंग के काम का जिम्मा आपको सौंपना चाहते हैं।"

"Thanx Ronei...But वैरी वैरी सॉरी।"

" Why"

"अपने तरह की जिंदगी बहुत जी ली, अब अपने आपको योगा एंड Spiritualism में डुबो देना चाहती हूँ।"

"आपकी तबियत तो ठीक है?" रोनी ने पूछ लिया था, तभी नौकरानी चाय लेकर आई और टेबल पर रख दी थी, फिर रोनी और सना दोनों चाय की चुस्की लेते हुए बातें आगे बढ़ाने लगे थे।

"क्यों मेरी तबियत को क्या हुआ!"

"यह अचानक ही बाबा रामदेव बनने का भूत सवार...लोग सुनेंगे तो जानती हो क्या कहेंगे?"

"सत्तर चूंहे खाकर बिल्ली हज को चली, शायद ऐसा कहें। लेकिन तुम्हें भी अपने आपको संभाल लेना चाहिए।"

"मुझे!"

"हाँ तुम्हें, अब तक अपने तरीके से जो मैंने किया, तुम भी वही कर रहे हो, लेकिन मैं तो संभल गई I Thinks whatever I was doing was just materialistic world. But where is the soul. I was missing most important in search of soul."

65

अशरफी बेगम के हाथ में एक मैगजीन थी, उसकी लीड थी...भोग से योग पथ पर चलने की सच्ची कथा और सना का फोटो छपा था। पास पड़े अखबार पर लिखा था, दूसरों को फैशनेबल बनाने वाली ने खुद पहना भगवा चोला। उसने अखबार देखते ही फ़ोन मिलाया...हैलो..हैलो...कहकर

फ़ोन रख दिया और चिंतित हो उठी, उसकी नजर अखबार के चित्र पर गई, जिसमें सना उपदेश दे रही थी।

66

सना का उस अखबार में छपा वह फोटो मैंने भी देखा था। लेकिन आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था। इसलिए अगले ही दिन उसके प्रवचन कार्यक्रम में जाने का मन बनाया तो जाकर देखा कि अखबार में जिस एंगल का फोटो छपा था...वही चलचित्र में बदल सा गया था। ठीक उसी मुद्रा में सना प्रवचन कर रही थी, उससे ऊँचे आसन पर वही आर्य संन्यासी सुमेधानंद बैठे हुए थे, जिन्होंने कभी उसे रोहन और शेखर से बचाया था।

"हमें परम सत्य को पाना है," सना हवन के बाद लोगों से कह रही थी, "परम सत्य की अनुभूति के लिए परम शुद्ध जीवन जीना होगा Ethical Life is a prelude it Life spiritual. जब तक हम उसे पा नहीं लेते प्रियतम की प्राप्ति में साधना के अंत की प्राप्ति यानी Journey's end with Lover's meating से संतुष्ट नहीं हुआ जा सकता। The Supreme Experience demands the whole man. No man can sereve two masters. उस परम सत्य को पाने के लिए हमें अंतर्मन के भाव से हमें परामत्मा ही होना पड़ेगा, एक म्यान में दो तलवारें नहीं समा सकतीं।" सना एक मुस्लिम युवती थी, लेकिन अब वेद और उपनिषदों की शरण में आ चुकी थी।

67

सना योग मुद्रा में बैठी हुई थी, कुछ श्रद्धालु उसके सामने हाथ जोड़े हुए थे। उसकी माँ भी उसके सामने थी।

"बेटा यह तुम्हें क्या हो गया है, घर-गृहस्थी बसाने की उम्र में जोग लेने का डिसीजन।" सना की अम्मी ने उससे कहा था।

"माँ मैंने जोग नहीं लिया, मैं तो सत्य को पाना चाहती हूँ।"

"सत्य को ! But बेटा Mere perceiving of Reality will not

do, but participating in it, possessing and being possessed by it. सत्य को पाने के लिए तो सत्यमय होना पड़ता है।

''हाँ मॉम मैं जानती हूँ, लेकिन आज मैं जीवित ही इसलिए हूँ। I Live, yet not I, but God in me.''

''पर बेटा यह मार्ग बड़ा कठित है। None can say when and how it shall come. It is not for me and you to fix the moment.''

''There is a great experiment possible in this life and there is a great crown of the experiment; but in the nature of things it is not to be bought cheaply, for it demands the whole man. It has been said that the life of the mystic is one of awareness of God and as to this we must remember that we are dealing with a question of life and of a life problems...मॉम! मैं अब यहाँ से कहीं नहीं जा सकती, मुझे यहीं शांति मिलती है।''

''हाँ बेटा, जीवन में कुछ भी पाना संभव है, मेहनत से हरेक लक्ष्य पाया जा सकता। अच्छी नौकरी, अच्छी लाइफ, अच्छा जीवन साथी, लेकिन सत्य या ईश्वर को पाने का सौदा बड़ा ही महँगा है।'' अशरफी की आंखों में आंसू आ गए थे, वह उठ खड़ी हुई थी। ''आज तुम इतनी बड़ी हो गई हो कि मुझे ही उपदेश दे रही हो। खुदा तुम्हारी जीवन यात्रा सफल करे, Journey's end with Lover's meating.''

68

रोनी आफिस में बैठा कुछ मॉडलों के फोटो देख रहा था, तभी माडल्स अंशु ने प्रवेश किया, ''हाय रोनी, क्या कर रहे हो?''

''बस यूँ ही कुछ फोटो।''

''कुछ फोटो...मैं तैयार हूँ...जैसे चाहो खींच लो।''

''आज नहीं कल।''

''Tomorrow never comes. रोनी के गले में दोनों हाथ डालकर पीछे से फोटो देखने लगी थी, ''किस चूडैल के फोटो हैं ये।''

''तेरे ही हैं, ध्यान से देखो।'' उठ खड़ा हुआ था और उसे अपने से अलग कर दिया था।

''रोनी क्या हो गया तुम्हें, तुम मुझसे इतना कटे-कटे क्यों रहते हो?''

''इसलिए कि तुम कोई अच्छा लड़का देखकर शादी कर लो।''

''शादी...शादी करके क्या मैं अपना कॅरियर बर्बाद कर लूँ।''

''क्या है तुम्हारा कॅरियर। nine day's wonder जब ऐश्वर्या राय जैसी मिस यूनिवर्स शादी कर सकती है तो तुम क्यों नहीं।''

''तो तुम करोगे मुझसे शादी।''

''an old dog will learn no tricks.''

''Can you teach an old women to dance?''

''उम्र बहुत लंबी होती है, बिना साथी के कटते नहीं; फिर तुम तो जानती ही हो कि मेरे साथ केस चल रहा है। हार गया तो आजीवन कालकोठरी में गुजारनी होगी, ऐसे में क्या मेरी पत्नी बनकर अकेले रह सकोगी।''

''ओह! मैं तो भूल ही गई थी। bad man is better than a bad name.'' कटाक्ष करते हुए चली गई थी मॉडल्स।

69

रोनी पहली बार शिरड़ी के सांई बाबा की दरगाह पर गया था, बाबा के बुत के दर्शन किए और मुड़कर वापस चला, तो सीढ़ियों पर चढ़ती हुई अशरफी बेगम को देखा, दोनों ने एक दूसरे को देखा, लेकिन बातें नहीं की।

अशरफी ने मन-ही-मन में सोचा, 'रोनी और सांई बाबा के दरबार में ...लगता है यह भी सना की तरह चेंज हो गया! लेकिन कम-से-कम यह तो मुस्लिम सूफी संत की शरण में ही आया है, परंतु मेरी बेटी तो काफिर हो गई है, उसका बदलना भी क्या बदलना! मर जाती अच्छा रहता। सांई तो सूफी ही हैं, फिर देखो यहाँ भारत के हिन्दू कितने पागल हैं, एक सूफी की मजार पर आते तो हैं, लेकिन नमाज नहीं पढ़ते, नमाज पढ़ने लगें तो इनका जीवन ही सुधर जाए।'

70

रोहन के दफ़्तर में रोहन और अशरफी बात कर रहे थे और चाय पी रहे थे।

''बेटा! मैंने उसे मनाने की बहुत कोशिश की, लेकिन वह आने के लिए तैयार नहीं। नारी की शोभा भगवा वस्त्र पहनने से नहीं, घर-गृहस्थी बसाकर दुनिया को अनवरत चलाए रखने से है।''

''मैं जानता हूँ माँ जी, लेकिन मैं इस बारे में कोई मदद नहीं कर सकता।''

''मगर क्यों बेटा?''

''मैं सना की लव स्टोरी में खलनायक रहा हूँ। मुझे तो वह इतनी नफ़रत करती है, जितनी नेवले से नागिन।'' उसने हाथ जोड़ लिए थे।

उसके बाद अशरफी बेगम उन छह लड़कों से मिली, जिनके सना के साथ संबंध रहे थे। लेकिन हर जगह से उसे निराशा ही हाथ लगी, कोई भी सना के भगवा वस्त्र त्यागने में मदद करने के लिए तैयार नहीं हुआ। अंत में तेज गिल ने भी कुछ ऐसा ही जवाब दिया था, जैसा कि रोहन ने दिया था।

''कुड़ी मैन्नू संग शादी कर लेती तो मौज मारती। पर भगवा की आड़ में ओन्नू तो सत्तर खसम चाहवैं, मना भी लाए तो रोज नए-नए लौंडे कहाँ सै लाके देंगे, जाओ जी उसका कुछ नहीं हो सकता।''

अशरफी बेगम बिना कुछ बोले अपमानित सी होकर चल दी थी।

71

रोनी ने मोंटी के घर में प्रवेश किया, तो वह बगड़ (चौक) में चारपाई (खाट) पर सिर पर हाथ धरे बैठा था।

''हे मोंटी, कोई टेंशन है क्या?''

''यार एक आदमी को चेहरे की प्लास्टिक सर्जरी के लिए कुछ रुपए दिए थे।''

''तो क्या उसने रुपए देने से इंकार कर दिया'' उसके पास खाट पर

बैठते हुए उसने पूछा, ''अच्छा कौन है वो?''

''छोड़ो यह सब।''

''फिर भी?''

''यार मैं उसे पहचान नहीं पा रहा हूँ।''

''देने से पहले अच्छी तरह पहचान लिया होता।''

''उसे तो पहचान ही लूँगा, कहो यार आज कैसे याद आ गई।''

''यार वो कोर्ट...''

''ओह! वो रेव पार्टी वाली फिल्म...जिसकी तारीख पर चलना है आज, तुम बैठों में तैयार होकर आता हूँ।'' अंदर चला गया था।

''हाँ वो रेव पार्टी जिसने मेरा करियर ही खत्म कर दिया।'' रोनी ने होंठों पर हाथ रख लिया था और सबकुछ चलचित्र की भाँति उसकी आँखों के सामने नजर आने लगा था। ठाली बैठा वह फ्लेश बेक में चला गया था। रोनी स्टूडियो में चेयर पर बैठा कुछ फोटोग्राफ्स देख रहा था, तभी उसके फ़ोन की घंटी बजी, उसने फोन उठाया और उस पर तिवारी की आवाज़ सुनाई पड़ी थी।

''हैलो।''

''हैलो तिवारी जी।''

''कहो तिवारी जी, आज कैसे याद आ गई हमारी।''

''यार एक काम है, यदि मेरा साथ दो तो देखना एक ही दिन में कहाँ से कहाँ पहुँच जाएँगे।''

''कहो क्या बात है?''

''जुहू में एक रेव पार्टी है कल रात, जिसमें हाई प्रोफाइल हस्तियाँ होंगी।''

''नहीं यार मैं ऐसी गैर कानूनी एवं गंदी पार्टियों में शामिल नहीं होता।''

''अरे यार मैं शामिल होने के लिए कहाँ कह रहा हूँ, हम तो सफेदपोशों के मुँह पर कालिख लगाकर लुत्फ उठाना चाहते हैं, खुफिया कैमरे से कवरेज करके।''

''तो ढोल की पोल खोलने का इरादा है।''

“हाँ और आपको उसमें शामिल होना है।”

“लेकिन उसमें कैसे शामिल हुआ जा सकता है, किसी सीक्रेट प्लेस पर होगी ना।”

“कांटेक्ट और कोड़ दोनों नंबर मैंने हासिल कर लिए हैं और आपका कोड़ है 000420”

“ओके।”

72

फिर उसकी आँखों के सामने दिन में सपने की तरह रेव पार्टी का दृश्य उसके मस्तिष्क पटल पर उभर आया था। हॉल की दीवारों पर एडल्ट फोटो लगे थे। कोई धुँआ उड़ा रहा था, कोई पी रहा था, कोई महिला मित्र को किस कर रहा था, कोई युगल जोड़ा एक दूसरे में आपस में समाया हुआ था, चारों ओर उत्तेजक दृश्य ही थे। आइटम सोंग शुरू हुआ, तो जोड़े एक-दूसरे से चिपटे हुए उसका आनंद लेने लगे, रोनी और तिवारी खुफिया कैमरे से कवरेज कर रहे थे, रोहन, शेखर, जावेद, सनी भी उसमें थे, जैसे ही गाना खत्म हुआ, झटके से दरवाज़ा खुला और पुलिस प्रवेश कर गई थी।

एसआई ने आदेश दे दिया था, “कोई भाग ना पाए, सबको अरेस्ट कर लो।” लोग इधर-उधर भागने लगे थे, लेकिन हर जगह पुलिस ही खड़ी मिलती थी। कोई रूमाल से मुँह ढक रहा था तो कोई हाथों से ही चेहरे को छुपाने की कोशिश कर रहा था, यह वही दृश्य था, जो टीवी पर कभी सना ने अपनी मॉम को दिखाया था।

73

अशरफी बेगम टीवी देख रही थी और सलाई से स्वेटर बुन रही थी, टीवी पर वही दृश्य आ रहा था रेव पार्टी का, जिसमें गिरफ्तार होते हुए रोनी को दिखाया गया था। एंकर की आवाज उभरी थी, “पिछले दिनों जुहू में रेव पार्टी में पकड़ी गई हाई प्रोफाइल हस्तियों के भाग्य का आज कोर्ट में

फैसला होगा। इस केस में जहाँ प्रसिद्ध बिजनेसमैन रोहन और सनी को छह माह की सजा हो सकती है, वहीं प्रसिद्ध फोटोग्राफर रोनी आरोप मुक्त भी हो सकते हैं, क्योंकि उन्होंने सुनवाई के दौरान यह सिद्ध कर दिया है कि वे उस पार्टी में मौजमस्ती के लिए शामिल नहीं हुए थे, बल्कि कुछ सफेदपोश हस्तियों का भंडाफोड़ करने के लिए खुफिया कैमरे से पार्टी की फिल्म बना रहे थे। इतना ही नहीं पुलिस ने भी स्वीकार कर लिया है कि उसे फोन रोनी ने ही किया है। कोर्ट में खुफिया कैमरे को लेकर भी तगड़ी बहस हो चुकी है कि वह कैमरा सफेद पोशों की पोल खोलने के लिए यूज किया जा रहा था या फिर अश्लील फिल्म बनाकर किसी के साथ ब्लेकमेलिंग की साजिश था।” फिर पुराना दृश्य चला दिया था, टीवी पर पुलिसवाला रोनी को धक्का दे रहा था और उसका चेहरा उदास था।

74

रोनी मोंटी के घर के बगड़ (चौक) में चारपाई (खाट) पर बैठा था, ऐसा ही चेहरा था, जैसा अशरफी टीवी पर देख रही थी, मोंटी कपड़े चेंज करके आया, एकदम वह फ्लेशबैक से बाहर आ चुका था, जब मोंटी की पत्नी की झगड़े भरी आवाज उसे सुनाई पड़ी थी, “बताओ मैंने तुम्हें कौनसा सुख नहीं दिया?”

“विरह सुख।” कहता हुआ द्वार से बाहर निकला था मोंटी और रोनी के पास आते ही बोला, “यार गमों को भुलाने का सबसे अच्छा तरीक़ा क्या है?”

“बड़ा आसान है यार, भारतीय क्रिकेट कप्तान धोनी की तरह हमेशा कूल बने रहो और सहवाग की डबल सेंचुरी का मजा लिए जाओ।”

“तो फिर किस गम में डूबे हो, डबल सहवाग की डबल सेंचुरी का मजा लेते क्यों नहीं, कोर्ट में जो होना है, सो होना है अभी से क्यों सजा काट रहे हो।”

“कोर्ट में।”

कहते हुए वह उठ खड़ा हुआ था।

75

रोनी कटघरे में खड़ा था, वकील कुछ पूछ रहा था। यह अंतिम पूछताछ थी, जज बैठा ध्यान से सुन रहा था। वकील ने झुककर जज को कुछ कहा और रोनी कटघरे से निकलकर सामने सीट पर जा बैठा था। जज ने अपना फैसला सुनाना शुरू किया था :

''भारत की सभ्यता और संस्कृति की पूरी दुनिया में मिशाल दी जाती है, लेकिन आजकल पाश्चात्य प्रभाव में आकर हमारे युवा रेव पार्टी और डिस्कोथिक जैसी कुसंस्कृति को अपना रहे हैं, जो समाज के माथे पर कलंक है। खासकर संपन्न ही नहीं जावेद जैसे बहुमुखी प्रतिभाशाली भी मौज-मस्ती के लिए सारी मर्यादाएँ तोड़ रहे हैं, जो शुभ संकेत नहीं है। ऐसी पार्टियों पर लगाम नहीं कसी गई तो हम आने वाली पीढ़ियों को विरासत में क्या देकर जाएँगे, मुन्नी बदनाम हुई जैसे गानों का नंगा नाच। लिहाजा ऐसी पार्टियों का आयोजन करने वाले या इनमें शिरकत करने वाले दोनों ही दोषारोपण से बच नहीं सकते। लेकिन कुछ ऐसे भी लोग होते हैं कि वे इन पार्टियों में इसलिए ही शिरकत करते हैं कि इस गंदे खेल का भंडाफोड़ करके एक साफ-सुथरे समाज की रचना में योगदान दे सकें। ऐसे ही लोगों की श्रेणी में आते हैं तिवारी और रोनी, जिन्हें यह अदालत बेकसूर मानते हुए बाइज़्ज़त बरी करती है और....।'' तालियों की गड़गड़ाहट से कोर्टरूम गूँज उठा था, रोनी का चेहरा खिल उठा था, ''ऑर्डर...ऑर्डर...'' जज ने हथोड़े की चोट की थी, ताकि पूरा फैसला सुना सके।

76

कोर्ट के गलियारे से जावेद, शेखर, रोहन, तेज गिल और सनी को पुलिस हथकड़ियाँ डालकर ला रही थी, जबकि मोंटी के साथ रोनी खिलखिलाता हुआ आ रहा था और जज द्वारा दिए गए अंतिम फैसले की बैक साउंड मेरे कान में अब तक गूँज रही थी :

''अनिभेता जावेद खान, रोहन, उद्योगपति शेखर व सनी समाज की

जानी-मानी हस्तियाँ हैं, यदि ऐसे लोग ही रेव पार्टी जैसे आयोजन करेंगे, युवाओं को भटकाएँगे तो फिर इस देश का क्या होगा? ऐसे लोग तो युवाओं के लिए रोल मॉडल होते हैं, जावेद खान एसिड लेने के दोषी पाए गए हैं, जबकि शेखर की मेडिकल जाँच में स्पष्ट हो गया है कि उन्होंने इक्सटेसी ली थी, जिसके कारण वे टॉस म्यूजिक पर घंटों नाचते रहे, सनी साथियों के साथ कोकीन लेने के दोषी पाए गए हैं, कोकीन एक ऐसा नशा है, जिसकी गंध नहीं आती, लेकिन जहाँ लगा दिया जाए वह स्थान शून्य हो जाता है और कई लोगों को इससे भी संतुष्टि नहीं मिलती तो वे हाइडोज टेबलेट लेते हैं, जैसे की रोहन ने ली है। मॉडल अंशु व अन्य लड़कियाँ रेप डेट ड्रग की दोषी पाई गई हैं, इसके साथ ही हट सेक्स की भी ये दोषी हैं। रोहन और तेज गिल को छोड़कर इन सभी को एनडीपीएस एक्ट के तहत छह-छह महीने की सख्त कैद और एक-एक लाख रुपए जुर्माने की सजा मुकर्रर की जाती है। चूँकि रोहन और तेज गिल पर नशाखोरी का कारोबार करने का आरोप सिद्ध होता है और ये दोनों ही पार्टी के आयोजक थे और रोहन ही नशीले पदार्थों का भारत में सबसे बड़ा तस्कर है और तेज गिल उसका सबसे विश्वस्त साथी। तेज और रोहन दोनों पर नशे के कारोबार को फैलाने का आरोप दोबारा सिद्ध हुआ है, इसलिए यह अदालत नारकोटिक्स ड्रग्स एंड साइकोट्रोपिक सब्स्टैंसेज एक्ट की धारा 20 ख के तहत तेज गिल को जहाँ दस साल की क़ैद एवं एक लाख रुपए जुर्माने की सजा सुनाती है, वहीं चूँकि रोहन दूसरी बार नशीले पदार्थों के कारोबार को फैलाने में लिप्त मिला है, इसलिए कोर्ट रोहन को धारा 31 ए के तहत सजा-ए-मौत सुनाती है।''

सजा सुनाए गए क़ैदियों ने तिरछी नजरों से रोनी और मोंटी को देखा था, लेकिन तभी पुलिस वाले ने उन्हें पीछे से गाड़ी में धक्का दे दिया था, ''चलो ससुराल चलने के लिए गाड़ी में बैठो।''

71

संन्यासी सुमेधानंद जी उपदेश दे रहे थे, पास ही सना बैठी थी।

''A man who brings into contempt the creed of his

country is the deepest of the crimlnals; he deserves death and nothing else. If I were to look over the whole world to find out the country most richly endowed with all the wealth, power and beauty that Nature can bestow, I should point to india.

If I wore asked under what sky the humen mind has most fully developed some of its choicest gifts, has most deeply and has found solution of some of them which well deserve the attention even of those who have studied Plato and Kant, I should point to india. अब सना जी सत्य सनातन वैदिक संस्कृति का सार आपको बताएँगी।''

सना ने माइक अपनी ओर खिसका लिया था, ''वाणी गुणानुकथने श्रवणौ कथायां हस्तौ च कर्मसु मनस्तस पादयोर्नः। स्मृत्यां शिरस्तव निवासजगत्प्रणामे दृष्टिः सतां दर्शनेस्तु भवत्तनूनाम्।। They love has pierced me through and through; Its thrill with bone and nerve entwine. सुमेधानंद के फ़ोन की घंटी बज उठी थी, उन्होंने फ़ोन उठाया और कुछ क्षणों के लिए सना रुक गई। संन्यासी ने फ़ोन रखते हुए माइक अपने आगे कर लिया था :

''विश्व धर्म सम्मेलन का आमंत्रण मिला है, सना वैदिक धर्म की सबसे योग्य जिज्ञासु और वक्ता हैं, इसलिए हमने प्रतिनिधि के रूप में इनका चयन किया है।''

''यह तो मेरा सौभाग्य है, मैं इस कार्य के लिए तैयार हूँ, धर्म को मेरी जरूरत है।'' सना ने कहा था।

''हाँ धर्म को आपकी जरूरत है,'' सुमेधानंद जी ने कहा था, ''लेकिन याद रखो जो धर्म की रक्षा करता है, धर्म उसकी रक्षा करता है, लेकिन जो धर्म का हनन करता है, धर्म उसका हनन कर देता है, धर्म की रक्षा से ही संस्कृति की रक्षा टिक सकती है, देश का श्रेय हो सकता है तथा व्यक्तियों की आत्मिक उन्नति हो सकती है। परंतु प्रश्न है कि धर्म है क्या, क्या ईश्वर का स्मरण ही धर्म है? क्या योग ही धर्म है? विद्वानों ने धर्म के दस लक्षण बताएँ हैं उनमें एक है दया। दया का अर्थ किसी पर उपकार करना नहीं, बल्कि दीन-दुखियों की सेवा के लिए किए गए कार्य हैं, जो

जनहित में होते हैं, जैसे अस्पताल खोलना, वृद्धा आश्रम स्थापित करना, अकाल पीड़ितों की सेवा करना और आज से हमारा मिशन इस वास्तविक धर्म का पालन करेगा। इन कार्यों को मैनेज करने का जिम्मा भी हम सना जी को सौंपते हैं।''

तालियों की गड़गड़ाहट से वातावरण गूँज उठा था।

72

रोनी अपने स्टूडियो में फोटो की चकोर कटिंग कर रहा था और उन्हें देख रहा था। फोटो खूबसूरत मॉडल्स का था, तभी सना की माँ अशरफी ने प्रवेश किया था। वह उसे देखकर उठ खड़ा हुआ था और स्वागत करते हुए बोला, ''नमस्कार अम्मी।''

''काफिरों वाली नमस्ते क्यों भई।''

''नमस्ते यानी कि स्वागत है...आइए...आइए...बैठिये।''

''थैंक्स।'' सोफे पर बैठ गई थी, ''...बेटा पिछले दिनों तुम्हारे बारे में बहुत कुछ पढ़ा, खुदा का शुक्र है कि आप...''

''जेल जाने से बच गया माँ जी...वरना मैं तो यूँ ही बेमतलब मारा जाता।''

''परंतु बेटा तुम ऐसा काम करते ही क्यों हो?''

''अम्मी जवानी के दिनों में भला कौन नहीं भटक जाता।''

''वह तो ठीक है...लेकिन सुबह का भूला शाम को घर लौट आए तो उसे भूला हुआ नहीं कहते।''

''हाँ अम्मी..आज मुझे पहली बार अहसास हो रहा है कि आज मेरे पास कुछ नहीं है, मौज-मस्ती के लिए मैंने न जाने...।''

''बेटा पश्चाताप करने पर आदमी का दामन पाक हो जाता है।'' वह आगे बोली, ''मुझे अच्छा लगा तुम सांई की मजार पर गए, लेकिन काफिरों ने वहाँ भी बुत बना रखा है, मंदिर बना दिया मजार को। बाबरी मस्जिद की तरह, फिर भी यह देखकर दिल को सुकून मिला कि बहुत से काफिर मुस्लिम फकीर के दरबार में जाते हैं, अजमेर, शिरड़ी, निजामुद्दीन यहाँ तो सुना है हिन्दुओं के बड़े-बड़े नेता भी जाते हैं। यह बड़ी अच्छी बात

है, हिन्दुस्तान बदल रहा है, एक दिन सारा हिन्दुस्तान बदल जाएगा और खुदा का शुक्र यहाँ लोकतंत्र भी है, लोकतंत्र में मुंडियाँ गिनी जाती हैं, इसलिए मैं तो कहती हूँ जल्दी शादी कर लो और दस-बारह बच्चे पैदा करो, ताकि कौम की तरक्की हो, अब तो तुम पाक दामन हो।''

''ऐसा पवित्र पापी किस काम का अम्मी...वो तो मात्र जिस्म थे, रूह नहीं।''

''हाँ बेटा..लेकिन अब तो तुम्हारी रूह निष्पाप हो गई।''

''ऐसी बंजर भूमि से क्या फायदा, जिसमें कोई पौधा ही अंकुरित न हो?''

''बेटा...बंजर भूमि भी उर्वर हो सकती है यदि उसमें खाद डाली जाए।''

''मैं कुछ समझा नहीं अम्मी।''

''तुम्हारी ही तरह सना भी पाक दामन हो चुकी है, तुम यदि चाहो तो सना को अपनाकर सच्चा प्रेम पा सकते हो और एक तुम्हीं हो जो उसे काफिरों के चंगुल से मुक्त करा सकते हो।''

''परंतु क्या मैं सना को मना पाऊँगा?''

''प्रयत्न करने से क्या संभव नहीं हो जाता...''

''माँ जी यदि तुम्हारा आशीर्वाद है, तो फिर मैं आपसे प्रोमिस करता हूँ कि मैं न केवल सना को वापस लेकर आऊँगा, बल्कि उसके साथ एक नई दुनिया भी बसाऊँगा, जिसमें जिस्म नहीं आत्मा का मिलन का होगा।. ..Journey's end with Lover's meating.

73

लव जिहाद की बात चले और अमृता प्रीतम और कमलादास का नाम न आए, ऐसा हो ही नहीं सकता। अमृता प्रीतम का जन्म 1919 में गुजराँवाला (पंजाब-पाकिस्तान) में हुआ था। बचपन लाहौर में बीता और शिक्षा भी वहीं पर हुई। इन्होंने पंजाबी लेखन से शुरुआत की और किशोरावस्था से ही कविता, कहानी और निबंध लिखना शुरू किया। ये उन विरले साहित्यकारों में से हैं जिनका पहला संकलन 16 साल की आयु

में प्रकाशित हुआ। फिर आया 1947 का विभाजन का दौर, इन्होंने विभाजन का दर्द सहा था, और इसे बहुत करीब से महसूस किया था, इनकी कई कहानियों में आप इस दर्द को स्वयं महसूस कर सकते हैं। विभाजन के समय इनका परिवार दिल्ली में आ बसा। अब इन्होंने पंजाबी के साथ-साथ हिन्दी में भी लिखना शुरू किया। लव जिहादी इस बात का भी ध्यान रखते हैं कि बहुमुखी प्रतिभाओं को यदि इस्लाम में दीक्षित करेंगे तो अधिक लाभ मिलेगा, यही कारण है कि अमृता प्रीतम को भी लव जिहाद के जाल में फँसाया गया और यह काम किया साहिर नामक एक युवक ने।

साहिर लुधियानवी का असली नाम अब्दुल हयी साहिर था। उनका जन्म 8 मार्च 1921 में लुधियाना के एक जागीरदार घराने में हुआ था। इनके पिता बहुत धनी थे, पर माता-पिता में अलगाव होने के कारण उन्हें माता के साथ रहना पड़ा और गरीबी में गुजर करना पड़ा। साहिर की शिक्षा लुधियाना के खालसा हाई स्कूल में हुई। सन् 1939 में जब वे सरकारी कालेज के विद्यार्थी थे अमृता प्रीतम को उन्होंने लव जिहाद का शिकार बनाया। लेकिन अमृता के घरवालों को ये रास नहीं आया, क्योंकि एक तो साहिर मुस्लिम थे और दूसरे गरीब। बाद में अमृता के पिता के कहने पर उन्हें कालेज से निकाल दिया गया।

अमृता के मासूम चरित्र को देखते हुए इनका विवाह 16 साल की उम्र में ही एक संपादक से हुआ। लेकिन यह वैवाहिक जीवन 1960 में, तलाक के साथ टूट गया।

सन 1958-59 के आस-पास अमृता और इमरोज की मुलकात हुई, एक किताब के सिलसिले में जब उन्हें उसका मुखपृष्ठ बनवाना था, और तब इमरोज और अमृता हमेशा के लिए एक-दूसरे के हो गए। इमरोज ने माता सीता और भगवान राम पर आपत्तिजनक आरोप लगाए हैं।

अब बात करें कमलादास की। कमलादास जानी-मानी लेखिका थी, जो माधवी कुट्टी के नाम से लिखती थी...और केरल की रायल परिवार से थी और नायर थी... पति के निधन के बाद ये अकेलेपन में थी... पति के निधन के समय इनकी उम्र 65 साल थी...तीन काफी बड़े बच्चे थे जो

बड़ी-बड़ी पोस्ट पर थे...एक बेटा माधव दास नलपत टाइम्स ऑफ इंडिया का चीफ एडिटर था, जो बाद में यूनेस्को का बड़ा अधिकारी भी बना... उसकी पत्नी त्रावनकोर स्टेट की राजकुमारी है... एक बेटा चिम्मन दास विदेश सेवा का अधिकारी है और एक बेटा केरल में कांग्रेस से विधायक है... इनके घर पर इनके बेटे का एक मित्र अब्दुसमद समदानी उर्फ सादिक अली जो मुस्लिम लीग पार्टी का सांसद था और उनसे उम्र में 32 साल छोटा था वो आता-जाता था... उस मुस्लिम लीग के सांसद ने अपनी माँ की उम्र की कमला पर डोरे डाले और उन्हें लव जिहाद का शिकार बनाया। परिणाम यह हुआ कि कमला ने इस्लाम स्वीकार करके अपना नाम कमला सुरैया रख लिखा... तीनों बेटे अपनी माँ के इस कुकर्मो से इतने आहत हुए की उन्होंने अपनी माँ से सभी सम्बन्ध तोड़ लिए... सबसे चौंकाने वाली खबर ये थी की उनके इस्लाम कुबूल करने पर सऊदी अरब के प्रिंस ने अपना दूत उनके घर भेजकर उन्हें गुलदस्ता भेजा था और भारत सरकार ने इसका विरोध नहीं किया... फिर 2009 में उन्हें कैंसर हुआ और केरल सरकार ने उन्हें पहले मुंबई फिर बाद में पुणे की एक अस्पताल में भर्ती करवा दिया... तीनों बेटों और सभी रिश्तेदारों ने पहले ही उनसे सम्बन्ध तोड़ लिए थे... और उनका मुस्लिम पति जिसकी वो तीसरी बीबी थी, वो एक बार भी उनका हालचाल लेने नहीं गया था... मरने के पहले उन्होंने लिखा था 'काश मुझे किसी ने तभी गोली मार दी होती, जब मैं समदानी के जाल में फँस गयी थी... मुझे पता ही नहीं चला की मुझे सिर्फ राजनीतिक साजिश के तहत केरल की हिन्दू महिलाओं को इस्लाम के प्रति आकर्षित करने के लिए ही फँसाया गया था और इसमें सऊदी अरब के कई लोग काफी हद तक शामिल हैं..., पूरे आठ महीने तक अस्पताल में तड़प तड़प कर अपने बेटों और पोतों को याद करते-करते और श्रीकृष्ण एवं श्रीराम का नाम लेते हुए उन्होंने 31 मई 2009 को अपने प्राण त्याग दिए... फिर केरल सरकार ने उन्हें मालाबार के जामा मस्जिद के बगल में कब्रिस्तान में दफना दिया!!

इस अवसर पर राज्य के कई मंत्रियों सहित तकरीबन 1,000 लोग मौजूद थे। अंतिम संस्कार में प्रवासी मामलों के मंत्री वयलार रवि, केरल

के राजस्व मंत्री के.पी. राजेंद्रन और जल संसाधन मंत्री एन.के. प्रेमचंद्रन शामिल हुए थे। तत्कालीन मुख्यमंत्री वी.एस. अच्युतानंदन सहित अनेक लोगों ने उनके अंतिम दर्शन किए और धर्मनिरपेक्ष लोगों ने लव जिहाद की शिकार हुई कमलादास की आत्मा की शांति के लिए दुआ माँगी, लेकिन यह किसी ने नहीं कहा कि वह लव जिहाद की शिकार हुई थी।[1]

74

दूसरों का चरित्र देखने से पहले अपना देख लेना चाहिए, इसी से आदमी महान बनता है। मैंने सना के बारे में इतना बताया अब आगे उसका जिक्र नहीं करना चाहती, क्योंकि इस समय मेरा उससे न तो संपर्क रहा है और न ही मित्रता। वह तो अध्यात्म और योग के मार्ग पर चल पड़ी, उसे इहलोक नहीं परलोक की चिंता है। जो लड़की कहती थी कि वह सात निकाह करेगी, उसके जीवन में सात प्रेमी अवश्य आए, लेकिन उसकी लव जिहाद अंत में योग और अध्यात्म पर समाप्त हुई। आज उसके हजारों प्रशंसक हैं। एक महान आध्यात्मिक नेता है, लेकिन जो मिशन उसने शुरू किया था गैर मुस्लिमों को मुसलमान बनाने का, वह सफल न हो सका। कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी...हिन्दी है हम वतन हैं हिन्दुस्तान हमारा...महाकवि इकबाल ने यह उद्‌गार यूँ ही नहीं लिखे थे।

खैर अब मैं थोड़ा बहुत अपने ही जीवन के बारे में बताना चाहती हूँ कि मेरा मिशन लव जिहाद कामयाब हुआ या नहीं। पाठकों को भी शायद इसकी ही उत्सुकता होगी। मेरी शादी को पाँच महीने हो चुके थे, एक दिन मेरे शौहर ने मेरी सास से फोन पर बात कराई तो उसने घर आने का निमंत्रण दिया। मैं पतिदेव के साथ दूर के एक प्रदेश उनके घर गई। एक नया परिवेश, एक नया माहौल और सबसे बढ़कर एक नई दुनिया। मुस्लिम औरतें बुरका पहनती हैं, लेकिन उत्तर भारत में हिन्दू औरतें भी पर्दे में रहती हैं। दोनों प्रथाओं में कोई भेद नहीं, दोनों में ही औरत को बंद नकाब में रहना पड़ता है। लेकिन यहाँ एक खास बात हुई, मैंने सुबह ही सुबह चाय बनाई और सबसे पहले अपनी जेठानी को देने गई तो उसने

1. केरल और लव जिहाद आंदोलन, अच्युत दास, पृष्ठ 36

पीने से इंकार कर दिया, ''रहने दे मुझे चाय नहीं चाहिए।''

''क्यों जी, तुम तो कल तो पी रही थी।''

''तु मुसलमानी है ना! हमारे यहाँ मुसलमानी के हाथ का छुआ हुआ नहीं खाते, यह तो मेरा देवर था, तुझे पता नहीं कहाँ से उठा लाया। वरना मुसलमानों की तो यहाँ परछायी से भी दूर रहते हैं।''

यही अनुभव था ससुराल में मेरा पहले दिन का। किसी ने मेरे हाथ का छुआ हुआ तक नहीं खाया। और मुसलमानों में यदि कोई नया मुसलमान बनकर आता है, अर्थात् हिन्दू से मुसलमान बनता है, तो उसे नौ मुसलमानों जितना सम्मान दिया जाता है। लोग हाथ चूमते हैं उसके। मुसलमानों में भेदभाव कतई नहीं, जबकि हिन्दुओं में जात-पाँत और भेदभाव आज भी विराजमान है और सच पूछिए तो हिन्दुओं की अवनति का कारण यही है।

मेरे उसने पत्रकारिता की नौकरी से त्याग पत्र दे दिया और हैदराबाद को हमेशा के लिए छोड़ दिया। वे मुंबई भाग गए और एक फिल्मकार के यहाँ उन्होंने लेखक का काम करना शुरू कर दिया। इसी दौरान उन्होंने एक फिल्म लिखी और वह फिल्म मुंबई समेत भारत के सभी शहरों में भी रिलीज हुई। हैदराबाद में भी लगी, तो एक दिन मेरे वो हैदराबाद आए और उन्होंने बताया कि जो फिल्म की स्टोरी मैंने लिखी है वह हैदराबाद के रामकृष्णा थियेटर पर लगी है। मैं, मेरे वो और मेरी बहन उस फिल्म को देखने गए। नंबरिंग में उनका नाम देखकर मुझे बहुत खुशी हुई और लगा कि अब कोई संकट नहीं रहेगा। मेरे वो फिल्मों में काम करेंगे तो खूब कमाएँगे और हम मुंबई में ही शिफ्ट हो जाएँगे। लेकिन उनकी फिल्म अच्छी नहीं चली। स्क्रिप्ट राइटिंग के लिए मेरे उनको पाँच लाख रुपए तय हुए थे, लेकिन 70 हज़ार ही मिले थे और डायरेक्टर ने शेष धन फिल्म के कारोबार के बाद देना तय किया था। परंतु दिया नहीं और बहाना मार दिया कि फिल्म पिट गई, हालाँकि अच्छा कारोबार किया था, क्योंकि अखबारों में उस फिल्म के अच्छे रिव्यू छप रहे थे।

खैर हम उसके बाद भोपाल में शिफ्ट हो गए और एक पंजाबी परिवार के मकान में दो कमरे किराए पर लिए। यहाँ मुझे पंजाबी परिवार

का दृष्टिकोण बहुत अच्छा लगा। मकान मालकिन को मैं दीदी कहती थी और कभी-कभी उसके साथ गुरुद्वारा भी जाया करती थी। उसने कभी मुसलमानी या सिक्ख में अंतर नहीं समझा। लेकिन मुझे यहाँ उसके लिए कभी-कभी चिकिन मटन पकाने की सेवा करनी पड़ी थी, हालाँकि मेरे वो शुद्ध शाकाहारी थे और उनके ही कारण मैंने भी मांसाहार छोड़ दिया था। वैसे उन्होंने मुझे मांसाहार के लिए कभी नहीं रोका, लेकिन उनका कहना था कि कभी जी करे तो होटल में जाकर खा लो, मुझसे तो पैसे ले लो, लेकिन घर में नहीं पकेगा। न मैं होटल में गई और न ही घर में पकता था। मुझे सुसराल वाले अपनाने को कतई तैयार नहीं थे। एक तरफ तो मेरे वो थे, जिन्हें मैंने दूसरे मजहब की होकर अपनाया था और एक तरफ उसके परिवार वाले जो मुझे अब तक अपनाने को तैयार नहीं थे। एक बार मैं अपनी सुसराल आई तो टिक्की-बिंदी लगाने पर बहुत विवाद हुआ। सिंदूर या टिक्की-बिंदी मैं लगाने को तैयार नहीं थी और वे इसी जिद पर अड़े थे कि आज करवाचौथ है, यह त्योहार तो मनाना ही पड़ेगा।

खैर मैंने पहली बार करवाचौथ तो मनाया, अपने सुहाग की सलामती के लिए, लेकिन सिंदूर नहीं लगाया। इसी बात को लेकर सुसराल में विवाद बढ़ गया और मेरे उनको मुझे छोड़ने के लिए घर वालों का दबाव बढ़ गया और मैंने अपने भाई को फ़ोन कर दिया। मेरी ससुराल में मेरा भाई अली आया तो उसे यह देखकर बहुत बड़ा धक्का लगा कि उसकी बहन हिन्दुओं के परिवार में बिहायी है। वह मेरी सुसराल में अकेला था, इसलिए कुछ कर तो सकता नहीं था, लेकिन तत्काल में टिकट निकलवाकर मुझे हैदराबाद ले गया और अब्बा से इस बात का जिक्र किया, ''तुमने तो हमारी नाक ही काट दी।''

''क्यों मैंने क्या किया?''

''अपनी सबसे लाड़ली बेटी की शादी एक काफ़िर के साथ कर दी, ताज हिन्दू है।''

''क्या बकते हो...ताज हिन्दू कैसे हो सकता है...पागल तो नहीं हो गए हो।''

खैर शुक्र है जिस समय उनकी गाली धुपड़ चले अम्मी घर में नहीं

थी वे दोनों थे या फिर मैं। अब तक यह मामला तीन लोगों के बीच में ही था, लेकिन मुसलमानों में ऐसी बात ज़्यादा दिनों तक छिपी नहीं रह सकती। अब्बा ने एसटीडी पर जाकर मेरे उनको फ़ोन किया। मेरे उनके पास मोबाइल था, जो उन दिनों आम आदमी में नया-नया ही चला था और अब्बा ने नहीं खरीदा था, ''ताज मैं यह क्या सुन रहा हूँ, तुम हिन्दू हो।''

''अब हिन्दू हूँ या मुसलमान हूँ तो आपका दामाद ही ना।''

''तुम मुझे तभी शक्ल दिखाना जब मुसलमान बन जाओगे। किसी मौलवी को पकड़ो, कलमा पढ़ो और खतना करवाओ और जल्दी से यहाँ आओ। आपको मकान हम हैदराबाद में दे देंगे, अपने माँ-बाप को छोड़ दो।''

''आप अपने मजहब के लिए अपनी बेटी को नहीं छोड़ सकते, तो मैं अपने धर्म और माँ-बाप को आपकी बेटी के लिए कैसे छोड़ सकता हूँ।''

''तुम धोखेबाज हो, तुमने धोखा किया है। जिंदा रहना चाहते हो जल्दी यहाँ आ जाओ और मुसलमान बन जाओ...वरना हमारी तो इज़्ज़त जाएगी ही तुम भी इस दुनिया से उठ जाओगे।''

''आपकी बेटी से शादी करने पर जब मेरी इज़्ज़त नहीं गई, तो फिर तुम्हारी कैसे जा सकती है।''

''मैं अपने मुसलमान भाइयों को कैसे मुँह दिखाऊँगा कि मैंने अपनी बेटी के शादी एक काफ़िर के साथ की है।''

''जैसे मैं दिखा रहा हूँ कि मैंने एक मुसलमानी के साथ शादी करके धर्म एवं मजहब की दीवार तोड़ी है।''

''तो तुम मुसलमान नहीं बनोगे और न हैदराबाद आओगे।''

''हैदराबाद आऊँगा, लेकिन मुसलमान नहीं बनूँगा।''

''तो ठीक है जल्दी आओ...तुम्हारी नई सुसराल में तुम्हारा स्वागत होगा।'' अब्बा का संकेत जेल से था।

कोर्ट-कचहरी सुलह-समझौते में एक साल गुजर गया, लेकिन मेरे वो अपनी बात पर अड़े रहे। कोर्ट के निर्देश पर इस दौरान हम दोनों कुछ दिनों के लिए एक साथ भी रहे और इसी दौरान मैं उनके प्रति पूर्णरूपेण इसलिए

समर्पित हो गई कि शायद ऐसा करने से ही वो मुसलमान बन जाएँ, लेकिन मेरे वो मुसलमान बनने को तैयार ही नहीं थे।

इसी दौरान हमारे घर अब्बा के एक मित्र स्वामी दयानंद की 'नूर ए हक' (सत्यार्थ प्रकाश) पुस्तक छोड़ गए। मैंने इस्लाम की धार्मिक पुस्तक समझकर उसे पढ़ना शुरू किया, लेकिन जब उसमें कुरान का खंडन पाया तो शुरू में बहुत क्रोध आया, परंतु फिर उसे कई बार पढ़ा, तो लगा कि इस पुस्तक में ठीक ही लिखा है और उसी पुस्तक से पता चला कि वेद ही खुदा की असली वाणी हैं, फिर मैंने वेदों का थोड़ा-थोड़ा अध्ययन किया तो मुझे उसे पढ़ने में कुरान की आयतों से अधिक आनंद आया और जब-जब पढ़ती थी, तब-तब मन को अद्भुत शांति मिलती थी। मेरा झुकाव वेदों की ओर होता चला गया और कुरान पीछे छुटती चली गई।

75

एक दिन कोर्ट परिसर में मुझे जोरदार चक्कर आया तो मेरे वो भागकर एक ऑटो लाए और मेरे अब्बा को धक्का देते हुए मुझे अस्पताल ले गए। मैं पेट से थी। खैर दिल को बहुत सुकून मिला कि इतनी दुश्मनी होते हुए भी मेरे वो मुझे कितना चाहते हैं, यही वह घटना थी, जिसने मेरा विचार बदल दिया और अगली ही तारीख़ में मैंने जज को कह दिया कि मैं अपने पति के साथ ही रहना चाहती हूँ। मुझे मजहब और धर्म नहीं चाहिए, मुझे तो मेरा पति चाहिए। मेरा परिवार चाहिए। मेरा पति ही मेरा परिवार है, मेरा पति ही मेरा खुदा है, वही मेरा मजहब है। वे सही-सलामत रहेंगे तो धर्म तो अपने आप ही बन जाएगा, क्योंकि मैंने उनसे ही सीखा है कि प्रेम सबसे अच्छा मजहब है। मैं जानती हूँ कि अब हमें न मुसलमान अपनाएँगे और न ही हिन्दू, लेकिन हम तो अपना नया धर्म बना लेंगे। जो न हिन्दुओं का होगा, न मुसलमान का। जज ने मेरी बात मान ली और मुझे मेरे पति के साथ हमेशा-हमेशा रहने के लिए जाने का आदेश सुना दिया। उस दिन करवाचौथ की ईद थी, और मैंने सुबह से कुछ नहीं खाया था। हम सीधे घर न जाकर आर्य समाज मंदिर पहुँचे तो वहाँ कोई विशेष हवन चल रहा था और उसकी अंतिम आहुति दी जा रही थी :

ओम् सर्वं वैथ्ठ पूर्ण स्वाहा

हमने भी वह आहुति डाली और उसके बाद शांति पाठ करते हुए मन एवं हृदय को जो शांति मिली, ऐसी आज तक कभी महसूस नहीं की थी, पता नहीं शांतिपाठ के इन शब्दों में क्या रहस्य छिपा हुआ है, जिन्हें मैं नमाज के स्थान पर आज पाँच वक़्त उच्चारण करती हूँ, मेरी संध्या और मेरी नमाज यानी कि नमस (ईश्वर स्मरण) का स्थान परमेश्वर की इसी सबसे सुंदर वाणी शांति पाठ ने ले लिया है। आप भी मेरे साथ इस शांति पाठ को गुनगुनाएँगे, तो मुझे लगेगा कि आप भी हमारे मानव धर्म में शामिल हो गए हैं, क्योंकि इस्लाम जहाँ कहता है गैर मुस्लिमों को मुसलमान बनाओ...और ईसाई कहते हैं सारी दुनिया को ईसा के रास्ते पर चलाओ, वहाँ केवल वेद ही कहते हैं कि मुनर्भव अर्थात् मनुष्य बनो...तो आइए अब शांति पाठ करके शाश्वत शांति की ओर प्रस्थान करें :

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षथ्ठं शान्तिः
पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः ।
वनस्पतयेः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः
सर्वथ्ठं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधिः
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

●●●